

॥ निवेदन ॥

संतवानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थी तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश, देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। जहाँ तक हो सकता है सर्व साधारण के उपकारक शब्द चुनकर कई लिपियों का मुकाबला करके ठीक रीति से शोध कर संग्रह किये जाते हैं, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दिये जायँ। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारण की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-वेद्यक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरण शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कमरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अमूर्ते शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छपा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात् उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम-मात्र नहीं हैं।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस में

कवीर साहब का अन्धावृत्ती के पाहिले ~~भारत के~~ ~~दुनरे~~ एडिशन प्रेमी और भक्तजन के नामने पत्र करके नीचे लिखी हुई बातों पर उन की तबज्जह दिखाई जाती है--

१-कई पद जो छेपक या दुयारा कुछ बढ़ले हुए रूप में छप गये थे उन्हें निकाल कर उन की जगह कवीर साहब के जंचे हुए दुनरे पद रख दिये गये और उन के सिवाय और भी कितने ही नये अनि मन्नाहर और रोचक पद बढ़ा दिये गये हैं ।

२-बहुतेरे पदों में दूसरी लिपियों का देग कर कई कड़ियाँ बढ़ाई या बढ़ाई गई हैं और नवनी नवी की गई है ।

३-जीवन-चरित्र में वाचन का पाठ और ~~...~~ लिखी गई है ।

४-गृह शब्दों के अर्थ और जिन महत्त्वपूर्ण वा और लोगों के नाम किसी पद में आते हैं उन की कथा संक्षेप के साथ उस पद के नीचे नोट में दिया दी गई है ।

५-ऊपर लिखे हुए कारणों से दूसरे छापे में पन्ने छापे के १२० सफाहे की जगह १३६ सफाहे हो गये और इस लिये दाम १०) के बढ़ले ॥) कर दिया गया ।

प्रोप्रेटर, बेल्लेहियर प्रेस

जुलाई १९०६

दुलहा



॥ सूचीपत्र ॥

शब्द

पृष्ठ

अ

अगम अस्थान गुरु ज्ञान विन ना नही ।	१००
अधर आसन किया अगम प्याना पिशा ।	१००
अधर ही ख्याल श्री अधर ही चाल है ।	१०१
अपने घट दियना वारु रे ।	१०१
अब मे खबरदार रहे भाई ।	१०१
अभागा तुम ने नाम न जाना	१०१
अनरपुर लेखलु हो सजना ।	१०१
अरे इन दृष्टुन राए न पाई ।	१०१
अरे मन मूरख खेतीवान ।	१०१
अरे मन समुझ के लादु मदनिया ।	१०१
अबधू अच्छर हूं मे न्यारा ।	१०१
अबधू अमल करै सो गाई ।	१०१
अबधू अध कूप अधियारा ।	१०१
अबधू निरंजन जाल पसारा ।	१०१
अबधू देगम देस एसारा ।	१०१
अबधू भजन भेद है न्यारा ।	१०१
अबधू भूले की पर लाई ।	१०१
अबधू माया लजी न जाई ।	१०१
अबधू सो जोगी गुरु मेरा ।	१०१
अने समुझि परैगा भाई ।	१०१
आठ हू पर सतधा न्यारी रई ।	१०१

शब्द		पृष्ठ
	उ	
उठि पछिलहरा ३१
	ऋ	
ऋनु कागुन नियरानी । १५
	ए	
एन मममेर वरुमार बजती रहे ।	.	.. १०६
	ऐ	
ऐमा नी तत ऐमा नी । ८७
ऐनी दिवानी दुनियाँ । ११२
	क	
करन कनोत दरियाव के बीच से । १०४
कर नैना दीदार मइल से प्यारा है । ७७
का नैना दीदार यह पिड्ड से न्यारा है ।	..	. ८२
करम गति टारे नाहि टरी । ६५
करो जनन मखी माईं मिलन की । २८
करो रे मन वा दिन की ततबीर । ४३
कर्म टो भर्म संभार मन्न करतु है ।	.	.. ९७
कौं कौट लातो करैया कौईं त्रार है । ३२
क्या देस दिवाना हुवा रे । २४
क्या मांगु कुठ थिर न रहाईं । ५२
काया नगर मँभार मत खेलै होरी । ९३
काहू न मन बस कीन्हा । ११४
कैसे त्रिवेगी अिगहिनी पिया विन । १०
कैसे दिन कतिईं जनन बनाये जइयो । ११

ग

कोट प्रेम की पेंग भुनाओ रे ।	...	५७
कोट सुनता है गुन छानी ।		५७
को जानै बाल पगये मन की ।		५७
को मिस्रि अधमन को जाना ।		५७
कीनो ठगवा नगरिया लूटल हा ।	..	५७

ख

खेल ब्रह्मंड का पिंड मे देमिया ।	...	५७
खेल ले नैहरयो दिन धारि ।		५७

ग

गगन की ओट निमाना है ।		५७
गगन की गुफा तहें गैब का भेदना ।		५७
गगन घटा घहरानी साथी ।		५७
गगन मठ गेब निमान गद्दे ।		५७
गढ़ा निस्मान तहें गुनन के दीप मे ।		५७
गुरु दयाल काव करिरे दया ।		५७
गुरु ने मोहि दीगरी अजब जगी ।		५७
गुरु बटे भुगी हमारे गुरु दहे भुगी ।		५७
गुरु दिन दाता कोरुं नहीं जग सामगार ।		५७
गुरु मोहिं पुटिया अजर पियार ।		५७
गुरु मे लगन बटिन है भार ।		५७
गुरु तमें सजीवक गुरु दर ।		५७
गग लकटी धरो जगुन दारा धरो ।		५७
गग श्री जगुन के पाह दो देखि है ।		५७

घ

घस के दीव मे धेवन अति सुनिया ।		५७
घरसे ना मिरजहार घरेवा रुक ना करे ।		५७

शुनी गज्जों की

शुनी	पृष्ठ
... ..	५४
... ..	१
... ..	११४
... ..	३४
छ	
... ..	१०२
... ..	१०२
... ..	३०
ज	
... ..	१०९
... ..	४
... ..	१११
... ..	९५
... ..	७१
... ..	१३
... ..	६०
... ..	५४
... ..	६
... ..	४१
... ..	५४
... ..	१११
... ..	३६
... ..	२७
झ	
... ..	७४
ट	
... ..	२२

शब्द

५८

ड

हर नागै और हाँसी जाये ।

५८

हँडिया फँदाय धन च्लु रे ।

६१

न

तऊ बना हाट घाम का जी ।

६२

तन धर सुखिया कौहं न देखा ।

६३

तन मन धन बाजी लागी हो ।

६४

तरऊ मंगार को फरक फरक मदा ।

६५

तीरघ मे नव पानी है ।

६६

तुम जाह अँजारे बिछावो ।

६७

तेरे गवने का दिन नगिघाना ।

६८

तोहि मोरि लगन लगाये रे फकिरवा ।

६९

द

दरमन दीजे नाम सनेही ।

७०

दरिया की लहर दरियाय है जी ।

७१

द्विजाने मत भजन धिना ।

७२

दुलहिन अनिया काहे न धोदार ।

७३

दुलहिनी गावहु मगलवार ।

७४

देख घोडू मे अजय धिगराम ।

७५

देख दीदार मरतान मे रोह रंगी ।

७६

देह दूरक मे पवन ।

७७

दो छूर पले सुसज्य से नी ।

७८

न

नागिन मे धैत किया नागिन उरि खाया ।

७९

नागु रे मेरो मन नट होय ।

८०

ना जाने तेरा फाट देगा है ।

८१

शब्द	पृष्ठ
नान भजा मोई जीता जग में ।	५६
नाम सुनिर पछितायगा ।	५७
नामद माध भो अतर नाहीं ।	२०
नेर मे दाग लगाय आइ चुनरी ।	४७
नेररा हम को नहि भाये ।	७२

प

पदरि मनमेर सग्राम में पैसिये ।	१०६
पापी बिग गीन पिघासी ।	३४
पाप पुनन के बीज देऊ ।	८९
पाव और पलक की आरती कौन सी ।	९६
पिपा मेरा जागे मै कैसे सोई सी ।	१५
पिया ऊंची रे अटरिया तोरी देखन चली ।	७६
पी न टपाला हो मतवाला ।	५२

फ

फल मीठा पै ऊँचा तरवर ।	७५
------------------------	----

व

वहुनि नहि आवना या देस ।	२६
वायो ना जा रे ना जा ।	४५
वावा अगम अगोचर कैमा ।	८८
वाकल आवी हमारे गेह रे ।	९
विन देसे परनांति न आवै ।	८८
विन मनगुन नर नरुन भुलाना ।	२१
विन मनगुन नर भरम भुलाना ।	२२
वीना उहुन रदी घोरी सी ।	२४

गठ

पृष्ठ

म

भक्ति म्द कोइ करै भसंनाना ना टरै ।	६३
भक्ती का नारग भीना रे ।	६४
भजु मन नान उमिर रहि घोड़ी ।	६६
भजो हो सतगुरु नाम उरी ।	६८
भाई कोई मतगुरु मंत कहाये ।	६
भीजे चुनरिया प्रेम रंग बूढ़न ।	६
भूला नन ममुभाये ।	६६

म

मन तुम नारक हुन्द अचाये ।	६७
मन तू क्यों भूला रे भाई ।	६७
मन फूला फूना पिरै ।	६७
मन बनियो बानि न छोड़ै ।	६७
मन मस्त हुआ तब घयो दोनि ।	६७
मन लागो मेरो यार फकीरी से ।	६७
मन हलवाई हो ।	६७
महरम होय सो जानै साधो ।	६७
माहि मतवाल तँ ब्रह्म भाठी करै ।	६७
माहि मत्पान मन रई हो फेरना ।	६७
मानस नहि मन सोरा साधो ।	६७
मानुष जनम सुपारी साधो ।	६७
माया रहा ठगनी हम जानी ।	६७
माल जिनही नै जसा किया ।	६७
मिलना बटिन है दिके मिलैनी ।	६७
मुझपा एया देई र्पन से ।	६७
मुनिया पिरै शाला ना ।	६७

गठन	पृष्ठ
मुग्ध नैनो बीच नयी है ।	७७
मेरा तेरा अनुर्मा कैसे इक होठ रे ।	५९
मेरे माहल आये आज खेलन फाग री ।	९४
मेँ जाने बूझों अपने पिया की बात री ।	१९
मेँ तो आन पड़ी चोरन के नगर ।	२
मेँ अपने साहब सग चली ।	१०
मेँ ही तहाँ ठूढ़ो वदे में तो तेरे पास में ।	१११
मोगिया बाधे रोरे देसवाँ ।	७२
मोगी पुनरी मे परि गयो दाग पिया ।	५८
मारे जियरा बड़ा अँदेसवा ।	५२
मारे लागि गये वान सुरगी हो ।	१६
मोहि नोहि लागी कैसे छूटे ।	२०
र	
रम गगन गुफा मे ।	७६
रहना नहि देस बिराना है ।	४४
रैन दिन सत यो सोवता देखता ।	९६
ल	
लगे रे कोइ बिरना पद निरघान ।	५३
व	
वा घर की सुध कोइ न बतवावै ।	९३
वा दिन की कछु सुध कर मन माँ ।	२६
स	
सदियो हनहं भई समुगामी ।	१०
सचमुच रैन ले मैदाना ।	६२
सतगुरु के संग क्यों न गई री ।	२१

शब्द	पृष्ठ
मत्तगुन धरन भजम मन दृग्द ।	३
मत्तगुन धारी धरन द्विधारी ।	१३
मत्तगुन मैत्री दृग्द रक्षारी ।	१०
मत्तगुन भेग तीरी निनिने ।	२०
मत्तगुन ही महाराज कीर्षि गाँड़े रंग द्वाभा ।	८
मत्त सुकृम गतगाम ।	१०
मत्तुभ नर मृद्व द्विगारी रे ।	६०
मत्त परकान ते मृग जगा मती ।	११०
मत्त वेगनपुरा गमन की ना नर्द ।	१०
मत्त का रंग तो विकट द्रष्टा मती ।	१००
मत्त एज नव मद मती ।	६०
मत्त एज आपु मय मती ।	६१
मत्त ऐमा धुध अधियारा ।	१०
मत्त की र्ति कर्द से आया ।	
मत्त जो जग उतरे धारा ।	११
मत्त दुषिधा कर्द से आइं ।	८
मत्त देखो जग हीराना ।	
मत्त पाँड़े निपुन कसाईं ।	११
मत्त भाईं जीवत हीं बारी आका ।	१
मत्त यह तन ठाठ तंरूरे का ।	१०
मत्त मत्तगुन अलरु लरा ।	३
मत्त मत्त मत्तना कीर्षे ।	१
मत्त मत्त से देल जगाईं ।	८
मत्त मत्त सभन से न्यारा ।	३
मत्त मत्त मत्तपि मली ।	१०
मत्त मत्त मत्त मत्त ।	६०

शब्द		पृष्ठ
माघो हम घर कत सुजान ।	.	९५
मार मउद् गहि वाचिहौ मानौ इतबारा ।	.	६९
माँहुँ आप की सेव ।	..	९६
माँहुँ के सँग सासुर आई ।	..	२५
माँहुँ दरजी का कोई मरम न पावा ।	...	५
माँहुँ बिन दरद करेजे होय ।	...	१३
मिपाही मन दूर खेलन मत जाव ।		४८
मुग सिध की खैर का स्वाद ।		४३
मुगया पिजगवा छोरि करि भागा ।		२३
मुनता नहो धुन की खबर ।	...	३५
मुनिरन बिन गोता खावोगे ।	.	४५
मूर को कौन मियावता है ।	..	९१
मूर परकास तहँ रैन कहँ पाइये ।	...	१०६
मूर सयाम को देख भागै नहीं ।	..	१०८
मोच मउक्त अभिमानी ।	.	२४
सतन जात न पूछो निरगुनियाँ ।	.	११३

ह

हम को ओढावे चदरिया चलती धिरिया ।	..	२३
हमन हैं इरक मस्ताना हमन को होशियारी क्या ।	.	१६
हमरी ननद निगोड़िन जागे ।	.	१४
हनारे को खेलै ऐसी होरी ।	..	९३
हमारे मन कव भजिहो गुर नाम ।	..	२७
हिन मिलि मगल गाओ ।	...	६२
हमा लोक हमारे ऐहो ।	.	८७
हमा हन मिले मुख होई ।	...	३८

ज्ञ

ज्ञान का गेद कर मुन का डड कर ।	...	८९
ज्ञान मममेर को बाध जोगी चढ़ै ।	.	१०७

कबीर साहब का जीवन-चरित्र

संसार का कुछ ऐसा नियम मदा से बना लाया है कि जिन्से - दान-
 पुण्य के जीवन समय में बहुत कम लोग इन ज्ञान के वास्ते को
 परचाह करते हैं जिन्से ज्यों पैदा हुए हैं वे जन्मी रहनी चाहते हैं, -
 उन में विशेष गुण है और क्या मृत भेद नाशित है न रहना का प्रकाश
 करने और परमात्म का लाभ देने के लिये जनों के जीवन-साथ निरत
 है। लेकिन जब वे इन पृथ्वी का छोड़ देंगे, वे ज्ञान इन का प्रकाश से -
 जिन से संसार के तिसर गटाने का लाभ प्राप्त होता है -
 है तब बहुत से लोग नींद में जाग उठते हैं और -
 मध्यम में अपनी बुद्धि की अनुसार तथा -
 और बहुत सी बातें बहाये के साथ जो -
 इन्ही कारणों से प्राचीन -
 वास्तव उन के समय के लोगों ने हुए -
 जीवन-चरित्र लिखना बहुत कठिन ही साबित है।

कबीर साहब का जीवन-चरित्र भी ज्यों का त्यों लिखना
 नहीं लिखा जा सकता परंतु जहाँ तक साहसिक प्रयत्न से
 लिखते हैं।

ऐसा जान पड़ता है कि कबीर साहब विद्वानों के बीच -
 समय में वर्तमान थे। अतःसात और दूसरे सदी में लिखे हैं कि -
 लोदी ने कबीर साहब की मरदा हालते का एक विवरण -
 एजारा घीन साहब की पुस्तक "दोस्त हुज आद इन्हियन -
 में भी दिया है।

"दहीर दहीठी नाम की पुस्तक में एक साहसी हज प्रकाश की है -
 एकराही एकराहा, जितो मरदा हे नोक -
 साप हरी रजादही, रजे सेन के सेन

उसके अनुमार विक्रम सम्मत १५५५ अर्थात् सन १५१९ ईस्वी में कबीर साहब का देहान्त हुआ। मिकंदर लोदी १५१९ ईस्वी में मरा था उससे पता अनुमान होता है कि कबीर साहब मिकंदर लोदी के समय में थे। “कबीर कमीठी” में कबीर साहब की अवस्था देहान्त के समय १०० वर्ष की होना लिखा है यदि यह ठीक है तो कबीर साहब का जन्म सम्मत १४५५ अर्थात् १३९९ ईस्वी में ठहरता है।

कबीर साहब के पिता का नाम नूरअली और माता का नाम नीमा था जो काशी में रहते थे। किसी २ का कथन है कि नीमा के पेट से कबीर साहब पैदा हुए परंतु विशेष कर ऐसा कहा जाता है कि नूरअली गुआहा गंगा नदी अथवा लहरतारा तलाव के किनारे सूत धो रहा था कि उसको एक बालक बहता दिखाई दिया उसने उसको निकाल लिया और अपने घर लाकर पाला पोसा। पंडित भानुप्रताप तिवारी चुनारगढ़ निवासी जिन्होंने इस विषय में बहुत खोज किया है उनको अनुमार कबीर साहब की अमल मा एक हिदुनी विधवा थी जो सन १४१४ ईस्वी में रामानंद स्वामी के दर्शन को गई। दंडवत करने पर रामानंद जी ने आशीर्वाद दिया कि तुमको पुत्र हो। स्त्री घबरा कर रोने लगी कि मैं तो विधवा हूँ मुझे पुत्र क्यों कर हो सकता है। रामानंद जी बोले कि अब तो मुंह से निकल गया पर तेरा गर्भ किसीको लखाई न पड़ेगा। उसी दिन से उस विधवा को गर्भ रहा और दिन पूरा होने पर लड़का पैदा हुआ जिसे उसने लोक निन्दा के डर से लहरतारा के तलाव में डाल दिया जहाँ से उसे नूरु गुलाहा निकाल कर लाया। कबीर कसौटी के अनुसार जेठ की बड़सायत सोमवार के दिन नाम ने पच्चे को पाया।

बालकपन ही में कबीर साहब ने धानी द्वारा उपदेश करना आरम्भ कर दिया था। ऐसा कहते हैं कि कबीर साहब रामानंद स्वामी के जो रामानुज मन के अवलम्बी थे शिष्य हुए। यद्यपि कबीर साहब स्वतः संत थे और उनकी गति रामानन्द स्वामी से कहीं बढ़कर थी तो भी गुरु

रहे हो मरी गाय कैसे सानी सायगी? कबीर साहब ने जवाब दिया कि कैसे हमारे गुरुजी के मरे पुरखा पिड सायंगे ।

नाम, मद्य वरन हर प्रकार के नशे का कबीर साहब ने अपनी बानी में निषेध किया है ।

कबीर साहब जुनाहा के घर में तो पले थे ही और आप भी कपड़ा टुनने का काम करते थे । वह गृहस्थ शाश्रम में थे, और भेषो के डिम्ब पागड और णहकार को बहुत निन्दनीय कहा है । कबीर साहब की नी की नाम लोई और बेटे और बेटी का कमाल और कमाली था । किमी २ प्रयकारी का कथन है कि कबीर साहब बालब्रह्मचारी थे और कभी व्याह नहीं किया, एक मुदां लड़के और लड़की को जिलाकर उनका नाम कमाल और कमाली रखा और उनके पालन का भार लोई को जो उनकी चेली थी सौंप दिया पर यह ठीक नहीं जान पड़ता ।

जो कुछ हो लोई कबीर साहब की सच्ची और ऊँचे दर्जे की भक्त थी । एक बार का जिनर है कि कबीर साहब ने किसी रोजी को भक्ति का उदाहरण दिखाने के लिये अपने करगह में जहाँ वह लोई के साथ दोपहर को ताना वुन रहे थे धीरे से ढरकी अपनी बँहोली में छिपा ली और लोई से कहा कि देख ढरकी गिर गई है उसे जमीन पर खोज वह उसे तुरंत ढूँढ़ने लगी आखिर को हार कर काँपती हुई उनमें अर्ज की कि नहीं मिलती इस पर कबीर साहब ने जवाब दिया कि तू पागल है रात के समय बिना दिया वाले ढूँढ़ती है कैसे मिले । अपने स्वामी के मुख से यह वचन सुनतेही उस को सचमुच ऐसा दरसने लगा कि अधिरा है, बत्ती जला कर ढूँढ़ने लगी जब कुछ देर हो गई कबीर साहब ने सफा हो कर कहा कि तू अंधी है देख मैं ढूँढ़ता हूँ और उस के सामने ढरकी बँहोली से गिरा कर फिर उठा लिया और उसे दिखा कर कहा कि कैसे भटपट मिल गई, इस पर लोई रोकर बोली कि स्वामी छिमा करो न जानें मेरी आँख में क्या पत्थर पड़ गये थे । तब कबीर साहब ने उस जिज्ञानू से कहा कि देखो यह रूप भक्ति का है कि जो भगवान् कहे दही भक्त को वास्तविक दरसने लगे ।

बहुत सी कथायें कवीर साहब की वास्तव प्रसिद्धि हैं जिन का लिखना अनावश्यक है क्योंकि वह समझ में नहीं आतीं। इस में संदेह नहीं कि भक्तजन सर्व समर्थ हैं और उन के लिये कोई बात असंभव नहीं है पर इसी के साथ यह भी है कि संत करामात नहीं दिखलाते अपने भगवंत की भोति अपने सामर्थ्य को प्रायः गुप्त रखते और साधारण जीवों की तरह संसार में बर्ताव करते हैं। तैभी छोड़े से चमत्कार जिन का भक्तमात और दूररे ग्रथों में वर्णन है और महात्मा गरीबदास और दूसरे भक्तों ने भी उन को संकेत में अपनी बानी में कहा है नीचे लिखे जाते हैं क्योंकि उन्हें न केवल सर्व साधारण पसंद करेंगे वरन उन से महात्माओं की बानी जहाँ यह कौतुक इशारे में लिखे हैं भली प्रकार से समझ में आवैगी।

(१) एक बार काशी के पंडितों ने जो कवीर साहब से बहुत इर्षा रखते थे कवीर साहब की ओर से कांगलों के खिलाने का न्योता चारों ओर फेर दिया हज़ारों आदमी कवीर साहब के द्वारे पर इकट्ठा हुए जब कवीर साहब को इसकी खबर हुई तो एक हाँड़ी में थोड़ा सा भोजन बनवा कर और कपड़े से ढाँक कर अपने किसी सेवक से कहा कि हाथ भीतर डाल कर जहाँ तक निकले लोगों को बाँटते जाव इस प्रकार से सब न्योतहरी पेट भर कर खागये और जब कपड़ा उठाया गया हाँड़ी ज्यों की त्यों भरी निकली। इस कथा को ऐसे भी लिखा है कि भगवंत आप बंजारे का रूप धर कर बैलों पर अन्न लादे आये और कवीर साहब के आसारे मैं गोज दिया जो सब भंगतों को बाँटने पर भी न चुका।

(२) जब कवीर साहब की सिद्धि शक्ति की सहिमा काशी से बहुत फैली और संसारियों की बड़ी भीड़ भाड़ होने लगी तो कवीर साहब अपनी निदा करा कर लोगों से पीछा छुड़ाने के हेतु एक दिन एक हाथ किसी वेश्या के गले में डाल कर और दूसरे हाथ से पानी से भरी बोटल, शराब का धोखा देने को, लेकर दजार भर घुसे जिन से लोगों ने समझा कि वह पतति हो गये और उनके घर जाना देह दिया।

(३) देमाही रूपक धरे कबीर साहब काशिराज के दरबार में पहुंचे वहां किसी ने आदर सत्कार न किया। जब दरबार से लौटने लगे तो गोडा मा जल बोतल से धरती पर डाल कर सोच में हो गये। राजा ने मन्त्र पूछा तो जवाब दिया कि इस समय जगन्नाथ जी का रसोइया पुरी के मंदिर में आग लग जाने से जलने लगा था मैंने यह पानी डाल कर आग बुझा दी और रसोइये की जान बचा ली। राजा ने पुरी में समाचार संगाया तो यह बात ठीक निकली।

(४) मिर्जा लोदी बादशाह ने कबीर साहब को मार डालने के लिए मिर्जा में बंधवा कर गंगाजी में डलवा दिया पर न डूबे तब आग में डूनाया पर एक बाल बँका न हुआ फिर मस्त हाथी उन पर छोड़ा वह भाग गया।

कबीर साहब के गुप्तमुख शिष्य जो संत गति को प्राप्त हुए धर्मदास जी काशी के एक प्रसिद्ध वैश्य साहूकार थे। वह पहले सनातन धर्म के अनुयायी थे और ब्रह्मणों की उन के यहाँ बड़ी भीड़ भाड़ रहा करती थी। उन से कबीर साहब मिले और सत मत की सहिमा गाई इस पर धर्मदास जी ने उनका काशी के पंडितों से शास्त्रार्थ कराया जिस में यह लोग पूरी तरह परास्त हुए और धर्मदास जी ने कबीर साहब को गुरु धारण करके उन से उपदेश लिया और बहुत काल तक उनका सतसंग और सुरत शब्द का अभ्यास करके आप भी सतगति को प्राप्त हुए। उन की बानो बचन से उन की गुरु भक्ति, अपूर्व प्रेम और गति विदित होती है।

कबीर साहब ने मगहर में जो काशी से कुछ दूर बस्ती के जिले में है देह त्याग की। उन के गुप्त होने का समय जैसा कि ऊपर लिखा आये हैं मस्यत १५९५ जान पड़ता है। उन के मगहर में शरीर त्याग करने के बहुत से प्रमाण हैं। धर्मदास जी ने अपनी आरती में इस भक्ति लिखा है—

बटर्ष आरती पीर कहाये। मगहर आगे नदी बहाये ॥

नाभा जी ने कहा है :—

भजन भरोसे आपने, मगहर तज्यो शरीर ।

अविनाशी की गोद में, बिलखें दास कबीर ॥

दादू साहब का वाक्य है :—

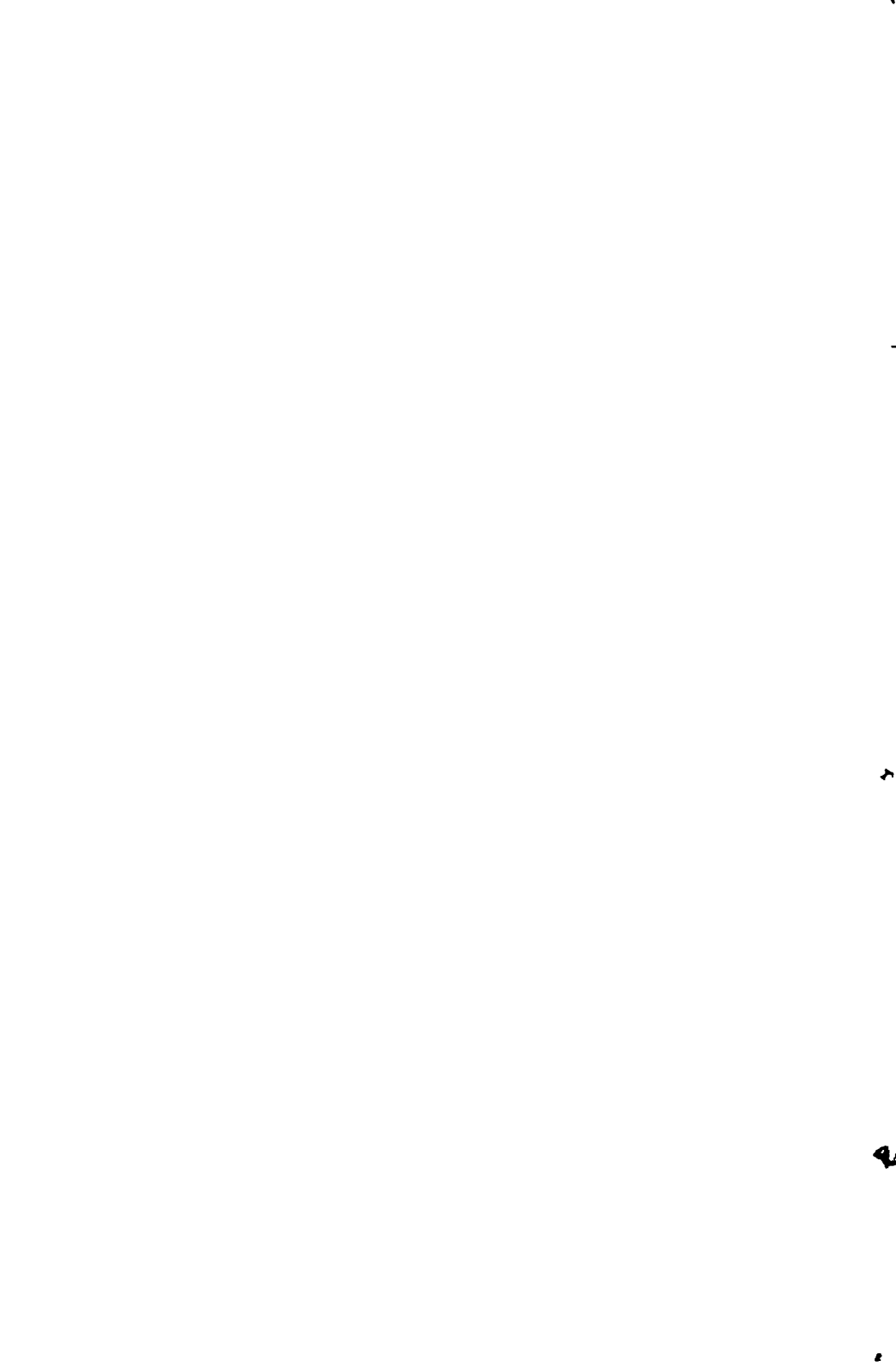
काशी तज मगहर गये, कबीर भरोसे नाम ।

उन्हेही साहब मिले, दादू पूरे काम ॥

इन के अंतकाल के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि हिन्दुओं ने इन के मृतक शरीर को जलाना और मुसलमानों ने गाड़ना चाहा इस पर बहुत भगड़ा हुआ अंत को चढ़ उठा कर देखा तो मृतक स्थान पर शरीर नदारद था खुंगंधित फूल पड़े थे । तब हिन्दुओं ने फूल लेकर मगहर में उनकी समाधि बनाई और मुसलमानों ने क़बर । यह समाधि और क़बर अब तक वर्तमान है और इस बात को जताती हैं कि यह सब बर्ष के भगड़े संतों ने तुच्छ और केवल संपारियों के योग्य विचार कर उन्हीं के लिये छोड़ दिये ।

इस में संदेह नहीं कि कबीर साहब स्वतः संत थे जिन्होंने संसार में कर्म भर्म मिटाने और सच्चे परमार्थ का रास्ता दिखाने को कलियुग में पहला संत अवतार धरा जैसा कि उनकी बानी बचन से जिस में पूरा भेद पिंड, ब्रह्मांड और निर्मल चेतन्य देश का दिया है विदित है । इस के प्रमाण में दो शब्द “कर नैनां दीदार सहल में प्यारा है” और “कर नैनां दीदार यह पिंड से न्यारा है” (सफ़हा 99 और ८१ देखिये) काफ़ी हैं इन में पूरा भेद सिलसिलेधार दिया है और इन को एक प्राचीन लिपि से लेकर अमृतसर के कबीरपंथी महंत भाई गुरदत्त सिंह जी ने भेजा है ।

कबीर साहब की बानी जैसी मधुर, मनोहर और प्रेम से भिनी हुई है उसका असर पढ़ने से मालूम होता है—उस से किसी बड़े से बड़े कवि या विद्वान की बानी का मुक़ाबला नहीं हो सकता क्योंकि संतमुख बानी अनुभवी है और कवियों की बानी विद्या बुद्धि की ॥



कबीर साहब की शब्दावली

॥ पहिला भाग ॥

सतगुरु और शब्द सहिमा

॥ शब्द १ ॥

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये ।
कीजे साहिव से हेत, परम पद पाइये ॥ १ ॥
सतगुरु सब कछु दीन्ह, देत कछु ना रह्यो ।
हमहिं अभागिनि नारि, सुख तजि दुख लह्यो ॥ २ ॥
गई पिया के महल, पिया संग ना रची ।
हिरदे कपट रह्यो छाये, मान लज्जा भरी ॥ ३ ॥
जहवाँ गैल सिलहली, चढ़ीं गिरि गिरि पड़ीं ।
उठहुं समहारि समहारि, चरन आने धरौं ॥ ४ ॥
भला बना संजोग, प्रेम का चोलना ।
तन मन अरपौं सीस, साहय हँसि चोलना ॥ ५ ॥
जो गुरु रूठे होयँ, तो तुरत मनाइये ।
हुइये दीन अधीन, चूक बकसाइये ॥ ६ ॥
जो गुरु होयँ दयाल, दया दिल हेरि हैं ।
कोटि करम कटि जायँ, पलक छिन फेरि हैं ॥ ७ ॥
कहैं कबीर ससुभाय, समुझ हिरदे धरौं ।
जुगन जुगन करौ राज, अस दुर्मति परिहरो ॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु चरन भजस मन मूरख, का जड़ जन्म गँवावस रे टेक
कर परतीत जपस उर अंतर, निसि दिन ध्यान लगावस रे ॥१॥
द्वादस कोस वसत तेरी साहज, तहाँ सुरत ठहरावस रे ॥२॥
त्रिकुटी नदिया अगम पंथ जहँ, विना मेंह झर लावस रे ॥३॥
दामिनि दमकत अमृत वरसत, अजत्र रंग दरसावस रे ॥४॥
इंगला पिंगला सुखमन से धस, नभ मंदिर उठि धावस रे ॥५॥
लागी रहे सुरत की डोरी, सुन में सहर वसावस रे ॥६॥
वंक नाल उर चक्र सोधि के, मूल चक्र फहरावस रे ॥७॥
मकर तार के द्वार निरखि के, तहाँ पतंग उड़ावस रे ॥८॥
विन सरहद अनहद जहँ बाजै, कौने सुर जहँ गावस रे ॥९॥
कहँ कबीर सतगुरु पूरे से, जो परचै सो पावस रे ॥१०॥

॥ शब्द ३ ॥

मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर, सतसंग विना जिय तरसे ।
इस सतसंग में लाभ बहुत है, तुरत मिलावै गुरु से ॥२॥
मूरख जन कोइ सार न जानै, सतसंग में अमृत वरसे ॥३॥
सब्द सा हीरा पटक हाथ से, मुट्ठी भरी कंकर से ॥४॥
कहँ कबीर सुनो भाई साधो, सुरत करो वहि घर से ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सतगुरु अलख लखाया, जब आप आप दरसाया । टेका
घोज मध्य ज्यों वृच्छा दरसे, वृच्छा मट्टे छाया ।
परमानम में आतम तैसे, आतम मट्टे माया ॥ १ ॥

ज्यों नभ मट्टे सुन्न देखिये, सुन्न अंड आकारा ।
 निःअच्छर तें अच्छर तैसे, अच्छर छर त्रिस्तारा ॥ २ ॥
 ज्यों रवि मट्टे किरन देखिये, किरन मध्य परकासा ।
 परमात्म तें जीव ब्रह्म इमि, जीव मध्य तिमि स्वाँसा ॥३॥
 स्वाँसा मट्टे सब्द देखिये, अर्थ सब्द के माहीं ।
 ब्रह्म तें जीव जीव तें मन यों, न्यारा मिला सदाहीं ॥४॥
 आपहि बीज वृच्छ अंकूरा, आप फूल फल छाया ।
 आपहि सूर किरन परकासा, आप ब्रह्म जिवमाया ॥५॥
 अंडकार सुन्न नभ आपै, स्वाँस सब्द अरथाया ।
 निःअच्छर अच्छर छर आपै, मन जिव ब्रह्म समाया ॥६॥
 आत्म में परमात्म दरसै, परमात्म में भाँई ।
 भाँई में परछाँई दरसै, लखे कवीरा साँई ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

भाई कोई सतगुर संत कहावै । नैनन अलख लखावै । टेक
 डोलत डिगै न डोलत बिसरै, जव उपदेस दृढ़ावै ।
 प्रान-पूज्य^१ किरिया तें न्यारा, सहज समाधि सिखावै ॥१॥
 द्वार न रूंधै पवन न रोकै, नहिं अनहद अरुभावै ।
 यह मन जाय जहाँ लग जवहीं, परमात्म दरसावै ॥२॥
 करम करै निःकरम रहै जो, ऐसी जुगत लखावै ।
 सदा विलास त्रास नहिं मन में, भोग में जोग जगावै ॥३॥
 धरती त्यागि अकास हुं त्यागै, अधर मडैया छावै ।
 सुन्न सिखर के सार सिला पर, आसन अचल जमावै ॥४॥

^१ प्रान से पूजने योग्य सतगुर ।

भीतर रहा सो बाहर देखै, दूजा दृष्टि न आवै ।
कहत कवीर वसा है हंसा, आवागवन मिटावै ॥५॥

॥ गब्द ६ ॥

जत्र तें मन परतीति भई ॥टेक॥

तत्र तें अवगुन छूटन लागे, दिन दिन बाढ़त प्रीति नई ॥१॥
सुरतिनिरतिमिलि ज्ञानजौहरी, निरखिपरखिजिनवस्तुलई
थोड़ी वनिज बहुत है बाढ़ी, उपजन लागे लाल मई ॥२॥
अगम निगम तूखीजु निरंतर, सत्तनाम गुरु मूल दई ।
कहें कवीर राधकी संगति, हुती बिकार सो छूटि गई ॥३॥

॥ गब्द ७ ॥

साधो सब्द साधना कीजै ।

जेहिं सब्द तें प्रगट भये सब सोई सब्द गहि लीजै ॥टेक॥
सब्दहि गुरु सब्द सुनि सिप भे सब्द सो विरला बूझै ।
सोई सिप्य सोई गुरु महातम जेहिं अंतर गति सूझै ॥ १ ॥
सब्दै वेद पुरान कहत है सब्दै सब ठहरावै ।
सब्दै सुर मुनि संत कहत हैं सब्द भेद नहिं पावै ॥२॥
सब्दै सुनि सुनि भेष धरत हैं सब्द कहै अनुरागी ।
पट दरसन सब सब्द कहत है सब्द कहै वैरागी ॥ ३ ॥
सब्दै माया जग उतपानी सब्दै केरि पसारा ।
कहें कवीर जहें सब्द होत है तवन भेद है न्यारा ॥ ४ ॥

॥ गब्द ८ ॥

साधो सब्द सौं बेल जमाई ॥ टेक ॥

तीन लोक सापा फैलाई गुरु विन पेड़ न पाई ॥ १ ॥

सापा के तर पेड़ छिपाना सापा ऊपर छाई ।
 सापा तें बहु सापा उपजी दुइ सापा अधिकाई ॥ २ ॥
 बेल एक सापा दुइ फूटी ता तें भइ बहुताई ।
 सापा केविच बेल समानी दिन दिन बाढ़त जाई ॥ ३ ॥
 पाँचो तत्त तीन गुन उपजे फूल वास लपटाई ।
 उपजा फल बहु रंग दिखावै बीज रहा फैलाई ॥ ४ ॥
 बीज माहिं दुइ दाल बनाई मध अंकुर रहाई ।
 कहैं कबीर जो अंकुर चीन्है पेड़ मिलेगा आई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

साँई दरजी का कोइ मरम न पावा ॥ टेक ॥
 पानी की सुई पवन कै धागा, अष्ट मास नव सीयत लागा ॥ १ ॥
 पाँच पेवँद की बनी रे गुदरिया, तामें हीरा लाल लगावा ॥ २ ॥
 रतन जतन की मेटुकी बनावा, प्रान पुरुष की ले पहिरावा ॥ ३ ॥
 साहब कबीर अस दरजी पावा, बड़े भाग गुरु नाम लखावा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

साधोसब्दसभन से न्यारा । जानैगा कोइ जाननहारा ॥ टेक ॥
 जोगी जती तपी सन्यासी अंग लगावै छारा ।
 मूल मंत्र सतगुरु दाया विनु कैसे उतरै पारा ॥ १ ॥
 जोग जज्ञ व्रत नेम साधना कर्म धर्म व्यौपारा ।
 सो तो मुक्ति सभन से न्यारी किमि छूटै जम द्वारा ॥ २ ॥
 निगम नेति जा के गुन गावै संकर जोग अधारा ।
 ब्रह्मा विस्नु जेहि ध्यान धरतु हैं सो प्रभु अगम अपारा ॥ ३ ॥
 लागा रहै चरन सतगुरु के चंद चकोर की धारा ।
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो नपसिप सब्द हमारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तोहिं मोरि लगन लगाये रे फकिरवा ॥टेक॥

सोवत ही मैं अपने मँदिर में, सवदन मारि जगाये रे (फ०) ॥१

बूढ़न ही भव के सागर में, बहियाँ पकरि समुक्ताये रे (फ०) ॥२

एकै वचन वचन नहिं दूजा, तुम भो से बंद छुड़ाये रे (फ०) ॥३

कहैं कवीर सुनो भाई साधो, सत्तनाम गुन गाये रे (फ०) ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरू मोहिं घुंटिया अजर पियाई ॥टेक॥

जब से गुरू मोहिं घुंटिया पियाई, भई सुचित मेटी दुचिताई ॥१

नाम औ पधी अधर कटोरी, पियत अघाय कुमति गइ मोरी ॥२

ब्रह्मा विस्नु पिये नहिं पाये, खोजत संभू जन्म गँवाये ॥३॥

सुरति निरति कर पियै जो कोई, कहैं कवीर अमर होय सोई ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

जिनकी लगन गुरू सों नाहीं ॥ टेक ॥

ते नर खर कूकर सम जग में, विरथा जन्म गँवाहीं ॥१॥

अमृत छोड़ि विषय रस पीवैं, धृग धृग तिन के ताँई ॥२॥

हरी बेल की कोरी तुमड़िया, सब तीरथ करि आई ॥३॥

जगन्नाथ के दरसन करिके, अजहुं न गई कडुवाई ॥४॥

जैसे फल उजाड़ को लागो, विन स्वारथ करि जाई ॥५॥

कहैं कवीर विन वचन गुरू के, अंत काल पछिताई ॥६॥

विरह और प्रेम ।

॥ शब्द १ ॥

॥ चौपाई ॥

दरसनदीजे नाम सनेही । तुम बिन दुख पावे मेरी देही ॥ टिका ॥

॥ छंद ॥

दुखित तुम बिन रटत निसि दिन, प्रगट दरसन दीजिये ।
बिनतीसुनुप्रिय स्वामियाँ, बलि जाउँ बिलँघन क्रीजिये ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

अन्न न भावे नींद न आवे । बार बार मोहिं विरह सतावे ॥ २ ॥

॥ छंद ॥

त्रिविधि विधि हम भई व्याकुल, बिन देखे जिव नारहे ।
तपत तन जिव उठत झाला, कठिन दुख अत्र को सहे ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

नैन न चलत सजलजलधारा ॥ निसि दिन पंथनिहारीं तुम्हारा ४

॥ छंद ॥

गुन अवगुन अपराध छिमा कर, औगुन कष्टु न विचारिये ।
पतित-पावन राखिये ~~अपना~~* अपना प्रन न विसारिये ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

गृह आँगन मोहिं कष्टु न सोहाई ।

वज्र भई और फिखो न जाई ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

नैन भरि भरि रहे निरखत, निमिख नेह न तोड़ाइये ।
वाँह दीजे वंदी-छोड़ा, अयके वंद छोड़ाइये ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥

मीन मरै जैसे विन नीरा। ऐसे तुम विन दुखित सरीरा ॥८॥

॥ छंद ॥

दास कबीर यह करत विनती, महा पुरुष अब मानिये ।
दया कीजे दरस दीजे, अपना कर मोहिं जानिये ॥९॥

॥ शब्द २ ॥

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले ॥ टेक ॥

हीरा पायो गाँठि गठियायो, चार बार वा की क्यों खोले ॥१॥
हलकी थी जब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोले ॥२॥

सुरत कलारी भइ मतवारी, मदवा पी गइ विन तोले ॥३॥
हंसा पाये मानसरोवर, ताल तलैया क्यों डोले ॥४॥

तेरा साहब है घट माहीं, बाहर नैना क्यों खोले ॥५॥
कहैं कबीर सुनी भाई साधो, साहब मिल गये तिल ओले* ॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु दयाल कब करिहौ दया ।

काम क्रोध हंकार वियापै, नाहीं छूटै माया ॥१॥

जां लगि उत्पति विटुं रचो है, साँच कभूं नहिं पाया ।
पाँच चार सँग लाय दियो है, इन सँग जन्म गँवाया ॥२॥

तन मन डस्यो भुवंगम^१ भारी, लहरै वार न पारा ।

गुरु गारुड़ी^२ मिल्यो नहिं कबहीं, विष पसख्यौ विकरारा^३ ॥३॥

कहैं कबीर दुख का साँ कहिये, कोई दरद न जानै ।

देहु दीदार दूर करि परदा, तब मेरो मन मानै ॥४॥

* छोट। ^१ साँप। ^२ जिमको साँप के विष उतारने का मंत्र आता है। ^३ भारी।

॥ शब्द ४ ॥

बालम आओ हमारे गेह रे । तुम बिन दुखिया देह रे । टोक
सब कोइ कहै तुम्हारी नारी, मो को यह संदेह रे ।
एकमेक हूँ सेज न सोवै, तब लग कैसी सनेह रे ॥ १ ॥
अन्न न भावै नींद न आवै, गृह वन धरै न धीर रे ।
ज्यों कामी को कामिनि प्यारी, ज्यों प्यासे को नीर रे ॥ २ ॥
है कोइ ऐसा परउपकारी, पिय से कहै सुनाय रे ।
अब तो बेहाल कवीर भये हैं, बिन देखे जिव जाय रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सतगुरु हो महाराज सो पै साँई रँग डाग ॥ टोक ॥
सब्द की चोट लगी मेरे मन में ब्रेध गया तन सारा ॥ १ ॥
औषध मूल कछू नहिं लागे क्या करे वैद विचारा ॥ २ ॥
सुर नर मुनि जन पीर औलिया कोइ न पावे पारा ॥ ३ ॥
साहब कवीर सर्वरँग रँगिया सब रँग से रँग न्यारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

भीजै चुनरिया प्रेम रस बूंदन ॥ टोक ॥
आरत साज के चली है सुहागिन पिय अपने को ढूँढन ॥ १ ॥
काहे की तोरी बनी है चुनरिया काहे के लगे चारो फूँदन ।
पाँच तत्त की बनी है चुनरिया नाम के लगे फूँदन ॥ ३ ॥
बढ़िगे महल खुल गइ रे किवरिया दास कवीर लागे भूलन ४

॥ शब्द ७ ॥

दुलहिनी गावहु मंगलचार ।

हम घर आये परम पुरुष भरतार ॥ १ ॥

तन रत करि मैं मन रत करिहौं, पंच तत्व तब राती ।
 गुरुदेव मेरे पाहुन आये, मैं जोवन में माती ॥ २ ॥
 सरीर सरोवर वेदी करिहौं, ब्रह्मा वेद उचार ।
 गुरुदेव संग भाँवरि लेइहौं, धन धन जाग हमार ॥ ३ ॥
 सुर तेंतीसा कौतुक आये, मुनिवर सहस अठासी ।
 कहैं कवीर हम व्यःहि चले हैं, पुरुष एक अविनासी ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मैं अपने साहव संग चली ॥ टेक ॥

हाथ में नरियर मुख में वीड़ा, मोतियन माँग भरी ॥१॥
 लिझी घोड़ी जरद बछेड़ी, तापै चढ़ि के चली ॥ २ ॥
 नदी किनारे सतगुर भेंटे, तुरत जनम सुधरी ॥ ३ ॥
 कहैं कवीर सुनो भाई साधो, दीउ कुल तारि चली ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

सखियो हमहूं भई ससुरासी ॥ टेक ॥

आयो जोवन विरह सतायो, अब मैं ज्ञान गली अठिलाती १
 ज्ञान गली में सतगुरु मिलि गे, सोइइ हमें पिया की पाती २
 दा पानी में अगम संदेसा, अब हस मरने को न डेराती ३
 कहत कवीर सुनो भाई साधो, वर पाये अविनासी ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

कैसे जीवेगी विरहिणी प्रिया विन, कीजेकौन उपाय ॥ टेक ॥
 दिवस न भूख रैन नहिं सुख है, जैसे कलिजुग जाम ।
 खेलत फाग छाँड़ि चलु सुदर, तज चलु धन औ धाम ॥१॥

वन खँड जाय नाम लौ लावे, मिलि पिय से सुख पाय ।
 तलफत खीन बिना जल जैसे, इरसन लीजे धाय ॥ २ ॥
 बिना अकार रूप नहिं रेखा, कौन मिलेगी आय ।
 आपन पुरुष समझि ले सुंदरी, देखो तन निरताय ॥ ३ ॥
 सद्द सरूपी जिव पिव बूझा, छाँडे भ्रम की टेक ।
 कहैं कबीर और नहिं दूजा, जुग जुग हम तुम एक ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

कैसे दिन कटिहैं जतन बतये जइयो ॥ टेक ॥

येहि पार गंगा ओहि पार जमुना,

बिचवाँ मड़इया हमकाँ छवाये जइयो ॥ १ ॥

अँचरा फारि के कागज बनाइन,

अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयो ॥ २ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधे,

बहियाँ पकरि के रहिया बतये जइयो ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु मेरी चूक सँभारो ।

हैं अधीन हीन मति मेरी । चरनन तें जिन टारो ॥ टेक ॥

मन कठोर कष्टु कहां न माने । बहु वा को कहि हारो ॥ १ ॥

तुम हीं तें सब हौत गुसाँई । या को वेग सँवारो ॥ २ ॥

धव दीजे संगत सतगुर की । जा तें होय निसूतारो ॥ ३ ॥

और सकल संगी सब बिसरैं । हौउ तुम एक पियारो ॥ ४ ॥

कर देख्यो हित सारे जग से । कोइ न मिल्यो पुनि भारो ॥
कहैं कवीर सुनो प्रभु मेरे । भवसागर से तारो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मिलना कठिन है, कैसे मिलौंगी पिय जाय ॥टेक॥
समझि सोचि पग धरौं जतन से, वार वार डिग जाय ।
जँधी गैल राह रपटौली, पाँव नहीं ठहराय ॥ १ ॥

लोक लाज कुल की मरजादा, देखत मन सकुचाय ।
नैहर वास वसौं पीहर में, लाज तजी नहीं जाय ॥२॥

अधर भूमि जहें महल पिया का, हम पै चढ़ो न जाय ।
धन भइ वारी पुरुष भये भोला, सुरत भकौला खाय ॥३॥

दूती सतगुरु मिले बीच में, दीन्हो भेद बताय ।
साहब कवीर पिया से भेंटे, सीतल कंठ लगाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

गुरु ने मोहिं दीन्हो अजब जड़ी ॥ टेक ॥
सो जड़ी मोहिं प्यारी लगतु है, अमृत रसन भरी ॥१॥

कायानगर अजब इक वँगला, ता में गुप्त धरी ॥ २ ॥
पाँचो नाग पचीसो नागिन, सूँघत तुरत मरी ॥ ३ ॥

या कारे ने सब जग खायो, सतगुरु देख डरी ॥४॥
कहत कवीर सुनो भाई साधो, ले परिवार तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु हमें सजीवन मूर दई ॥ टेक ॥
जल थोड़ा वरपा भइ भारी, छाया रही सब लालमई ॥१॥

छिन छिन पाप कटन जब लागे, वाढ़न लागी प्रीति नई ॥ २ ॥

अमरापुर में खैती कीन्हा, हीरा नग तें भेंट भई ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मन की दुविधा दूर भई ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

गगन की ओट निसाना है ॥ टेक ॥

दाहिने सूर चन्द्रमा बायें, तिन के बीच छिपाना है ॥१॥
तन की कसान सुरत का रोदा, सव्द वान ले ताना है २
मारत वान बेधा तनही तन, सतगुरु का परवाना है ॥३॥
माख्यो वान घाव नहिं तन में, जिन लागा तिन जाना है ४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

जाके लगी सव्द की चाट ॥ टेक ॥

का पोखर का कुआँ बावड़ी, का खाई का कोट ॥१॥
का बरछी का छुरी कटारी, का ढालन की ओट ॥२॥
या तन की बारूद बनी है, सत्तनाम की तोप ॥ ३ ॥
मारा गोला भरमगढ़ टूटा, जीत लिया जम लोक ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तरिहै सव्द की ओट ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

साँईं विन दरद करेजे होय ॥ टेक ॥

दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, कासे कहूं दुख रोय ॥१॥
आधी रतियाँ पिछले पहरवाँ, साँईं विन तरस तरस ही सोय
पाँचे मारि पचीसो वस करि, इन में चहै कोइ होय ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु मिले सुख होय ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

हमरी ननंद निगोड़िन जागे ॥ टेक ॥

कुमनिलकुटिया निसि दिन व्यापे, सुमति देखिनहिं भावे ।

निसि दिन लेत नाम साहब की, रहत रहत रँग लागे ॥१॥

निसि दिन सेलत रही सखियन संग, मोहिं बड़ी डर लागे ।

मोहे साहब की ऊँची अटारिया, चढ़न में जियरा काँपे ॥२॥

जो गुम गहे तो लज्जा त्यागे, पिघ से हिलि मिलि लागे ।

गुनट गोल घंग भर भेंटे, नैन आरती साजे ॥ ३ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, चतुर होय सो जाने ।

निज प्रातम की आस नहीं है, नाहक काजर पारे ॥४॥

॥ शब्द २० ॥

अमरपुर ले चलु हो सजना ॥ टेक ॥

अमरपुरी की संकरी गलियाँ, अड़वड़ है चढ़ना ॥ १ ॥

ढोकर लगी गुरु ज्ञान सव्द की, उघर गये भूपना ॥२॥

दाहि रे अमरपुर लागि बजरिया, सौदा है करना ॥३॥

दाहि रे अमरपुर संत वसतु हैं, दरसन है लहना ॥४॥

संत रामाज सभा जहें बैठी, वही पुरुष अपना ॥ ५ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, भवसागर है तरना ॥६॥

॥ शब्द २१ ॥

भक्ती का मारग भौना रे ॥ टेक ॥

नहिं अचाह नहिं चाहना चरनन लौलीना रे ॥१॥

साध के सतसँग में रहे निस दिन मन भीना रे ॥२॥
 सव्द में लुत ऐसे वसे जैसे जल मीना रे ॥ ३ ॥
 मान मनी को यों तजे जस तेली पीना रे ॥ ४ ॥
 दया छिमा संतोप गहि रहे अति आधीना रे ॥ ५ ॥
 परमारथ में देत सिर कछु विलेंव न कीना रे ॥ ६ ॥
 कहैं कवीर मत भक्ति का परगठ कह दीना रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २२ ॥

ऋतु फागुन नियरानी, कोइ पिया से मिलावे ॥ टेक ॥
 सोइ तो सुंदर जाको पिय को ध्यान है,
 सोइ पिय के मन मानी ।

खेलत फाग अंग नहिं मोड़े, सतगुरु से लिपटानी ॥१॥
 इक इक सखियाँ खेल घर पहुंचीं, इक इक कुल अरुजानी ।
 इक इक नाम बिना वहकानी, हो रही ऐंचा तानी ॥२॥
 पिय को रूप कहाँ लग वरनों, रूपहि माहिं समानी ।
 जो रँग रँगै सकल छवि टाके, तन मन सभी भुलानी ॥३॥
 यों मत जाने यहि रे फाग है, यह कछु अकथ कहानी ।
 कहैं कवीर सुनो भाई साधो, यह गति विरले जानी ॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

पिया मेरा जागे मैं कैसे सोइ री ॥ १ ॥

पाँच सखी मेरे सँग की सहेली,

उन रँग रँगी पिया रँग न मिली री ॥ २ ॥

मान नयानी ननद दोरानी,

उन डर डगी पिय सार न जानी री ॥ २ ॥

नादन ऊपर सेज विछानी,

नद न रा-हों मागी लाज लजानी री ॥ ३ ॥

नन दिजन बोहिं कूका मारे,

से न गुनी रचि रहि सँग जार री ॥ ४ ॥

नने कबीर मुनु सखी सयानी,

बिन गनगुरु पिया मिले न मिलानी री ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

नाने लागि गये वान सुरंगी हो ॥ टेक ॥

पन गनगुरु उपदेश दियो है। होइ गयो चित्त भिरंगी हो ॥१॥

ध्यान पुरुष कीवनी है तिरिया, घायल पाँचो संगी हो ॥२॥

घायल की गति घायल जाने, का जानै जात पतंगी हो ॥३॥

कहै कबीर मुना भाई साथो, निसि दिन प्रेम उमंगी हो ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

हमन हैं इशक मस्ताना, हमन को होशियारी क्या ।

यहें आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या ॥१॥

जो विछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते ।

हमारा यार है हम में, हमन को इन्तिजारी क्या ॥ २ ॥

खलक मय नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है ।

हमन गुरु नाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या ॥३॥

न पल विछुड़ें पिया हम से, न हम विछुड़ें पियारे से ।

उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या ॥ ४ ॥

कवीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से ।
जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर वोभ भारीक्या ॥५॥

॥ शब्द २६ ॥

मन लागी मेरो यार फकीरी में ॥ टेक ॥

जो सुख पावो नाम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में १
भला घुरा सत्र को सुन लीजै, कर गुजरान गरीबी में ॥२॥
प्रेम नगर में रहनि हमारी, भलि वनि आई सवूरी में ॥३॥
हाथ में कूंडी बगल में साँटा, चारो दिस जगीरी में ॥४॥
आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहा फिरत मगरूरी में ५
कहैं कवीर सुनो भाई साधो, साहब मिलै सवूरी में ॥६॥

॥ शब्द २७ ॥

कीइ प्रेम की पैंग फुलाओ रे ॥ टेक ॥

भुज के खंभ प्रेम की रसरी, मन महबूब फुलाओ रे ॥१॥
सूहा चोला पहिरि अमोला, निजघट पिय को रिभाओ रे २
नैनन वादर की भर लाओ, स्याम घटा उर छाओ रे ॥३॥
आवत जावत खुत के मग पर, फिकिर पिया को सुनाओ रे
कहत कवीर सुनो भाई साधो, पिय को ध्यान चित लाओ रे ४

॥ शब्द २८ ॥

नाचु रे मेरो मन नट होय ॥ टेक ॥

ज्ञान कै ढोल बजाय रैन दिन, सवद सुनै सत्र कोई ।
राहू केतु नवग्रह नाचैं, जमपुर आनंद होई ॥ १ ॥
छापा तिलक लगाय बाँस चढ़ि, होइ रहु जग से न्यारा ।
सहस कला कर मन मेरो नाचै, रीझै सिरजनहारा ॥२॥

जो तुम कूदि जाव भवसागर, कला बदीं में तेरी ।
 कहीं कहीं मुने भाई साधो, हो रहु नौनिधि चैरो ॥३॥

॥ शब्द २९ ॥

गुरु भिन दाता कोइ नहीं जग माँगनहारा ।
 तीन लोक ब्रह्मंड में सब के भरतारा ॥ १ ॥
 आपगरी तीरथ चले का तीरथ तारे ।
 नाम कोथ मद् ना मिटा का देह पखारे ॥ २ ॥
 गगन की नौका बनी बिच लोहा भारे ।
 गन्द भेद जाने नहीं मूरख पचि हारे ॥ ३ ॥
 घांछ मनोअथ पिय मिले घट भया उजारा ।
 मनगुरु पार उतारि हँ सब संत पुकारा ॥ ४ ॥
 पाहन दो का पूजिये या में का पावे ।
 अठमठ के फल घर मिले जो साध जिमावे ॥ ५ ॥
 कहें कहीं विचार के अंधा खल डोले ।
 अंधे को सूके नहीं घट ही में बोले ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३० ॥

साधो सहज समाधि भली ।
 गुरु प्रनाप जा दिन से जागी, दिन दिन अधिक चली ॥१॥
 जहँ जहँ डोलैँ सो परिकरमा, जो कुछ करैँ सो सेवा ।
 जय नौवाँ तय करैँ दंडवत, पूजैँ और न देवा ॥ २ ॥
 कहैँ सो नाम सुनैँ सो सुमिरन, खावें पियौँ सो पूजा ।
 गिरह उजाड़ एक सम लेखीँ, भाव मिटावीँ दूजा ॥ ३ ॥

इच्छा अनुसार । अठमठ तीरथ ।

आँख न मूँदौँ कान न रुंधौँ, तनिक कष्ट नहिं धारौँ ।
 खुले नैन पहिचानौँ हँसि हँसि, सुंदर रूप निहारौँ ॥४॥
 सव्द निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी ।
 जठत वैठत कवहुं न छूटै, ऐसी तारी लागी ॥ ५ ॥
 कहैं कवीर यह उनमुनि रहनी, सो परगट कर गाई ।
 दुख सुख से कोइ परे परम पद, तेहि पद रहा समाई ॥६॥

॥ शब्द ३१ ॥

गुरु बड़े भृंगी हमारे गुरु बड़े भृंगी ।
 कीट सौं ले भृंग कीन्हा आप सौं रंगी ॥ टेक ॥
 पाँव झौरै पंख झौरै और रँग रंगी ।
 जाति कुल ना लखै कोई सब भये भृंगी ॥१॥
 नदी नाले मिले गंगै कहलावैं गंगी ।
 दरियाव दरिया जा समाने संग में संगी ॥ २ ॥
 चलत मनसा अचल कीन्ही मन हुआ पंगी ।
 तत्त में निःतत्त दरसा संग में संगी ॥ ३ ॥
 बंध तें निबंध कीन्हा तोड़ सब तंगी ।
 कहैं कवीर किया अगम गम नाम रँग रंगी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

मैं का से बूझौँ अपने पिया की बात री ॥ टेक ॥
 जान सुजान प्रान-प्रिय पिय विन, सबै बटाऊ जात री १
 आसा नदी अगाध कुमति बहै, रोकि काहू पै न जात री २
 काम क्रोध दोउ भये करारे, पड़े विषय रत्त मात* री ॥३॥

* माते ।

मे पाँत्रो अपमान के संगी, सुमिरन को अलसात री ॥४
 कहैं कबीर विद्युरि नहिं मिलिहै, ज्यों सरवर त्रिन पात री

॥ शब्द ३३ ॥

॥५॥

नारद साध सों अंतर नाहीं ।

जो कोइ साध सों अंतर राखै, सो नर नरकै जाहीं ॥ टेक ॥

जागे साध तो मैं हूँ जागूँ, सोवै साध तो सोऊँ ।

जो कोइ मेरे साध दुखावै, जरा मूल से खोजँ ॥ १ ॥

जहाँ साध मेरो जस गावै, तहाँ करै मैं वासा ।

साध चले आगे उठ धाऊँ, मोहिं साधकी आसा ॥ २ ॥

माया मेरी अर्थ-सरीरी, औ भक्तन की दासी ।

अटगट तीरथ साध के चरनन, कोटि गया और कासी ३ ॥

अंतरध्यान नाम निज केरा, जिन भजिया तिन पाई ।

कहैं कबीर साध की महिमा, हरि अपने मुख गाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

मोहिं तोहि लागी कैसे छूटे । जैसे हीरा फोरे न फूटे ॥ टेक ॥

मोहिं तोहिं आदि अंत बन आई । अब कैसे कै दुरत दुराई १ ॥

जैसे कंवल-पत्र जल वासा । ऐसे तुम साहब हम दासा ॥ २ ॥

जैसे चक्रार तकत निसि चंदा । ऐसे तुम साहब हम वंदा ॥ ३ ॥

जैसे कीट भंग लौ लार्ड । जैसे सलिता सिंधु समाई ॥ ४ ॥

हम तो खोजा सकल जहाना । सतगुरु तुम सम कोउ न आना

कहैं कबीर हमरा मन लागा । जैसे सोनै मिला सुहागा ६

॥ शब्द ३५+ ॥

सतगुरु के सँग क्यों न गई री ॥ टेक ॥
 सतगुरु सँग जाती सोना बनि जाती,
 अब माटी के मैं मोल भई री ॥ १ ॥
 सतगुरु हैं मेरे प्रान अधारा,
 तिनकी सरन मैं क्यों न गही री ॥ २ ॥
 सतगुरु स्वामी मैं दास सतगुरु की,
 सतगुरु न भूले मैं भूल गई री ॥ ३ ॥
 सार को छोड़ि असार से लिपटी,
 धृग धृग धृग मति मंद भई री ॥ ४ ॥
 प्रान-पती को छोड़ि सखीरी,
 माया के जाल में अरुम्ह रही री ॥ ५ ॥
 जो प्रभु हैं मेरे प्रान अधारा,
 तिन की मैं क्यों ना सरन गही री ॥ ६ ॥

चितावनी और उपदेश

॥ शब्द १ ॥

बिनसतगुरुनररहत भुलाना, खोजत फिरत राहनहिं जाना ।
 केहर-सुत^१ले आयो गरड़िया, पाल पोस उन कीन्ह सयाना १
 करत कलोलरहत अजयनःसँग, आपन मर्म उनहुं नहिं जानार
 केहर इक जंगल से आयो, ताहि देख बहुतै रिसियाना ३

^१इस शब्द में कबीर साहब की छाप नहीं है परंतु जो कि अति मनोहर है और साहब के कबीरपंथी महंत ने कबीर साहब वा करके दिया है हम उसे छापते हैं । और का दृष्टा । :शकरी ।

पञ्चिके भेद तुरत समुक्ताया, आपन दसा देख मुसक्याना ४
जग कुरंग विच वसत वासना, खोजत मूढ फिरत चौगाना ५
कर उमवास मने में देखे, यह सुगंधि थैँ कहाँ बसाना ६
धर्म उर्ध्वध्विचलगन लगी है, छक्यो रूप नहिं जात बखाना ७
कहें कवीर सुनो भाई साधे, उलटि आपु में आपु समाना ८

॥ शब्द २ ॥

विन सतगुरु नर भरम भुलाना ॥ टेक ॥

ननगुरु सद् क मर्म न जाने, भूलि परा संसारा ॥१॥

विना नाम जम धरि धरि खैहै, कौन लुड़ावनहारा ॥२॥

गिरजनहार का मर्म न जाने, धृग जीवन जग तेरा ॥३॥

धरमगय जब पकरि मंगैहैं, परि है मार घनेरा ॥ ४ ॥

गुन नागी को मोह त्यागि कै, चीन्हे सद् हमारा ॥५॥

गार सद् परवाना पावो, तब उतरो भव पारा ॥६॥

डक मत हूँ के चढ़े नाव पर, सतगुरु खेवनहारा ॥७॥

साहब कवीर यह निर्गुन गावैं, संतन करो विचारा ॥८॥

॥ शब्द ३ ॥

दुक जिंदगी बंदगी कर लेना, क्या माया मद मस्ताना ॥टेक॥

रथ घोड़े सुख पाल पालकी, हाथी और वाहन नाना ।

तेरा टाठ काठ की टाटी, यह चढ़ चलना समसाना ॥१॥

रम पाटः पाटभर अम्बर, जरी वक्र का वाना ।

तेरे काज गजी गज चारिकः, भरा रहे तोसाखाना ॥२॥

गर्भ की नदवीर करो तुम, मंजिल लंशी जाना ।

पहियने का गाँव न मग में, चौकी न हाट दुकाना ॥३॥

जीते जी ले जीत जनम को,यही गोय यहि मैदाना ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,नहिं कलि तरन जतन आना ।४

॥ शब्द ४ ॥

सुगवा पिंजरवा छोरि करि भागा ॥टेक॥
इस पिंजरे में दस दरवाजा । दसो दरवाजे किवरवा लागा १
अँखियन सेती नीर वहन लाग्यो ।

अब कस नाहिं तू बोलत अभागा ॥ २ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो ।

उड़ि गे हंस टूटि गयो तागा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

कौनो ठगवा नगरिया लूटल हो ॥ टेक ॥

चंदन काठ कै बनल खटोलना । तापर दूलहिन सूतलहो ।१।
उठो री सखी मोरी माँग सँवारो । दूलहा मो से रुसल होर
आये जमराज पलंग चढ़ि बैठे । नैनन आँसू टूटल हो ३
चारि जने मिलि खाट उठाइन । चहुं दिस धूधू जठल हो ४
कहत कबीर सुनो भाई साधो।जग से नाता छूटल हो ५

॥ शब्द ६ ॥

हम का ओढ़ावे चदरिया, चलती विरिया ॥टेक॥

प्रानराम जव निकसन लागे,उलट गईं दूनो नैन पुतिरिया १
भीतर से जव बाहर लाये,छूटि गई सब महल अटरिया २
चार जने मिलि खाट उठाइन,रोवत ले चले डगर डगरिया ३
कहत कबीर सुनो भाईसाधो,संग चलेगी वहि सूखीलकरिया ४

॥ शब्द ७ ॥

क्या देख दिवाना हूवा रे ॥ टेक ॥
 माया मूली सार बनी है, नारी नरक का कूवा रे ॥१॥
 हाड़ मास नाड़ी का पिंजर,ता में मनुवाँ सूवा रे ॥२॥
 भाई बंद और कुटंब कवीला,ता में पचि पचि मूवारे ॥३॥
 कहत कवीर सुनो भाई साधो,हार चला जग जूवा रे ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

धीनी बहुत रहि थोरी सी ॥ टेक ॥
 गाठ परे नर भींखन लागे,निकर प्रान गयो चोरी सी १
 भाई बंद कुटंब सब आये,फूंक दियो मानो हीरी सी ॥२॥
 कहत कवीर सुनो भाई साधो,सिर पर देत हैं भीरी सी ॥३॥

॥ शब्द ९ ॥

नाच समुझ अभिमानी, चादर भइ है पुरानी ॥ टेक ॥
 टुकड़े टुकड़े जोड़ि जुगत सां,सी के अँग लिपटानी ।
 कर डारी मैली पापन सां,लोभ मोह में सानी ॥ १ ॥
 ना यहि लगो ज्ञान कै सायुन,ना धोई भल पानी ।
 नारी उमिर ओढ़ते बीती,भली बुरी नहिं जानी ॥२॥
 नका मान जान जिय अपने,यह है चीज बिरानी ।
 कहत कवीर धर राखु जतन से,फेर हाथ नहिं आनी ॥३॥

॥ शब्द १० ॥

खेल ले नैहरवाँ दिन चारि ॥ टेक ॥
 पहिली पठौनी तीन जने आये,नौवा बामहन बारि ॥१॥
 बाबुल जो मैं पैयाँ तेरी लागीं,अब की गवन दे टारि

दुसरी पठौनी आपै आये. लेके डोलिया कहारि ॥ ३ ॥
 धरि बहियाँ डोलिया बैठारिन, फीज न लागै गोहारि ॥ ४ ॥
 ले डोलिया जाय वन में उतारिन, कोइ नहिं संगि हमारि ॥ ५ ॥
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, डक घर है दस द्वारि ॥ ६ ॥

॥ शब्द ११ ॥

हँडिया फँदाय धन चलु रे, मिलि लेहु सहेली ।
 दिनाँ चारि को संग है, फिर अंत अकेली ॥ १ ॥
 दिन दस नैहर खेलि ले. सासुर निज भरना ।
 बहियाँ पकरि पिय ले चले. तब उजर न करना ॥ २ ॥
 इक अंधियारी कोठरी, दूजे दिया न वाती ।
 लेहिं उतारि ताही घराँ, जहँ संग न साथी ॥ ३ ॥
 इक अंधियारी कूडियाँ, दूजे लेजुर नूटी ।
 नैन हमारे अस दुरैं, मानो गागर फूटी ॥ ४ ॥
 दास कबीरा यों कहै, जग नाहिन रहना ।
 संगी हमरे चलि गये, हमहूँ को चलना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

साँई के सँग सासुर आई ॥ टेक ॥
 संगनसूती स्वाद न जान्यौ, गयो जोवन सुपने की नाँई ॥ १ ॥
 जनाचारि मिलि लगन साधाई, जना पाँच मिलि मंडप छाई
 सखी सहेली मंगल गावैं, दुख सुख साथे हरदी चढ़ाई ॥ २ ॥
 नाना रूप परी मन भाँवरि, गाँठि जोरि भइ पतिकी आई ।
 अरघै दै दै चली सुवासिन, चौकहिं राँड भई सँग साँई ॥ ३ ॥
 भयो बियाह चली दिन दूलह. वाट जात रुनधी रुनुभाई ।
 कहैं कबीर हम गवने जैवै, तरव कंत लै तूर बजाई ॥ ४ ॥

*रस्की । *तरैने ।

॥ शब्द १३ ॥

बहुनि नहिं आवना या देस ॥ टेक ॥

जो जो गये बहुरि नहिं आये, पठवत नाहिं संदेस ॥१॥

गुरु नर मुनि औ पीर ओलिया, देवी देव गनेस ॥ २ ॥

गुरु धरि जनम सबे भरमे हैं, ब्रह्मा विस्तु महेस ॥३॥

जोगी जगम औ सान्यासी, डीगम्बर दुरवेस ॥४॥

चंडित मुंडित पंडित लोड्ड, सुर्ग रसातल सेस ॥५॥

नानी गुनी नतुर औ कबिता, राजा रंक नरेस ॥६॥

कोटु रफीम कोटु गम बग्याने, कोटु कहै आदेस ॥७॥

नाना भेष बनाय रात्रे मिलि, दृढ़ि फिरे चहुं देस ॥ ८ ॥

कहैं कर्दार अंत ना पैहौ, विन सतगुरु उपदेस ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

जा दिन की कलु सुध कर मन माँ ॥ टेक ॥

जा दिन लेचलु लेचलु होई, ता दिन संग चलै नहिं कोई ।

नान मान मुन नारी रोई, माटी के संग दिये समोई

जा माटी काटेगी नन माँ ॥ १ ॥

उलफत नेहा कुलफत नारी, किसकी घीवी किसकी बाँदी ।

किसका माना किसकी चाँदी, जा दिन जम लेचलिहैवाँधी ।

डैरा जाय परै बहि वन माँ ॥ २ ॥

टाँड़ा तुम ने लादा भारी, अनिज किया पूरा व्यौपारी ।

जूया खेला पूंजा हारी, अब चलने की भई तयारी ।

हित चिन मन तुम लाओ धन माँ ॥ ३ ॥

जो कोइ गुरु से नेह लगाई, बहुत भाँति सोई सुख पाई ।
माटी में काया मिलि जाई, कहै कवीर आने गोहराई ।
साँच नाम साहब को संग माँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जोगी जन जागत रही मेरे भाई ।
जागत रहियो सोय मत जैयो, चोर मूसि लै जाई ॥ १ ॥
विरह फाँसि डालै हित चित करि, मारै ढिंग बैठाई ।
वाजीगर बंदर करि राखै, ले जाय संग लगाई ॥ २ ॥
रस कसि लेत निचेरि कामिनी, बुधि बल सब छलि खाई ।
गाँडे की छोई करि डारै, रहन न देत मिठाई ॥ ३ ॥
तसकर तरज+ हरन+ मृग-चितवन, कंदर्प लेत चुराई ।
घृत पावक निज नारिनिकटढिंग, कोइविरले जनठहराई ॥ ४ ॥
वन के तपसी नागा लूटे, सुर नर मुनि छलि खाई ।
कहैं कवीर सुनो भाई साधो, जग लूटा ढोल बजाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

हमारे मन क्य भजिहो गुरु नाम ॥ टेक ॥
बालापन जनमत हीं खैयो, ज्वानी में व्यापा काम ।
बूढ़ भये तन थाकन लागे, लटकन लागे चाम ॥ १ ॥
कानन बहिर नैन नहिं सूझै, भये दाँत बेकाम ।
घर की त्रिया विमुख होइ बैठी, पुत्र क्रियो कलकान ॥ २ ॥
खटिया से भुइयाँ कर दीन्हो, जम का गड़ा निचान ।
कहत कवीर सुनो भाई साधो, दुविधा में निरसत प्रान ॥ ३ ॥

चोर । ढंग । बंदर लेने वाला । शीर्ष । भगड़ा ।

॥ शब्द १७ ॥

मन हलवाई हो, सतनाम विमल पकवान ॥ टेक ॥
 काया कराही कर्म घृत भरु, मन मैदा की सानु ।
 ब्रह्म अगिन उदगारि के, तू अजब मिठाई छानु ॥१॥
 मन हमारे ताखरी। हो, मन हमारे सेर ।
 नुगनि हमरी डाँड़िया हो, चित हमारे फेर ॥२॥
 गगन मंडल में घर हमारे, त्रिकुट मार दुकान ।
 गति हमरी उनमुनी, तातें लागि बस्तु विकान ॥३॥
 लाभ लहर नदिया वही हो, लख चौरासी धार ।
 दिन गुरु ताकिन वूटि मुए, कोइ गुरुमुख उत्तरे पार ॥ ४ ॥
 कहं कर्षीर स्वामी अगोचरा, तुम गति अगम अपार ।
 गंजन लाद्यो रात नाम, राव विष लाद्यो संसार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

करो जनन सखी साँईं मिलन की ॥ टेक ॥

गुड़िया गुड़वा सूप सुपलिया,
 नजि दे वुधि लरिकैयाँ खेलन की ॥ १ ॥

देवता पिन्तर भुड़याँ भवानी,
 यह मारग चौरासी चलन की ॥ २ ॥

ऊँचा महल अजब रँग वँगला,
 साँईं की सेज वहाँ लगी फूलन की ॥ ३ ॥

तन मन धन सब अर्पन कर वहाँ,
 सुरत सम्हार परु पड़याँ सजन की ॥ ४ ॥

कहैं कवीर निर्भय होय हंसा,
कुंजी बता द्यो ताला खुलन की ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

अपने घट दियना वारु रे ॥ टेक ॥

नाम कै तेल सुरत कै वाती, ब्रह्म अगिन उदगारु रे ॥ १ ॥
जगमग जोत निहारु मँदिर में, तन मन धन सब वारु रे ॥ २ ॥
झूठी जान जगत की आसा, वारंवार त्रिसारु रे ॥ ३ ॥
कहैं कवीर सुनो भाई साधो, आपन काज सँवारु रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

मन तुम नाहक दुंद मचाये ॥ टेक ॥

करि असनान छुबो नहिं काहू, पाती फूल चढ़ाये ॥ १ ॥
मूरति से दुनिया फल माँगै, अपने हाथ बनाये ॥ २ ॥
यह जग पूजै देव देहरा, तीरथ वर्त अन्हाये ॥ ३ ॥
चलत फिरत में पाँव थकित भे, यह दुख कहाँ समाये ॥ ४ ॥
झूठी काया झूठी माया, झूठे झूठ लखाये ॥ ५ ॥
वाँझिन गाय दूध नहिं देहै, माखन कहैं से पाये ॥ ६ ॥
साँचे के सँग साँच वसत है, झूठे मारि हटाये ॥ ७ ॥
कहैं कवीर जहैं साँच वस्तु है, सहजै दरसन पाये ॥ ८ ॥

॥ शब्द २१ ॥

मन फूला फूला फिरै जगत में कैसा नाता रे ॥ टेक ॥
माता कहै यह पुत्र हमारा, वहिन कहै चिर मेरा ।
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारि कहै नर मेरा ॥ १ ॥
पेट पकरि के माता रोवै, वाँहि पकरि के भाई ।
लपटि भूपटि के तिरिया रोवै, हंस अकेला जाई ॥ २ ॥

जत्र लग जीवै मातारोवै, वहिन रोवै दस मासा ।
 नेह्द दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घर वासा ॥३॥
 नान गजी चरगजी मंगाया, चढा काठ की घोड़ी ।
 नानो काने आग लगाया, फूंक दियो जस हीरी ॥४॥
 हाइ जरे जस लाह कड़ी को, केस जरै जस घासा ।
 गाना ऐसी काया जरि गइ, कोई न आयो पासा ॥५॥
 पग की तिरिया ढूँढन लागी, ढूँढि फिरी चहुं देसा ।
 पग की गीर गुनो भाइ साधो, छाँड़ो जगकी आसा ॥६॥

॥ गठ २२ ॥

छाँड़ि दे मन वीरा डगमग ॥ टेक ।
 अत्र नो जरै मरे वनि आवै, लीन्हो हाथ सिंधोरा ।
 प्रान प्रान करो दृढ़गुरूकी, गुनो सब्द घनघोरा ॥१॥
 हाइ निगंकमगन हूँ नाचे, लाभ मोह भ्रम छाँड़े ।
 गूरा कहा मरन सो डरपे, सती न संचय भाँड़े ॥२॥
 लाक लाजकुल की मरजादा, यही गले में फाँसी ।
 आगे हूँ पग पाछे थरिहो, होय जगत में हाँसी ॥३॥
 अगिन जरे ना सनी कहावै, रन जूफे नहिं सूरा ।
 थिरह अगिन अंतर में जारै, तव पावै पद पूरा ॥४॥
 यह संमार मकल जग मैला, नाम गहै तेहि सूंचा ।
 कहैं कबीर भक्ति मन छाँड़ो, गिरत परत चहु जँचा ॥५॥

॥ गठ २३ ॥

भूला मन समुक्तावै जो पै भूला मन समुक्तावै ॥ टेक ॥
 अरव खरख लों दर्ब गाडे, खरिचन खान न पावै ।
 जत्र जम आइ करै कंठ घेरो, दै दै सैन बुक्तावै ॥१॥

बोड बचूर अंत्र फल चाहत, सो फल कैसे पावै ।
 खोंटा दास गाँठि लै डोलन, भलि भलि वस्तु मोलावै ॥२॥
 गुरु परताप साध की संगति, मन-चाँछित फल पावै ।
 जाति जोलाहा नाम कवीरा, विमल विमल गुन गावै ॥३॥

॥ शब्द २४ ॥

मन बनियाँ बानि न छोड़ै ॥ टेक ॥

जनम जनम का मारा बनियाँ, अजहूँ पूर न तौलै ।
 पासँग कै अधिकारी लै लै, भूला भूला डोलै ॥ १ ॥
 घर में दुविधा कुमति बनी है, पल पल में चिन तोरै ।
 कुनवा वाके सकल हरामी, अमृत में विष चारै ॥ २ ॥
 तुमहीं जल में तुमहीं थल में, तुमहीं घट घट बोलै ।
 कहैं कवीर वा सिप को डरिये, हिरदे गाँठि न खोलै ॥३॥

॥ शब्द २५ ॥

उठि पछिलहरा पिसना पीस ॥ टेक ॥

ढोरु पछोरु पलक छिन दम दम ।

अनहद जाँत गड़ा तोरे सीस ॥ १ ॥

कर विन चलै कौंक विन निघरै ।

बंकनाल चलै विस्वा वीस ॥ २ ॥

मन मैदा मीहीं कर चालौ ।

चाकर तजि द्यो पाँच पचीस ॥ ३ ॥

कहैं कवीर सुनो भाई साधो ।

आपुड़ आय मिलैं जगदीस ॥ ४ ॥

जो चाहै हो । चट्टी में जो पीले से घोड़ाका अन्न रह जाना है उसे पीकर या कोई अनाज डाल कर ओर चट्टी को तेज चलाकर काफ़ कर लेते हैं ।

॥ शब्द २६ ॥

नुम जाड अजेरे विछावो, अंधेरे में का करिहो ॥ टेक ॥
जत्र लग स्वाँसा दीप जरतु है, जैसे बनै तो बनावो ॥१॥
गुन कै पलंग ज्ञान कै तोसक, सूरति तकिया लागावो ॥२॥
जो मुरा नाहो सो सतमहले, वहुरि दुखख नहिं पावो ॥३॥
नाम कवीर गुरु सेज संत्रारो, उन की नारि कहावो ॥४॥
कहैं कवीर सुनो भाई साधो, आवा गवन मिटावो ॥५॥

॥ शब्द २७ ॥

कहै कौटु लाखों, करैया कौड और है ॥ टेक ॥
कंग्या कहै वमुदेव को निरवंस करौं ।
कयमा कहै मिसुपाल के सिर मौर है ॥ १ ॥

परम और अविनाशी मुरा सातवें लोक में पहुंचे बिना नहीं प्राप्त हो सकता ।

राजा कम के नारद मुनि ने कहा था कि अपने बहनोई वासुदेव जी की जिम्मा आँलाद के हाथ से तुम मारे जावगे इस लिये वह अपनी बहिन का मद्य आँलाद को ज्योती उत्पन्न हुई मारता गया केवल आठवीं आँलाद श्रीकृष्ण अचरज रीति से बच गये जिन्हो ने बाल अवस्थाही से अपने मामा कम का बध किया ।

जय विजय वैकुण्ठ के द्वारपाल थे जिन्हो ने शनकादिक को एक समय से वैकुण्ठ के द्वारे पर रोक दिया । इस पर शनकादिक ने सराप दिया जिस के प्रभाव से उन दोनों ने पहिले हिरगयाज और हिरगयकश्यप का चोला पाया, दूसरे जन्म में रावन और कुभकरन हुए और तीसरे जन्म में शिशुपाल और दन्तवक्र ।

जिम्मा जी के भाई रुक्म ने अपने बल के घमंड में अपनी बहिन और पिता की इच्छा के विरुद्ध रुक्मिणी जी का व्याह राजा शिशुपाल से ठहराया । जब वरान आई श्रीकृष्ण ने रुक्म शिशुपाल और दूसरे गुरु यार राजाओं का घमंड तोड़ने और अपने भक्त रुक्मिणी जी और जन के पिता की मनोकामना पूरी करने के हेतु रुक्मिणी को हर कर अपने साथ ब्याह कर लिया । कुछ काल पीछे शिशुपाल और रुक्म दोनों जिन २ अवसर पर श्रीकृष्ण के हाथ से मारे गये ।

रावना- कहै मैं तो जम को भी मार डारौं ।

मेघनाथ कहै अपार बल मोर है ॥ २ ॥

कसिपा कहै पहलाद को मैं मारि डारौं ।

देखो मेरे भाई याही मेरी कौल है ॥ ३ ॥

कहैं कवीर सुनो भाई साधो ।

भक्त-ब्रह्मल सतनाम माहीं ठौर है ॥ ४ ॥

१

॥ शब्द २८ ॥

नागिन ने पैदा किया नागिन डंसि खाया ।

कोइ कोइ जन भागत भये गुरु सरन तकाया ॥१॥

सृंगी रिपिः भागत भये वन साँ वसे जाई ।

आगे नागिन गाँसि के बोहीं डंसि खाई ॥ २ ॥

नेजाधारी सिव बड़े भागे कैलासा ।

जोति रूप परगट भई परवत परकासा ॥ ३ ॥

रुर नर मुनि जागी जती कोइ वचन न पाया ।

नान तेल दूँडे नहीं कच्चे धरि खाया ॥ ४ ॥

रावन लंका का राजा और मेघनाद उसका बेटा दोनों भारी जीधा वे अंत के रावन श्रीरामचन्द्र और मेघनाद लक्ष्मण जी के हाथ से मारे गये ।

† हिरण्यकश्यप यड़ा ईश्वर-द्वीही था और अपने भगवत-भक्त बेटे प्रह्लाद को भक्ति के अपराध से मार डालने पर तत्पर था । ईश्वर ने नरसिंहावतार धर कर अपने मख से हिरण्यकश्यप का पेट फाड़ कर उस का वध किया ।

‡ सृंगी ऋषि की कथा निम्नित अंग के नागिन शब्द की पहली कड़ी के नोट में देखिये ।

नागिन डरपै संत से उहवाँ नहिं जावै ।
 कहै कबीर गुर मंत्र से आपै मरि जावै ॥ ५ ॥

॥ गद्य २९ ॥

पानी निन मीन पियासी। मोहिं सुनि सुनि आवत हाँसी। टे०
 नाह-ने तू भर्म करतु है, क्या मथुरा क्या कासी ॥१॥
 नग में परतु भरी नहिं सूझै, बाहर खोजन जासी ॥२॥
 नग से नाभि में हैं करतूरी, वन वन खोजत बासी ॥३॥
 नग से हीरगुना भाई राधे, सहज मिलै अविनासी ॥४॥

॥ गद्य ३० ॥

अवधु निरंजन जाल परारा ॥ टेक ॥
 स्वर्ग पनाल जीव मृत-मंडल, तीन लोक धिरतारा ।
 ब्रह्मा धिरनु निव प्रगट कियो है, ताहि दियो सिर भारा १
 ठाँव ठाँव तीरथ व्रत धाप्यो, ठगने को संसारा ।
 माया मोह कठिन विस्तारा, आपु भयो करतारा ॥२॥
 नलगुरु सव्द को चान्हत नाहीं, कैसे होय उधारा ।
 जारि भूँजि कौइला करि डारै, फिरि फिरि लै अवतारा ॥३॥
 अमर लोक जहँ पुरुष विराजै, तिन का सूँदा द्वारा ।
 जिन साहब से भये निरंजन, सो तो पुरुष है न्यारा ॥ ४ ॥
 कठिन कान तेँ वाचा चाही, गहो सव्द टकसारा ।
 कहँ कबीर अमर करि राखैँ, मानौ सव्द हमारा ॥५॥

॥ गद्य ३१ ॥

चंदा भक्त कहि यहि घट माहीं । अंधी आँखन सूझै नाहीं १
 यहि घट चंदा यहि घट मूर । यहि घट गाजै अनहद तूर ॥२॥

यहि घट वाजै तबल निसान । बहिरा सब्द सुनै नहिं कान३
जब लग मेरी मेरी करे । तब लग काज न एकै सरै । ४॥
जब मेरी ममता मरि जाय । तब प्रभु काज सँवारै आय॥
जब लगसिंघरहै बनमाँहिं । तब लग वह बन फूलै नाहिं६
उलट स्थार सिंघ को खाय । उकिठा*वन फूलै हरियाय७
ज्ञानके कारण करम कमाय । होय ज्ञान तब करम नत्ताय८
फल कारन फूलै बनराय । फल लागे पर फूल सुखाय॥९॥
मिरग पास कस्तूरी वास । आपुन खोजै खोजै वास॥१०॥
पारै पिंडा*मीन लै खाई । कहैं कयीर लोग वीराई॥११॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुनता नहीं धुन की खबर अनहद का वाजा वाजता ।
रसमंद मंदिर वाजता बाहर सुने तो क्या हुआ ॥१॥
गाँजा अफ़ीम और पोसता भाँग और सराबं पीवता ।
इक प्रेम रस चाखा नहीं अमली हुआ तो क्या हुआ ॥२॥
कासी गया और द्वारिका तीरथ सकल भरमत फिरै ।
गाँठी नखोली कपट की तीरथ गया तो क्या हुआ ॥३॥
पोथी कितायें वाँचता औरों को नित समुभावना ।
त्रिकुटी महल खोजै नहीं बरु बरु नरा तो क्या हुआ ॥४॥
काजी कितायें खोजता करता नसीहत और को ।
महरम नहीं उस हालसे काजी हुआ तो क्या हुआ ॥५॥
सतरंज चौपड़ गंजिफा इक नई है बटरंग की ।
वाजी न लाई प्रेम की खोजा जुआ तो क्या हुआ ॥६॥

जोगी दिगम्बर सेवड़ा कपड़ा रंगे रँग लाल से ।
 ताकिन्हीं नहीं उस रंग से कपड़ा रंगे से क्या हुआ ॥७॥
 मंदिर् भरोखे रावटी गुल चमन में रहते सदा ।
 कहते कवीरा हैं सही घट घट में साहब रमि रहा ॥८॥

॥ शब्द ३३ ॥

जोगिया खेलियो बचाय के, नारि नैन चलैं बान ॥९॥
 मंगी की मिंगी करि डारी, गोरख[†] के लिपटान ॥१॥
 कामदेव महादेव[†] सतावै, कहा कहा करौं बखान ॥२॥

* मंगी ऋषि और महादेव जी को जित २ प्रकार से माया ने छला
 यत्र कथायें मिश्रित अंग के आखिर शब्द की पहली और चौथी कड़ियों
 में मिली हैं ।

† कहते हैं कि गोरखनाथ जोगी वन में तपस्या करते थे । एक रोज़
 माया स्त्री का रूप धारण करके उनके पास आई और कहा मेरे पति
 का जंगल में गोर खा गया अब मैं अकेली वन में डरती हूँ दया करके
 रात को यहाँ रहने दो सुग्रह को मैं चली जाऊँगी । उन्होंने ने कहा
 अच्छा और एक कोठरी में भिवाड़ भीतर से बंद कराके बैठा दिया और
 कह दिया कि अगर मैं भी आकर फूँ कि खोला तौ भी किवाड़ मत
 खोलना । उसने कहा अच्छा—ऋषिजी बैठे भजन करने तो ध्यान में वह
 स्त्री मनमुग आने लगी उसके नक़्श हृदय पर पड़ गया था बार बार
 दर्पी का रूप नज़राई पड़ने लगा, भजन से उठ बैठे, आवाज़ ही कुंडी
 लागे । उसने कहा हम नहीं खोलेंगे तुमने मना किया था । फिर बेचारे
 के काम बंद हो गये कि उत तोड़के कोठे में कूद पड़े । दूसरे रोज़ नदी
 के पार उसके कंधे पर बैठा कर ले जाना पड़ा । उसने खूब एड़ लगाई
 और कहा क्या तूरा घोड़ा था इसके लिये मैंने लोहे की लगाम बनवाई
 थी पर तौ गाय नहीं आता था अब देखो मैं उसके तिर पर सवार हूँ ।
 सुनते ही देगल आया तब माया रूपी स्त्री को छोड़ के भागे ।

आसन छोड़ि मुछंदर* भागे, जल माँ मीन समान ॥३॥
कहैं कवीर सुनो भाई साधो, गुरु चरनन लिपटान ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

तेरे गवने का दिन न गिघाना, सोहा गिनि चेत करौ री । टेक ॥
घालापन तन खेल गँवायौ, तरुनै चाल कुचाल ।
का उत्तर देइहौ रे सजनी, पिय पूछै जत्र हाल ।

समुझ मन का करिहौ री ॥ १ ॥

भवसागर औगाध भँवरवा सूझै वार न पार ।
केहि बिधि पार उतरवौ सजनी, नहिं खेवट नहिं नाथ ।
खेवैया बिन का करिहौ री ॥ २ ॥

सील सुमति की चुनरी पहिरो, सत मति रंग रँगाय ।
ज्ञान तैल सों माँग सँवारौ, निर्भय सेंदुर लाय ।
कपट पट खोल धरौ री ॥ ३ ॥

* मुछन्दरनाथ का जिक्र है कि एक रोज़ किमी ने कहा कि: राज्य का रक्त और आनन्द बड़ा मीठा है मुछन्दरनाथ बोले अच्छा तज़रया करना चाहिये । जोगी गति तो घी ही दूसरी देह में अपने जीव को प्रवेश करने की सागरघ रखते थे, एक राजा मरता था उसकी देह में प्रवेश किया और अपने चले गोरखनाथ को कह दिया कि भोग विलास में अगर हम भूल जावें तो तुम यह मंत्र आके पढ़ना । राजा जो मरता था ठठ खड़ा हुआ, रानी सब सुश हुई । एक बरस उनके संग भोग विलास किया मगर सौफ़ था कि किसी वक्त गोरखनाथ आ जायगा इस लिये हुक्म दिया कि कोई कनकटा जोगी शहर में न आने पावे । राग सुनने का राजा को बड़ा शौक़ था इस लिये गोरखनाथ गाना बजाना सीख कर गाने वालों के संग दरबारमें गये और जब मंत्र पढ़ा तब मुछन्दरनाथ को होश आया—फिर अपने पुराने चोले में आगये ।

पिय घर बेत करी री सजनी, नेहर नाहिं निवाह ।
नेहर नाम कहा ले करिहौ, मरिहौ भर्म भुलाय ।

पुरुष त्रिन का करिहौ री ॥ ४ ॥

मागुम सत्त सद्द निर्वानी, त्रिकुटी संगम ध्यान ।
भ्रिमिल जोत जहं निसु दिन भलकै, तीन वसै इकठाम ।

सुगत दे निरत करौ री ॥ ५ ॥

कहीं कवीर सोई सतवन्ती, पिय के रंग रंगाय ।
गमर लोठ हाथे करि लेइ हैं, तेरो सोहाग सोहाय ।

महल बिएराम करौ री ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

हंसा हंस मिले सुख होई ॥ टंक ॥

इहोना पाँती है वगुलन की कदर न जानै कोई ॥१॥
जा हंसा तोरे प्यास छीर की कूप नीर नहिं होई ।
यह नानीर सकल ममता को हंस तजा जस चोई* ॥ २ ॥
पट दरमन पाखंड छानवे भेष धरे सब कोई ।
चार बरन औ वेद कितावैं हंस निराला होई ॥ ३ ॥
यह जम तीन लोक को राजा वाँधे अख सँजोई ।
नन्द जीत चलो हंस हमारे तब जम रहि है रोई ॥४॥
कहैं कवीर परतीत जान ले जिव नहिं जाय विगोई ।
ले बँटारैं अमर लोक में आवा गवन न होई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

माया महा ठगनी हम जानी ॥ टंक ॥

निगुन फाँसि लियेकर डोलैवोलै मधुरी वानी ॥ १ ॥

*घोर । हथियार को ठीक करके ।

केसव के कमला होइ बैठी सिव के भवन भवानी ॥ २ ॥
 पंडा के मूरत होइ बैठी तीरथ हूं में पानी ॥ ३ ॥
 जोगी के जोगिन होइ बैठी राजा के घर रानी ॥ ४ ॥
 काहू के हीरा होइ बैठी काहू के कौड़ी कानी ॥ ५ ॥
 भक्तन के भक्तिन होय बैठी ब्रह्मा के ब्रह्मानी ॥ ६ ॥
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह सब अकथ कहानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

अवधू अमल करै सो गावै ।

जौं लग अमल असर ना होवै तौं लग प्रेम न आवै ॥ टेक ॥
 बिन खाये फल स्वाद बखानै कहत न सोभा पावै ।
 बिन गुरु ज्ञान गाँठि के हीने नाहक वस्तु मुलावै ॥१॥
 आँधर हाथ लेय कर दीपक करि परकास दिखावै ।
 औरन आगे करै चाँदना आपु अँधेरे धावै ॥ २ ॥
 आँधर आप आँधर दस गोहने जग में गुहं कहावै ।
 मूल महलकी खबर न जानै औरन को भरमावै ॥ ३ ॥
 ले अमृत मूरख रँड सींचै कलप-वृच्छ बिसरावै ।
 लैके बीज जसर में बोवै पाहन पानी नावै ॥ ४ ॥
 लागी आग जरै घर आपन मूरख घूर चुतावै ।
 पढ़ा गुना जो पंडित भूलै वाको को समुभावै ॥५॥
 कहैं कबीर सुनो हो गोरख यह संतन नहिं भावै ।
 है कोई सूर पूर जग माहीं जो यह पद अर्थावै ॥ ६ ॥

साध में । १-पत्थरकी मूरत पर पानी डढ़ता है । २-घर में आग लगी है और घूर पर पानी डालना है ।

॥ शब्द ३८ ॥

तन घर सुखिया कोई न देखा जो देखा सो दुखिया हो ।
 उदय अस्त की बात कहतु हैं सब का किया विवेका हो ॥१॥
 घाटे बाढ़े सब जग दुखिया क्या गिरही वैरागी हो ।
 मुकदेव अचारज दुख के डर से गर्भ से माया त्यागी हो ॥२॥
 जोगी दुखिया जंगम दुखिया तपसी को दुख दूना हो ।
 आमा नृसना सबको ब्यापे कोई महल न सूना हो ॥ ३ ॥
 गांभ कहीं तो कोई न माने झूठ कहा नहिं जाई हो ।
 प्रान्ता पिस्नु महेसुर दुखिया जिन यह राह चलई हो ॥४॥
 अत्रभू दुखिया भूपति दुखिया रंक दुखी विपरीती हो ।
 कहैं कथार मकल जग दुखिया संत सुखी मन जीती हो ॥५॥

॥ शब्द ३९ ॥

मानुष जनम सुधारी साधे धोखे काहे विगाड़ो हो ।
 पैगा ममय बहुर नहिं पैहो जनम जुआ मति हारो हो ॥१॥
 गुड़ा गुड़ी खियाल जिन भूले मूल तत्त लौ लाओ हो ।
 जब लग घट सों परिचे नार्ही तब लग कछु नहिं पाओ हो २
 नीरथ व्रत और जप तप संजम या करनी मत भूले हो ।
 करम फंद में जुग जुग पड़िहो फिर फिर जोनि में फूले हो ॥३॥
 ना कछु न्हायाना कछु धोयाना कछु घंट वजाया हो ।
 ना कछु नेनी ना कछु धोती ना कछु नाचा गाया हो ॥४॥
 मिंगी मेलही भभूत औ बटुआ साँईं स्वाँग से न्यारा हो ।
 कहैं कथोर मुक्ति जो चाहौ मानौ सब्द हमारा हो ॥५॥

* मरुदेव मुनि जो बारह वरम गर्भ में रहे पैदा होते ही जंगल की
 पत्तार के तप में जागे । * मिंगी मुँह से बजाने का थाजा और मेलही नाम
 बाधुओं के पहिरने की मेलामी का है ।

॥ शब्द ४० ॥

जिन के नाम ना है हिये ॥ टेक ॥

क्या होवै गल माला डाले, कहा सुमिरनी लिये ॥१॥
 क्या होवै पुस्तक के बाँचे, कहा संख धुन दिये ॥२॥
 क्या होवै कासी में बसि के, क्या गंगा जल पिये ॥३॥
 होवै कहा वरतके राखे, कहा तिलक सिर दिये ॥४॥
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जाता है जम लिये ॥५॥

॥ शब्द ४१ ॥

साधो पाँडे निपुन कसाई ॥ टेक ॥

बकरी मारि भेड़ि को धाये, दिल में दरद न आई ॥१॥
 करि अखान तिलक दै बैठे, विधि सौं देवि पुजाई ॥२॥
 आत्म मारि पलक में दिनसे, रुधिर की नदी बहाई ॥३॥
 अति पुनीत जँचे कुल कहिये, सभा माहिं अधिकारी ॥४॥
 इन से दिच्छां सय कोइ माँगे, हँसी आवै मोहिं भाई ॥५॥
 पाप कटन को कथा सुनावैं, करम करावैं नीचा ॥६॥
 घूड़त दोऊ परस्पर दीखे, गहे बाँहि जम खींचा ॥७॥
 गाय बधै सो तुरुक कहावै, यह क्या इन से छोटे ॥८॥
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, कलि में ब्राह्मन खोटे ॥९॥

॥ शब्द ४२ ॥

को सिखवै अधमन को ज्ञाना ॥ टेक ॥

साध की संगतकबहुंनकीन्ही, रटत रटतजग जन्म सिराना १
 दयाधर्मकबहुं नहिं चीन्हा, नहिं गुरु सन्द समाना ॥२॥

—जो जगिरे ब्रेस्या राखे, साधू आय तो नहिं बर दाना ॥३॥

—ते जो रजन जमपुर जेहे, मारहि मार उठी घमसाना ॥४॥

॥ ग३३ ४३ ॥

—जो जो कोट करै भरमना ना टरे,

भय जजाल दुख दुन्द भारी ॥ १ ॥

—जो जे जाल में जक्त राव फंसि रहा,

गग की गोरि जम देन डारी ॥ २ ॥

—जान मृषे नहीं राव् बूके नहीं,

मान ओटा नहीं गर्व धारी ॥ ३ ॥

—जो जे जे नहीं भर्म पूजत फिरै,

दिये के नैन क्यो फारि डारी ॥ ४ ॥

—जो जो मग जीव धरि थाप निरजीव को,

जीव के हतन अपराध भारी ॥ ५ ॥

—जो जो ददं वेददं कसके नहीं,

जीम के न्वाद नित जीव मारी ॥ ६ ॥

—जो जो पग टाढ़ कर जोर विनती करै,

गच्छ बल जाउं सरन तिहारी ॥ ७ ॥

—जो जो कटु है नहीं अरज अंधा करै,

कटिन डंडौन नहिं टरत टारो ॥ ८ ॥

—जो जो आकर्म से नर्क पापी पड़े,

हरम चंडाल की राह न्यारी ॥ ९ ॥

—जो जो नैभाग जिन साथ संगत करी,

ज्ञान की दृष्टि लीजै विचारी ॥ १० ॥

सत्त दावा गहौ आपु निर्भय रहौ ।

आपु को चीन्हि लखु नाम सारी ॥११॥

कहैं कव्वीर तू सत्त पर नजर कर ।

बोलता ब्रह्म सब घट उजारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

करौ रे मन वा दिन की ततवीर* ॥ टेक ॥

जब जमराजा आनि पड़ेंगे नेक धरत नहिं धीर ॥१॥
 मुंगरिन मारि के प्रान निकासत नैनन भरि आयो नीर ॥२॥
 भवसागर इक अगम पंथ है नदिया बहत गंभीर ॥३॥
 नाव न बेड़ा लोग घनेरा खेवट है वेपीर ॥४॥
 घर तिरिया अरधंगी बैठी सातु पिता सुत वीर ॥५॥
 माल मुलुक की कौन चलावै संग न जात सरीर ॥६॥
 लै कै चोरत नरक कुंड में व्याकुल होत सरीर ॥७॥
 कहत कवीर नर अब से चेतो माफ होय तकसीर ॥८॥

॥ शब्द ४५ ॥

सुख सिंध की सैर का स्वाद तब पाइ है चाह का
 चौतरा भूलि जावै ।

बीज के माहिं ज्यों बृच्छ विस्तार यों चाह के माहिं
 सब रोग आवै ॥१॥

दृढ़ वैराग में होय आरुढ़ मन चाह के चौतरे आग दीजै ।
 कहैं कव्वीर यों होय निरवासना तत्त सों रत्त होय
 काज कीजै ॥२॥

॥ शब्द ४६ ॥

साधो भाई जीवत ही करो आसा ॥ टेक ॥

जीवत समुझे जीवत बूझे जीवत मुक्ति निवासा ।

जिगत करमकी फाँसि न काटी मुए मुक्ति की आसा ॥१॥

नन कूटे जिव मिलन कहतु है सो सब झूठी आसा ।

आजहुं मिला सो तबहुं मिलैगा नहिं तो जमपुर वासा ॥२॥

दा दूरे दूँडे मन लोभी मितै न गर्भ तरासा ।

साध संत की करे न बंदगी कटै करम की फाँसा ॥३॥

नन गहै सतगुरु को चीन्है सत्त नाम विस्वासा ।

नहँ कवीर साधन हितकारी हम साधन के दासा ॥४॥

॥ शब्द ४७ ॥

आगे समुक्ति परैगा भाई ॥ टेक ॥

चहाँ अहार उद्ग भर खायो बहु विधि मास बढ़ाई ॥१॥

जीव जन्तु रस मार खातु है तनिक दरद नहिं आई ॥२॥

चहँ नो परधन लूटि खातु है गल विच फाँसि लगाई ॥३॥

निन के पीछे तीन पियादा छिन छिन खबर लगाई ॥४॥

साध संत की निंदा कीन्ही आपन जनम नसाई ॥५॥

परग परग पर काँटा धसिहै यह फल आगे आई ॥६॥

कहत कवीर सुनो भाई साधो दुनियाँ है दुचितआई ॥७॥

साँच कहै तो मारा जावै झूठे जग पतियाई ॥८॥

॥ शब्द ४८ ॥

रहना नहिं देस बिराना है ॥ टेक ॥

बड़ गंवार कागद की पुड़िया बूंद पड़े घुल जाना है ॥१॥

यह संसार काँट की झाड़ी उलझ पुलझ मरि जाना है ॥२॥
 यह संसार झाड़ औ भाँखर आग लगे बरि जाना है ॥३॥
 कहत कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु नाम ठिकाना है ॥४॥

॥ शब्द ४८ ॥

घागों ना जा रे ना जा तेरे काया में गुलजार ॥टेक॥
 करनी क्यारी वोड़ कर रहनी करु रखवार ।
 दुर्मति काग उड़ाइ के देखै अजब बहार ॥१॥
 मन माली परबोधिये करि संजम की वार ।
 दया पौद सूखै नहीं छिमा सोंच जल टार ॥२॥
 गुल औ ब्रमन के बीच में फूला अजब गुलाब ।
 मुक्ति कली सतमाल की पहिरु गूंधि गल हार ॥३॥
 अष्ट कमल से ऊपजै लीला अगम अपार ।
 कहैं कबीर चित चेत के आवागवन निवार ॥४॥

॥ शब्द ५० ॥

सुमिरन बिन गोता खावोगे ॥टेक॥

मुट्टी वाँधे गर्भ से आये हाथ पसारे जावोगे ॥१॥
 जैसे मोती फरत ओस के वेर भये भरि जावोगे ॥२॥
 जैसे हाट लगावै हटवा सौदा बिन पछितावोगे ॥३॥
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो सौदा लेकर जावोगे ॥४॥

॥ शब्द ५१ ॥

अरे मन समुझ के लाटु लदनियाँ ॥टेक॥

काहेक टटुवा काहेक पाखर काहेक भरी गौनियाँ ॥१॥

मन के दनुज सुरति के पाखर पुन पाप भरीं गौनियाँ ॥२॥
 — ने लोग जगानी लागे छीन लैयँ करधनियाँ ॥३॥
 मोदा बन् तो यहीं करु भाई आगे हाट न बनियाँ ॥४॥
 पानी पी तो यहीं पी भाई आगे देसनिपनियाँ ॥४॥
 कहीं कबीर मुनो भाई साथो रात नाम का बनियाँ ॥६॥

॥ गन ५२ ॥

निसाने मन भजन बिना दुख पैहो ॥ टेक ॥
 पाँखा जनम भून का पैहो रात जनम पछितैहो ।
 काँटे पर ले पानी पैहो प्यासन ही मरि जैहो ॥१॥
 नृजे जनम गुवा का पैहो याग कसेरा लेहो ।
 दृष्टे पंगव बाज मंडराने अथकड़ प्रान गँवैहो ॥२॥
 बार्जागर के वानर होइहो लकड़िन नाच नचैहो ।
 उंच नीच के हाथ पसरिहो माँगे भीख न पैहो ॥३॥
 नली के घर बैला होइहो आँखिन ढाँप ढपै ही ।
 काम प्रचास घरें में चलिहो वाहर होन न पैहो ॥३॥
 पंचवाँ जनम ऊँट के पैहो बिन तौले बोझ लदैहो ।
 बैठे से तो उठै न पैहो घुरच घुरच मरि जैहो ॥४॥
 धावो घर के गदहा होइहो कटी घास ना पैहो ।
 कादी लादि आपु चढ़ि बैठे ले घाटै पहंचैहो ॥६॥
 पंछी माँ तो कौवा होइहो करर करर गुहरैहो ।
 उड़ि के जाइ मैला पर बैठौ गहिरे चोंच लगैहो ॥७॥
 गन्तनाम की टेर न करिहो मनहीं मन पछितैहो ।
 कहीं कबीर मुनो भाई साथो नरक निसानी पैहो ॥८॥

॥ शब्द ५३ ॥

माल जिन्हों ने जमा किया लीढ़ा परिहारे जाते हैं । टिका
 जँचा नीचा महल बनाया जा बैठे चौचारे हैं ।
 सुयह तलक तो जागे रहना नाम पुकारे जाते हैं ॥१॥
 जग के रस्ते मत चल प्यारे ठग या पार घनेरे हैं ।
 इस नगरी के बीच मुत्ताफिर अक्तर मारे जाते हैं ॥२॥
 भाई बंध और कुटुंब कबीला सब ठग ठग के खाते हैं ।
 आया जम जब दिया नगारा साफ अलग हो जाते हैं ३
 जोरू कौन खसम है किसका कौन किसी के नाते हैं ।
 कहें कयीर जो बँदगी गाफिल काल उन्हीं को खाते हैं ४

॥ शब्द ५४ ॥

साधो यह तन ठाठ तँबूरे का ॥ टेक ॥
 ऐंचत तार मरीरत खूँटी, निकसत राग हजूरे का ॥१॥
 टूटे तार बिखरि गईं खूँटी, हो गया धूरम धूरे का ॥२॥
 या देही को गर्व न कीजै, उड़ि गया हंस तँबूरे का ॥३॥
 कहें कयीर सुनो भाई साधो, अगम पंथ कोइ सूरु का ४

॥ शब्द ५५ ॥

नैहर में दाग लगाय आइ चुनरी ॥ टेक ॥
 ऊ रँगरेजवा कै मरम न जानै,
 नहिं मिलै धोविया कौन करै उजरी ॥ १ ॥
 तन कै कूँड़ी ज्ञान कै सौंदन,
 सायुन महँग बिचाय या नगरी ॥ २ ॥

पहिरि ओढ़ि के चली ससुररिया,
गोंवाँ के लोग कहैं बड़ी फुहरी ॥ ३ ॥

कहैं कबोर सुनो भाई साधो,
बिन सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

अरे इन दूहुन राह न पाई ॥ टेक ॥

हिंदू अपनी करे बड़ाई गागर छुवन न देई ।
वेग्या के पायन तर सोवै यह देखो हिंदुआई ॥ १ ॥
मगलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई ।
माला केगी बेटी ब्याहै घरहिं में करै सगाई ॥ २ ॥
ब्राह्म के डक मुर्दा लाये धोय धाय चढ़वाई ।
नव गमियाँ मिलि जेवन वैठीं घर भर करै बड़ाई ॥ ३ ॥
हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई ।
कहैं करार सुनो भाई साधो कौन राह है जाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

मिपाही मन दूर खेलन मत जाव ॥ टेक ॥

दूर खेलन से मनुआँ दुखित होय, गगन मँडल मठ छाव ॥ १ ॥
बेहि पार गंगा बाहि पार जमुना, बीच सरसुती न्हाव ॥ २ ॥
पाँच को मारि पचीस को वस करि, तीन को पकरि मँगाव ॥ ३ ॥
कहैं कबोरा धरमदास से, सब्द में सुरत लगाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

हर लागै और हाँसी आवै, अजब जमाना आया रे ॥ टेक ॥
धन दौलत लै मालखजाना, बेस्या नाच नचाया रे ॥
मुट्ठी अन्न साथ कोइ माँगै, कहैं नाज नहिं आया रे ॥ १ ॥

कथा होय तहँ खीता खोवैं, वक्ता मूड़ पचाया रे ॥
 होय जहाँ कहिं स्वाँग तमासा, तनिक न नोद सताया रे २
 भंग तमाखू सुलफा गाँजा, सूखा खूब उड़ाया रे ।
 गुरु चरनामृत नेम न धारै, मधुवा चाखन आया रे ॥३॥
 उलटी चलन चलीटुनियाँ में, ता तें जिया घबराया रे ।
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, फिर पाछे प्रछिताया रे ॥४॥

॥ शब्द ५८ ॥

अबधू भजन भेद है न्यारा ॥ तिक ॥

क्या गाये क्या लिखि बतलाये क्या भर्म संसारा ।
 क्या संध्या तर्पन के कीन्हे जो नहिं तन विचारा ॥१॥
 मूड़ मुड़ाये सिर जटा रखाये क्या तन लाये छाग ।
 क्या पूजा पाहन की कीन्हे क्या फल किये अहारा ॥२॥
 जिन परिचे साहित्य हो बैठे विषय करै प्रीताना ॥
 ज्ञान ध्यान का मर्म न जानै वाद करै अहंकारा ॥३॥
 अगम अथाह महा अति गहिरा बीजन खेत निचारा ।
 महा सो ध्यान मगन है बैठे काट करम की छारा ॥४॥
 जिनके सदा अहार अंतर में केवल तत्त विचारा ।
 कहैं कबीर सुनो हो गोरख तारीं सहित परिवारा ॥ ५ ॥

*शराव । राख । कूडा । ईन हिंजी भेषों ने भजन भेद की बीज
 की जो अगम अथाह और महा गहिरा है अपने हृदय-रुपी खेत ने नहीं
 बोया: जिन मच्चे भक्ती ने उने महा अर्थात् मया वर कर्म की मूल की
 काट कर ध्यान में मगन ही बैठे ।

॥ शब्द ६० ॥

अप्रभू अच्छरहूं सौं न्यारा ॥ टेक ॥

ये तुम पवना गगन चढ़ावो करो गुफा में वासा ।
 गगना पवना दोनों विनसैं कहैं गयो जोग तुम्हारा ॥१॥
 गगना गह्वे जोती भलकै पानी मट्टे तारा ।
 गहि मे नीर विनसि मे तारा निकर गयो केहि द्वारा ॥२॥
 मोर पर तारि तुलैची^१ जोगिन तारी लाया ।
 मोर गमेर पर साक उड़ानी कच्चा जोग कमाया ॥३॥
 उमया विनसै पिंगला विनसै विनसै सुखमनि नाड़ी ।
 प्रव उनमृनि की तारी दूटै तत्र कहैं रही तुम्हारी ॥४॥
 पादुन वैराग है भाई अटके मुनिवर जोगी ।
 अच्छर लैं का जम्म बतावै सो है मुक्ति विरोगी ॥५॥
 कह अरु अकह दोऊ तें न्यारा सत्त असत्त के पारा ।
 कहैं कवीर ताहि लिखि जोगी उतरि जाव भवपारा ॥६॥

॥ शब्द ६१ ॥

जव से खबरदार रहे भाई ॥ टेक ॥

सतगुरु दीन्हा माल खजाना राखो जुगत लगाई ।
 पाव ता घटने नहिं पावै दिन दिन बढ़ै सवाई ॥१॥
 छिमा सील की अलफी^१ पहिनै जुगति लँगोट लगाई ।
 दया की टोपी रीर पर दैके और अधिक वनि आई ॥२॥
 दानु पाव गाफिल मत रहना निसि दिन करो कमाई ।
 घट के भीतर चौर लगतु हैं बैठे घात लगाई ॥ ३ ॥

^१करी प्राण । ^२साधुओं का वस्त्र विना बँहोली का ।

तन बंदूक सुमति का सिंगरा प्रीति का गज ठहकाई ।
 सुरति पलीता हर दम सुलगै वस पर राखु चढ़ाई ॥१॥
 बाहर वाला खड़ा सिपाही ज्ञान गम्म अधिकाई ।
 साहब कबीर आदि के अदली हर दम लेत जगाई ॥२॥

॥ शब्द ६२ ॥

साधो देखो जग यौराना ।

साँचि कही ती मारन धावै भूठे जग पतियाना ॥६॥

हिन्दू कहत है राम हमारा सुसलमान रहयाना ।

आपस में दोउ लड़े मरतु हैं मरम कोई नहिं जाना ॥१॥

बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना ।

आतम छोड़ि पपानै पूजैं तिनका धोधा ज्ञाना ॥२॥

आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना ।

पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ बर्त भुलाना ॥ ३ ॥

माला पहिरे टोपी पहिरे छाप तिलक अनुमाना ।

साखी सबदै गावत भूले आतम खबर न जाना ॥४॥

घर घर मंत्र जो देत फिरत है लाया के अभिमाना ।

गुरुवा सहित सिष्य सब यूढ़े अंतकाल पछिताना ॥५॥

बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना ।

करैं मुरीद कबर बतलावैं उनहूं खुदा न जाना ॥६॥

हिन्दू की दया मेहर तुरकन की दोनों घर से भागी ।

वह करैं जियह वो भटका मारैं आग दोऊ घर लागी ॥७॥

या विधि हंसत चलत हैं हमको आप कहावैं लयाना ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो इन में कौन दिवाना ॥८॥

॥ शब्द ६३ ॥

नीचे जिगरा बड़ा अदेसवा मुस्ताफिर जैहौ कौनी ओर । टेका
 मोर ना गहर कहर नर नारी दुड फाटक घनघोर ।
 तुपनी नाक फाटक रोके परिहौ कठिन भिंभोर ॥१॥
 गण नदी अगाड़ी बहती विषम धार जल जोर ।
 ना गननाँ तुम गाफिल सेवौ इहवाँ मोर औ तोर ॥२॥
 निर्गम निग प्रीति करे साहब से नाहिन कठिन कठोर ।
 नाम निग कौथ है राजा बसैं पचीसो चोर ॥ ३ ॥
 ना तपु मथ दुक वमें पच्छिम दिस तारों करो निहोर ।
 नाथे दरद गह तोहि लावे तव पैहौ निज ओर ॥ ४ ॥
 पच्छिम पाछिला पंडा पकड़े पसर मना बटोर ।
 नाथे करीर मुनो भाई साधो तव पैहौ निज ठौर ॥५॥

॥ शब्द ६४ ॥

तथा पाँचों कछु पिर न रहाई, देखत नैन चल्यो जग जाई ॥१॥
 दुख लख पून सबालख नाती, जा रावन घर दिया न वाती ॥
 लंका ना कोट समुद्र सी खाई, जा रावन की खबर न पाई ॥३॥
 राने कै महल रूपे कै छाजा, छोड़ि चले नगरी के राजा ॥४॥
 कोड करौ महल कोड करौ टाटी, उड़ि जाय हंस पड़ी रहै माटी ॥
 आवन संग न जात संगती, कहा भये दल बाँधे हाथी ॥६॥
 कहै करीर अंत की वारी, हाथ फारि ज्यों चला जुवारी ॥७॥

॥ शब्द ६५ ॥

पीले प्याला हो मतवाला,

प्याला नाम अमी रस का रे ॥टेका॥

बालपना सब खेलि गँवाया,

तरुन भया नारी बस का रे ॥१॥

द्विरध भया कफ वाय ने घेरा

खाट पड़ा न जाय खिसका रे ॥ २ ॥

नाभि कँवल विच है कस्तूरी,

जैसे मिरग फिरै वन का रे ॥३॥

बिन सतगुरु इतना दुख पाया,

वैद निले नहिं इस तन का रे ॥ ४ ॥

मातु पिता दंभू सुत लिरिया,

संग नहीं कोइ जाय सका रे ॥ ५ ॥

जब लग जीवै गुरु गुन गा ले,

धन जीवन है दिन दस का रे ॥ ६ ॥

चौरसी जो उवरा चाहै,

छोडु कामिनी का चसका रे ॥७॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो,

नख सिख पूर रहा विप का रे ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

लखै रे कोइ विरला पद निरवान ॥ टेक ॥

तीन लोक में यह जन राजा.

चौथे लोक में नाम निसान ॥ १ ॥

याहि लखत इन्द्रादिक थकि गे

ब्रह्मा थकि गे पढ़त पुरान ॥ २ ॥

गोरखदत्त वशिष्ठ व्यास मुनि,
 सिम्भू थकि ने धरि धरि ध्यान ॥३॥
 कहैं कवीर लखै कोइ विरला,
 जिन पायो सतगुरु कर ज्ञान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

जारीं मैं या जग की चतुराई ॥ टेक ॥
 साँईं को नाम न कवहूं सुमिरै, जिन यह जुगति बताई ॥१॥
 जोरत दाम काम अपने को, हम खैहैं लड़िका विलसाई ॥२॥
 सो धन चोर मूसि लै जावैं, रहा सहा लै जाय जमाई ॥३॥
 यह माया जैसे कलवारिन, मद्य पिलाय राखै वौराई ॥४॥
 डक तो पड़े धूरि में लोटैं, एक कहैं चोखी दे भाई ॥५॥
 नुर नर मुनि माया छलि मारे, पीर पैगम्बर को धरि खाई ॥६॥
 कोइ डक भाग घचे सत संगति, हाथमलै तिनको पछिताई ॥७॥
 कहैं कवीर सुनो भाई साधो, लै फाँसी हमहूं को आई ॥८॥
 गुरु की दया साध की संगति वचिगे अभय निसान बजाई ॥९॥

॥ शब्द ६८ ॥

जियरा जावगे हम जानी ॥ टेक ॥
 पाँच तत्त को वनो है पिंजरा जा में वस्तु विरानी ।
 आवत जावत कोइ न देख्यौ डूवि गयौ धिनु पानी ॥१॥
 राजा जैहैं रानी जैहैं और जैहैं अभिमानी ।
 जोग करंते जोगी जैहैं कथा सुनंते ज्ञानी ॥ २ ॥

पाप पुन की हाट लगी है धरम दंड दरवानी ।
 पाँच सखी मिलि देखन आईं एक से एक सियानी ॥३॥
 चंदौ जैहैं सुरजौ जैहैं जैहैं पवन औ पानी ।
 कहैं कबीर इक भक्त न जैहैं जिनकी मति ठहरानी ॥४॥

॥ शब्द ६८ ॥

मन तू क्यों भूला रे भाई । तेरी सुधि बुधि कहाँ हिराई १
 जैसे पंछी रैन घसेरा वसै चञ्चल में आई ।
 भेर भये सब आपु आपु को जहाँ तहाँ उड़ि जाई ॥२॥
 सुपने में तोहि राज मिल्यो है हाकिम हुकम दुहाई ।
 जागि पड़्यौ तब लाव न लसकर पलक खुले सुधि पाई ३
 मातु पिता बंधू सुत तिरिया ना कोइ सगो संगी ४
 यह तो सब स्वारथ के संगी झूठी लोक बड़ाई ॥५॥
 सागर माहीं लहर उठतु हैं गनिता गनी न जाई ।
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो दरिया लहर समाई ॥६॥

॥ शब्द ९० ॥

मानत नहिं मन मेरा साधो . मानत नहिं मन मेरा रे । टिक
 वार वार मैं कहि समझावौं, जग में जीवन धोरा रे ॥१॥
 या काया कौ गर्व न कीजै, क्या साँवर बधा गोरा रे ॥२॥
 बिना भक्ति तन काम न आवै, कोटि सुगंधि चभेरा रे ॥३॥
 या माया जिनि देखि रे भूलै, क्या हाथी क्या घोड़ा रे ॥४॥
 जोरि जोरि धन बहुत बिगूचे, लाखन कोटि करेरा रे ॥५॥
 दुषिधा दुरमति औ घतुराई, जनम गयौ नर बौरा रे ॥६॥

जजहूं जगनि मिली सत संगति, सतगुरु मान निहोरा रे ॥७॥
तेन उठाड परत भुईं गिरि गिरि, ज्यों बालक बिनकोराँ रे ॥८॥
कहे कवीर चरन चित राखो, ज्यों सूई बिच डोरा रे ॥९॥

॥ शब्द ७१ ॥

अत्रधू माया तजी न जाई ॥ टेक ॥

गिरत तजि के वस्तर बाँधा वस्तर तजि के फेरी ।
तजि का तजि के चेला कीन्हा तहुं मति माया घेरी ॥१॥
जेगि जेठ वाग में अरुभी माहिं रही अरुभाई ।
ग्यारे गे वह छूटे नाहीं कोटिन करै उपाई ॥२॥
काम तजे तें क्रोध न जाई क्रोध तजे तें लोभा ।
लोभ तजे अहंकार न जाई मान बड़ाई सोभा ॥३॥
मन बैगगी माया त्यागी सब्द में सुरत समाई ।
कहें कवीर सुनो भाइ साधो यह गम विरले पाई ॥४॥

॥ शब्द ७२ ॥

नाम भजा सोई जीता जग में, नाम भजा सोई जीतारे ॥ टेक ॥
हाथ मुमिरिनी पेट कतरनी, पढ़ै भागवत गीता रे ।
हिरदय सुदु किया नहिं वीरे, कहत सुनत दिन बीता रे ॥१॥
आन देव की पुजा कीन्ही, गुरु से रहा अमीता रे ।
धन जोवन तेरा यहीं रहैगा, अंत समय चलि रीता रे ॥२॥
बावरिया ने बावर डारी, फंद जाल सब कीता रे ।
कहत कवीर काल आय खैहै, जैसे मृग की चीता रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द १३ ॥

दुलहिन अंगिया काहे न धोवाइं ॥ टेक ॥
 बालपने की नैली अंगिया त्रिपय दाग परि जाई ॥१॥
 बिन धोये पिय रीभूत नाहीं सेज से देत निराई ॥२॥
 सुमिरन ध्यान कै सावुन करि ले सत्तनाम दूरियाई ॥३॥
 दुविधा के बँद खोल ग्रहुरिया* मन कै मूल धोवाइं ॥४॥
 चेत करो तीनों पन वीते अत्र तो गवन नगिचाई ॥५॥
 बालनहार द्वार हैं ठाढ़े अत्र काहे पछिताई ॥६॥
 कहत कबीर सुनीरी बहुरिया चिन अंजन दे जाई ॥७॥

॥ शब्द १४ ॥

नाम सुमिरि पछितायगा ॥ टेक ॥
 पापी जियरा लेभ करतु है आज काल उठि जायगा ॥१॥
 लालच लानी जन्म गँवाया साया भरम भुलायगा ॥२॥
 धन जीवन का गर्वन कीजै कागद ज्यों गलि जायगा ॥३॥
 जग जस आय केसु गहि पटकै ना दिन कछु न बसायगा ४
 सुमिरन भजन दया नहिं कीनी तो मुख चोटा- खायगा ५
 धर्मराय जब लेखा माँगै दया मुख लेके जायगा ॥६॥
 कहत कबीर सुनी भाइ साधे साध संग तरि जायगा ॥७॥

॥ शब्द १५ ॥

अभागा तुम ने नाम न जाना ॥ टेक ॥
 करिके कौल उहाँ से आयौ इहवाँ भरम भुलाना ।
 सत्त नाम बिसराय दियो है मोह मया लिपटाना ॥१॥

मान पिता नुन बंधु कुटुम्बी ओ बहु माल खजाना ।
 मान ता पि जग जम लै चलिहै सब ही होय विगाना ॥२॥
 मान लूठ सेनर लखे सुगना लिपटाना ।
 मान नुन रुई उधियानी फिर पाछे पछिताना ॥३॥
 मानग तोला पाइ कै का करै गुमाना ।
 मान पानी के तुलबुला छिन माहिं त्रिलाना ॥४॥
 मान क ही गुनो भाइ साथे देखे जग वीराना ।
 मान के गये बहुरि नहिं आवी लही जो सत परवाना ॥५॥

॥ शब्द ७६ ॥

मेरी चुनरी में परि गयो दाग पिया ॥ टेक ॥
 पाँच तत्त की बनी चुनरिया सोरह सै वँद लागे जिया ॥१॥
 यह चुनरी मेरे मैके तें आई ससुरे में मनुवाँ खोय दिया ॥२॥
 मनिमलि थोई दाग न छूटे ज्ञान को साबुन लाय पिया ॥३॥
 कहैं कबीर दाग कय छुटि है जय साहव अपनाय लिया ॥४॥

॥ शब्द ७७ ॥

गुरु से लगन कठिन है भाई ।
 लगन लगे विन काज न सरिहै जीव प्रलय होइ जाई ॥टेक॥
 जैसे पपिहा प्यारा वुंद का पिया पिया रटि लाई ।
 प्यासे ग्रान तलफ दिन राती और नीर ना भाई ॥२॥
 जैसे मिरगा चन्द सनेही सवद सुनन की जाई ।
 सवद सुनै औ ग्रान दान दे तनिकी नाहिं डेराई ॥३॥

जैसे सती चढ़ी सत ऊपर प्रिय की राह नन भाई ।
 पावक देखे डरे वह नाहीं हैंसत बैठ सरा नई ॥३॥
 दो दल सन्मुख आन जुड़े हैं सूरालेत लड़ाई ।
 ठूक ठूक होइ गिरे धरति पर खेत छोड़ि नहिं जाई ॥४॥
 छोड़ा तन अपने की आसा निर्भय हूँ गुन गाई ।
 कहत कबीर सुनो भाइ साधो नाहिं तो जनम नसाई ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

मेरा तेरा मनुआँ कैसे इक होइ रे ॥ टेक ॥
 मैं कहता हूँ आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी ।
 मैं कहता सुरक्षावन हारी, तू राखयो उरक्षाइ रे ॥ १ ॥
 मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है मोड़ रे ।
 मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाना है मोहि रे ॥ २ ॥
 जुगन जुगन समुक्षावत हारा, कही न मानत कोइ रे ।
 तू तो रंडी फिरै त्रिहंडी, सब धन हारे खोइ रे ॥ ३ ॥
 सतगुरु धारा निर्मल वाहै, वा में काया धोइ रे ।
 कहत कबीर सुनो भाइ साधो, तब ही वैसा होइ रे ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

अवधू अंध कूप अँधियारा ॥ टेक ॥
 या घट भीतर सात समुंदर याहि में नदो नारा ॥१॥
 या घट भीतर कासी द्वारिका याहि में ठाकुरद्वारा ॥२॥

जाग भीतर चंद्र सूर है याहि में नौलख तारा ॥३॥
 जे नवीर सुनो भाइ साधो याहि में सत करतारा ॥४॥

॥ शब्द ८० ॥

जाग नी पेरी सुभत सोहागिन जाग री ॥टेक॥
 जा तुम सोवन मोह नींद में उठिके भजनियाँ में लाग री ॥१॥
 जा जो धर सुनो सरवन दै उठत मधुर धुन राग री ॥२॥
 जा जो जोगि रीम चरनन दै भक्ति अचल चर माँग री ॥३॥
 जा जो नवीर सुनो भाइ साधो जगत पीठ दै भाग री ॥४॥

॥ शब्द ८१ ॥

भजा हो सतगुरु नाम उरी ॥ टेक ॥

जग नम साधन कबहु नहिं लागत खर्चत ना गठरी ॥१॥
 जंपति मंनति सुख के कारन या सों भूल परी ॥२॥
 जेहि मुख सत्त नाम नहिं निकसत सो मुख धूरि परी ॥३॥
 कहत कबीर सुनो भाइ साधो गुरु चरनन सुधरी ॥४॥

॥ शब्द ८२ ॥

अवधू भूले को घर लावै, सो जन हस को भावै ॥टेक॥
 घर में जोग भोग घर ही में, घर तजि वन नहिं जावै ।
 वन के गवे कल्पना उपजै, तत्र धीं कहाँ समावै ॥१॥
 घर में जुक्ति मुक्ति घर ही में, जो गुरु अलख लखावै ।
 सहज सुन्न में रहै समाना, सहज समाधि लगावै ॥२॥

रामुने रौं उरु के बनें उरु उरु के उरु
 उरु उरु के उरु उरु के उरु उरु के उरु
 उरु के उरु उरु के उरु है, उरु के उरु उरु के
 कहीं कहीं उरु के उरु के उरु के उरु के

। २३ ।

को जानै बात परये मन की । टिके ।

रात अंधेरी चोरा डाँटै आस लगाये नराये मन को ॥१॥
 आँधर निरग बने वन डोलै लागो वान खबर ना तन की ॥२॥
 महा मोह की नोंद परी है चुनरी लेगा सुहागिल तन की ॥३॥
 कहीं कहीं सुनी जाइ साथी गुरु जाने हैं पराये मन की ॥४॥

॥ २३ ॥

समुझ नर मूढ़ विगारी रे ॥ टिके ॥

आया लाहा कारने, तैं क्यो पंजी हारी रे ॥१॥
 गर्भ वास विनती करी, सो तैं आन विसारी रे ॥२॥
 माया देख नू भूलिया, और सुन्दर नारी रे ॥३॥
 वड़े साह आगे गये, ओछा व्योपारी रे ॥४॥
 लौंग सुपारी छाँड़ि के, क्यो लाठी खारी रे ॥५॥
 तीरथ धरत में भटकता, नहिं तन विचारी रे ॥६॥
 आन देव को पूजना, नेरी होगी म्बारी रे ॥७॥

—तू तारा तारा ले चला, करि पल्ला भारी रे ॥८॥

—ते तारा जग में चला, जैरो हारा ज्वारी रे ॥९॥

॥ शब्द ८५ ॥

मेरी मिलि मंगल गाओ मेरी राजनी, भई प्रभात*

मेरी गउँ रजनी ॥१॥

—तू तारा हारा हीन भेना, सतगुरु सब्द संभुक्त ले सैना ॥२॥

—तू तारा गी गगतर्गगलाओ, तब हंसा अपना घर पाओ ॥३॥

—तू तारा निमंत्र फूली फुलवारी, मनसा मारि करी रखवारी ॥४॥

—तू तारा गींच अमृत फल लागा, पावैगा कोइ संत सुभागा ॥५॥

—तू तारा कर्वाण गूंगे की सैना, अमी महा रस भाँकै नैना ॥६॥

॥ शब्द ८६ ॥

राचमुच खेल ले मैदाना ॥ टंक ॥

सब्द गुरु को दृढ़ करि बाँधी, सुरति की खींच कमाना ।

कड़ाचीन करु मन को बस करि, मारो मोह निदाना ॥१॥

एनका फरी ज्ञान का गदका, बाँधि मरहटी वाना ।

जनमुख जाय लड़ै जो कोइ, वही सूर मरदाना ॥२॥

संज्ञक ध्यान ज्ञान की पही, प्रेम बरूद खजाना ।

भरि भरि तोप कड़ाभड़ मारो, लूटो मुलुक विगाना ॥३॥

कहँ कवीर नुनो भाइ साधो, प्रेम में ही मस्ताना ।

अमर लोकर में डेरा दे करि, सतगुरु हना ॥ निसाना ॥४॥

॥ शब्द ८३ ॥

भजु मन नाम उमिर रहि धोड़ी ॥ टेक ॥
 चारि जने मिलि लेन को आये लिये काठ की घोड़ी ।
 जोरि लकड़िया फूंक अस दीनो जस वृंदावन की होरी ॥१॥
 सीस महल के दस दरवाजे आन काल ने घेरी ।
 आगर तोड़ी नागर तोड़ी निकसे प्रान खुपड़िया फोड़ी ॥२॥
 पाठी पकरि वाकी माता रोवै बहियाँ पकरि सग भांडं ।
 लट छिटकायेतिरिया रोवै धिद्युरत है मेरी हंस की जोड़ी ॥३॥
 सत्तनाम का सुमिरन करि ले बाँध गाँठ नू पोढ़ी ।
 कहत कबीर सुनो भाइ साधो जिन जोड़ी निन तोड़ी ॥४॥

॥ शब्द ८४ ॥

अरे मन मूरख खेतीवान, जतन दिन मिरगन रोन
 उजाड़ा ॥ टेक ॥
 पाँच मिरग पञ्चीस मिरगनी, ता में एक निंगारा ॥
 अपने अपने रस के भोगी, चरत फिरें न्यारा न्यारा ॥१॥
 काम क्रोध दुइ मुख मिरम हैं, नित उठि चरत सवारा ॥
 मारे मरें टरें नहिं टारे, विड़वत नाहिं धिडारा ॥२॥
 अति परचंड महा दुख दारुन, वेद साख पचि हारा ।
 प्रेम वान लै चढ़यो पारधी भाव भक्ति करि मारा ॥३॥
 सत की वेड़ धर्म की खाई गुरु कै सज्ज रखारा ॥
 कहें कबीर चरत नहिं पावैं अघ की वार सम्हारा ॥४॥

नील बाला, स्वदेरी । : हाँकने से । धिक्कारी । चारदीवारी । रखवारा ।

॥ शब्द ८९ ॥

ना जानें तेरा साहब कैसा है ॥ टंक ॥

मन्त्रिज भीतर मुझा पुकारे, क्या साहब तेरा बहिरा है ।
 नितानी के पग नेत्र बाजे, सो भी साहब सुनता है ॥१॥
 काना लोच के आसन गारे, लम्बी माला जपता है ।
 लपटि के लपट कनरनी, सो भी साहब लखता है ॥२॥
 कान नीला महल बनाया, गहिरी नेत्र जमाता है ।
 काने का मनपृथा नाहीं, रहने को मन करता है ॥३॥
 गोप छोटी माया जोड़ी, गाड़ि जमीं में धरता है ।
 तिम लहना है सो लै जैहे, पापी बहि बहि मरता है ॥४॥
 ननवर्गी के गजा मिलै नहिं, विरुया पहिरे खासा है ।
 जेहि घर माथू भीख न पावै, भडुवा खात बतासा है ॥५॥
 हीरा पाय परख नहिं जानै, कौड़ी परखन करता है ।
 कहन करवार सुनो भाइ साधो, हरि जैसे को तैसा है ॥६॥

॥ शब्द ९० ॥

मुखड़ा क्या देखै दर्पन में, तेरे दया धरम नहिं तन में ॥ टंक ॥
 आम की डार कोइलिया बोलै, सुवना बोलै वन में ।
 घरचारी तो घर में राजी, फक्कड़ राजी वन में ॥१॥
 पेंही धोती पाग लपेटी, तेल चुआ जुलफन में ।
 गली गली की सखी रिफाई, दाग लगाया तन में ॥२॥
 पाथर की डक नाव बनाई, उतरा चाहे छिन में ।
 कहन करवार सुनो भाइ साधो, वे क्या चढ़ेंगे रन में ॥३॥

॥ गळ ९१ ॥

करम गति टारे नाहिं तरी ॥टिक॥

मुनि वसिष्ठ से पंडित ज्ञानी सोथ के लगन धरी ।

सीता हरन मरन दसरथ को वन में विपति परी ॥१॥

कहँ वह फंद कहाँ वह पारधी कहँ वह मिरग चरी ।

सीता को हरि लेगयो रावन सीने की लंक जरी ॥ २ ॥

नीच हाथ हरिचन्द्र विकाने यलि पाताल धरी ।

कोटि गाय नित पुन करत नृग गिरगिट जोनि परी ॥३॥

रामचंद्रजी का वनोवास, उन के पिता दशरथ का लक्ष्मण विभीषण में प्राण तजना, मारीचको मृगा बना कर राजन का पीना, जो लुग ले जाना और फिर रामचंद्र का रावन को मारना और मारा पीना यह कथा प्रायः सब लोग जानते हैं ।

शिकारी ।

राजा हरिश्चन्द्र भारी दानी और सत्यवादी थे जिन्होंने विद्वान्मित्रों को अपना सब राज पाट यज्ञ की दक्षिणा में दे दिया उस पर मुनि जी ने तीन भार सोना दान-प्रतिष्ठा का अपना और गिनाया । राजा हरिश्चन्द्र ने उस के लिये काशी में जाकर अपने दो एक छोन्ड़े के हाथ और अपनी स्त्री और पुत्र को एक ब्राह्मण के हाथ देकर मुनि जी को संतुष्ट किया ।

राजा बलि बड़े प्रतापी और दानी थे जिन के द्वारे पर आप भगवान् बौना का भेष धर कर तीन परग पृथ्वी माँगने गये उद राजा बलि ने संकल्प कर दिया तब भगवान् ने वैराट रूप धारण करके एक परग में स्वर्गादिक और एक में सारी पृथ्वी नाप ली और कहा कि अब दानी तीसरा परग देव । राजा ने अपना शरीर भेंट किया जिने तीनरे परग से नाप कर भगवान् ने उन्हें अमर करके पाताल का राज दिया ।

राजा नृग राज एक लाख गऊ दान दिया करते थे एक बार कोई गऊ जो पहिठे दिन दान हो चुकी थी नर गदवो में जा मिली और

राजा जिन के उरु सारथी तिन पर विपति परी ।
 -गनीमान को गर्व घटायो जदु कुल नास करी ॥ ४ ॥
 राजा जिन को धानु नन्दरा विधि संजोग परी ।
 -गनीमान गुनो भाउ राधो होनी होके रही ॥५॥

भेल् बानी

॥ गद्य १ ॥

राजा एक आपु गत्र मारी ।
 राजा रामभरम है किरुम ज्यों दर्पन में छाहीं ॥ टेक ।
 राजा गंग जिमि जल तें उपजै फिर जल माहिं रहाई ।
 राजा भाँड़ें पाँच तत्त की बिनसे कहाँ समाई ॥ १ ॥

राजा ने उने अनजान में दूसरे ब्राह्मण को सदल्प कर दिया । इस पर पट्टिले और दूसरे दिन के दान पाने वाले ब्राह्मणों में झगड़ा सचा और दोनों राजा के पास न्याय को गये । दोनों वही गऊ लेने पर हठ करते थे उन लिये राजा की बुद्धि चकराई और सोच में पड़ कर दोनों की दर्शन पर गिर हिला देते । इस पर उन ब्राह्मणों ने सराज दिया कि तुम गिरगिट की तरह मिर हिलाते हो वही वन जावगे । इस लिये राजा दग सरने पर गिरगिट की जौनि पाकर एक अंधे कुए में पड़े हुए थे तब कृष्णाक्षतार हुआ तब श्रीकृष्ण ने उन को तारा ।

पाण्डवों के रथ पर श्रीकृष्ण महाभारत की लड़ाई में आप सारथी बने और दुरजोधन का घनंड तोड़ा और कौरवों के कुल का और परम धर्म विधारे के पहिले अपने जदु कुल का भी नाश किया । पाण्डवों पर यह विपति पड़ी थी कि अपना सब राज पाट अपनी स्त्री द्रौपदी गदिये और दो के हाथ गुण में हार गये और सुदृत तक बनेवास में दृष्ट करवा ।

या विधि सदा देह गति सब की या विधि ननहिं विचारो ।
 आया होय न्याव करि न्यारो परम तत्व निरदारो ॥२॥
 सहजै रहे समाय सहज में ना कहुं आय न जावै ।
 धरै न ध्यान करै नहिं जप तप राम रहीस न गावै ॥३॥
 तीरथ बर्त सकल परित्यागै सुन्न डोरि नहिं लावै ।
 यह धोखा जब समुक्ति परै तब पूजै काहि पुजावै ॥४॥
 जोग जुगत तें भरम न छूटै जब लग आप न सूझै ।
 कहैं कबीर सोइ सतगुरु पूरा जो कोइ समुझै ठूझै ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

साधो एक रूप सब माहीं ।
 अपने मनहिं विचारि के देखे और दूजरो नाहीं ॥ टिक ॥
 एकै तुच्छा रुधिर पुनि एकै विप्र सूद्र के माहीं ।
 कहीं नारि कहिं नर होइ वोलैं गैब पुरुष यह आहीं ॥१॥
 आपै गुरु होय मंत्र देत हैं सिप होय तब सुनाहीं ।
 जो जस गहै लहै तस मारग तिन के सतगुरु आहीं ॥२॥
 सब्द पुकार सत्त में भापैँ अंतर राखैँ नाहीं ।
 कहैं कबीर ज्ञान जेहि निर्मल चिरले ताहि लखाहीं ॥३॥

॥ शब्द ३ ॥

साधो को है कहैं से आयो ॥ टिक ।
 खात पिबत को बोलत डोलत ज को अंत न पायो ।
 केहि के मन धौं कहां ब्रह्म है को धैनाच नचायो ॥१॥

प्राणक सर्व अंग काठहिं में को घाँ डहकि जगायो ।
 हेइ गयो खाक तेज पुनि वा को कहु घाँ कहाँ समायो ॥२॥
 भानु प्रकास कूप जल पूरन दृष्टि दरस जो पायो ।
 आभा करग अंत कछु नाहीं जोति खींचि ले आयो ॥३॥
 अहे अपार पार कछु नाहीं सतगुरु जिन्हें लखायो ।
 कहें कवीर जेहि सूक्त बूक्त जस तेइ तस भाष सुनायो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

गाथो राहजे काया सोधो ।
 करना आप आपु में करता लख मन को परमोधो ॥ टेक ॥
 जैसे बट का बीज ताहि में पत्र फूल फल छाया ।
 काया महुे बुन्द विराजे बुन्दै महुे काया ॥ १ ॥
 अग्नि पवन पानी पिरथी नभ ता दिन मेला नाहीं ।
 काजी पंडित करो निवेरा का के साँईं न माहीं ॥ २ ॥
 साँचे नाम अगल की आसा है वाही में साँचा ।
 करना बीज लिखे है खेतै त्रिगुन तीन तत पाँचा ॥ ३ ॥
 जल भरि कुम्भ जलै विच धरिया बाहर भीतर साँई ।
 उन को नाम कहन को नाहीं दूजा धोखा होई ॥ ४ ॥
 कठिन पंथ सतगुरु को मिलना खोजत खोजत पाया ।
 उर लग खोज मिठी जब दुविधा ना कहुं गया न आया ॥५॥
 कहें कवीर मुने भाइ साधो सत्त शब्द निज सारा ।
 आपा महुे आपै बोले आपै सिरजनहारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

साधो दुविधा कहँ से आई ।
 नाना भाव त्रिचार करतु है कौने मतिहिं चोराई ॥ टेक ॥
 ऋग कहै निराकार निरलेपी अगम अगोचर साँई ।
 आवै न जाय मरै नहिं जीवै रूप बरन ऋशु नाहीं ॥१॥
 जजुर कहै सरगुन परमेसर दस औतार धराया ।
 गोपिन के संग रहस रचो है सोई पुरानन गाया ॥२॥
 साम कहै वह ब्रह्म अखंडित और न दूजा कोई ।
 आपै अपरम अवगति कहिये सत्त पदारथ सोई ॥३॥
 अथरवन कहै परो पथ दीसै सत्त पदारथ नाहीं ।
 जे जे गये बहुरि नहिं आये मरि मरि कहाँ समाहीं ॥४॥
 यह परमान सभन कै लीन्हा ज्यों अंधरन को हाथी ।
 अछै बाप की खबर न जानी पुत्र हुता नहिं सार्थी ॥५॥
 जा प्रकार अँधरे को हाथी या विधि वेद बखानै ।
 अपनी अपनी सब कोइ भापै का को ध्यानहिं ठानै ॥६॥
 साँच अहै अँधरे को हाथी श्रौ साँचे हैं लगर ।
 हाथ की टोई सापि कहतु हैं हैं आँखिन के अँधरे ॥७॥
 सव्द अतीत सव्द सो अपना वृक्षै बिरला कोई ।
 कहैं कबीर सतगुरु की सैना आप भिटे तब सोई ॥८॥

॥ शब्द ६ ॥

सार सव्द गहि वाचिहौ मानौ इतयारा ॥ १ ॥
 सत्तपुरुष अछै बिरिछ निरंजन डारा ॥ २ ॥

तीन देव साखा भये पाती संसारा ॥ ३ ॥
 ब्रह्मा वेद सही किया सिव जोग पसारा ॥ ४ ॥
 विष्णु माया परगट किया उरले' व्योहारा ॥ ५ ॥
 निरदेवा व्याधा, भये लिये विप कर चारा ॥ ६ ॥
 कर्म की बंसी डारि के फाँसा संसारा ॥ ७ ॥
 जीनि गरुपी हाकिमा जिन अमल पसारा ॥ ८ ॥
 तीन लोक दरहूँ दिसा जम रोके द्वारा ॥ ९ ॥
 अमर मिटावों ताहि को पठवों भव पारा ॥ १० ॥
 कहैं कवीर अमर करैं जो होय हमारा ॥ ११ ॥

॥ गद्य ७ ॥

महारम हाय रोा जानै साथे ऐसा देस हमारा ॥ टेक
 वेद कनेय पार नहिं पावत कहन सुनन सों न्यारा ।
 जानि वरन कुल किरिया नाहीं संध्या नेम अचारा ॥१॥
 विन जल बूंद परत जहँ भारी नहिं मीठा नहि खारा ।
 मुन्न महल में नौवन वाजै किंगरी चीन सितारा ॥२॥
 विन दादर जहँ विजुरी चमकै विन सूरज उँजियारा ।
 दिना सीप जहँ मोती उपजै विन सुर सव्य उचारा ॥३॥
 जीनि लजाय ब्रह्म जहँ दरसै आगे अगम अपारा ।
 कहैं कवीर बहँ रहनि हमारी बूझै गुरुमुख प्यारा ॥४॥

* पहिला † चिड़ीमार ।

॥ शब्द ८ ॥

अवधू त्रेगम देस हमारा ॥ टेक ॥

राजा रंक फकीर वादसा सब से कहैं पुकारा ।
 जो तुम चाहत अहौ परम पद बसिहो देस हमारा ॥१॥
 जो तुम आये भूनि होइ के तजो मनी को भारा ।
 ऐसी रहनिरहो रे गोरख सहज उतरि जाव पारा ॥२॥
 धरनि अकास गगन कछु नाहीं नहीं चंद्र नहिं तारा ।
 सत्तनाम की हैं महतायें साहब के दरबारा ॥३॥
 बचना चाहो कठिन काल से गहो सद्य टकनारा ।
 कहैं कबीर सुनो हो गोरख सत्तनाम है सारा ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

जहवाँ से आयो अमर वह देसवा ॥ टेक ॥

पानी न पौन न धरती अकसवा ।

चाँद न सूर न रैन दिवसवा ॥ १ ॥

वाम्हन छत्री न सूद्र वैसवा ।

मुगल पठान न सैयद सेखवा ॥ २ ॥

आदि जाति नहिं गौर गनेसवा ।

ब्रह्मा विस्तु महेस न सेसवा ॥ ३ ॥

जागी न जंगम मुनि दुरवेसवा ।

आदि न अन्त न काल कलेसवा ॥ ४ ॥

१ गोरखनाथ जागी जो कबीर साहब के समय में थे ।

दास कबीर ले आये संदेसवा ।

सार सव्द गहि चलौ वहि देसवा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

मातिया वरसै रौरे देसवाँ दित राती ॥ टेक ॥

मुरली सव्द सुन मन आनंद भयो, जोति वरै विनु वाती ।
विना मूल के कमल प्रगट भयो, फुलवा फुलत भाँती भाँती १
जैरी चकोर चन्द्रमा चितवै, जैसे चातुक स्वाँती ।
तैसे रांत सुरति के होइके, होइगे जनम संघाती ॥२॥
या जग में बहु ठग लागतु हैं, पर धन हरत न डेराती ।
कहैं कबीर जतन करो राधो, सत्तगुरू की थाथी ॥३॥

॥ शब्द ११ ॥

नैहरवा हमकाँ नहिं भावै ॥ टेक ॥

साँड़ं की नगरी परम अति सुन्दर जहँ कोइ जाय न आवै ।
चाँद सुरज जहँ पवन न पानी को संदेस पहुंचावै,
दरद यह साँड़ं को सुनावै ॥ १ ॥
आगे चलौं पंथ नहिं सूझै पीछे दोष लगावै ।
केहि विधिससुरे जावें मोरी सजनी विरहा जोर जनावै,
विपै रस नाच नचावै ॥ २ ॥
विन सतगुरु अपनो नहिं कोई जो यह राह बतावै,
कहन कबीर सुनो भाइ साधो सपने न प्रीतम पावै,
तपन यह जिय की बुझावै ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गगन मठ गैव निसान गड़े ॥ टेक ॥

गुदा* में मेख सेस सिर ऊपर डेरा अचल खड़े ॥ १ ॥
 चंद्रहार चंद्रवा जहँ टाँगे मुक्ता मनिक्क मड़े ॥ २ ॥
 महिमा तासु देख मन थिर करि रविससि जोति जड़े ॥ ३ ॥
 रहत हजूर पूर पद सेवत समरथ ज्ञान बड़े ॥ ४ ॥
 संत सिपाही करै चाकरी तेहि दरवार अड़े ॥ ५ ॥
 बिना नगाड़े नौवत वाजै अनहद सद्द भरे ॥ ६ ॥
 कहैं कवीर पियै जोई जन माता' फिरन मरे ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

वा घर की सुध कोइ न बतावै, जा घर से

जिध आया हो ॥ टेक ॥

धरती अकास पवन नहिं पानी, नाहीं तब आदि माया हो ॥ १ ॥
 ब्रह्मा बिस्नु महेस नहीं तब, जीव कहाँ से आया हो ॥ २ ॥
 पानी पवन कै दहिया जमायो, अगिन कै

जामत दीन्हा हो ॥ ३ ॥

चाँद सुरज दोउ बने अहीरा, मधि दहिया

घिउ काढ़ा हो ॥ ४ ॥

यह मनसा माया के लोभी वारवार पछिताया हो ॥ ५ ॥
 लख नहिं परै नाम साहब का, फिर फिर

भटका खाया हो ॥ ६ ॥

कहैं कवीर सुनो भाइ साधो, वह घर चिरले पाया हो ॥ ७ ॥

* कानी में ठेठ हिंदी शब्द गुदा का लिखा है । † मन्म ।

॥ शब्द १४ ॥

गगन घटा घहरानी साधो, गगन घटा घहरानी ॥टेक॥
 पूरन टिमि से उठी बदरिया, रिमक्तिम बरसत पानी
 आपन आपन मेंडि सभारो, बहो जात यह पानी ॥१॥
 मन के पैल गुरति हरवाहा, जोत खेत निर्वानी ।
 दधिभा दूध छोल कर वाहर, बोवो नाम की धानी ॥२॥
 जाग जुक्ति करि कर रखवारी, चर न जाय मृग धानी
 बार्ता भार कूटि घर लावै, सोई कुसल किसानी ॥ ३ ॥
 पाँच सखी मिलि कीन्ह रसोइयाँ, एक से एक सयानी
 दृनों धार वरावर परसे, जेवें मुनि अरु ज्ञानी ॥ ४ ॥
 कहें कवीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निर्वानी ।
 जो यह पद को परचा पावै, ता को नाम विज्ञानी ॥५॥

॥ शब्द १५ ॥

भीनी भीनी बीनी चदरिया ॥ टेक ॥
 काहे कै ताना काहे कै भरनी कौने तार से बीनी
 चदरिया ॥ १ ॥
 डँगला पिंगला ताना भरनी सुखमन तार से बीनी
 चदरिया ॥ २ ॥
 आठ कँवल दल चरखा डोलै पाँच तत्त गुन तीनी
 चदरिया ॥ ३ ॥
 साँडें को सियत मास दस लागे ठोक ठोक के बीनी

सो घादर सुर नर मुनि ओढ़िन ओढ़ि के मैली कनीनी
चदरिया ॥ ५ ॥

दास कवीर जतन से ओढ़िन ज्यों के त्यां धर दीनी
चदरिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

फल मीठा पै जँचा तरवर कौनि जनन करि लीजै ।
नेक[†] निचोड़ सुधारस वा को कौनि जुगति सों पीजै ॥१॥
पेड़ थिकट[‡] है महा सिलसिला[§], अगह गह्यो नहिं जावै ।
तन मन डारि चढ़ै सरधा सों, तय वा फल को खावै ॥२॥
बहुतक लोग चढ़े विन भेदैं, देखी देखा चाँहीं ।
रपटि पाँव गिरि परे अधर तें, आड़ परे भुड़ जाहीं ॥३॥
सत्त सव्द के खूटे धरि पग, धरि गुरु-ज्ञानहिं टोरा ।
कहैं कवीर सुनो भाइ साधो, तय वा फल को तोरा ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

मुनियाँ पिंजड़े वाली ना. तेरो सनगुरु है वेवपारी । टेरु
पाँच तत्त का घना पिंजड़ा. तामें रहती मुनियाँ ।
उड़ि के मुनियाँ डार पै वैठी, कींखन लगी सारी दुनियाँ ।
अलग डार पर वैठी मुनियों. पिचे प्रेम रस छूटी ।
क्या करिहै जतराज तिहारो, नाम कहन तन छूटी ॥२॥
मुनियाँ की गति मुनियाँ जानै. और कहैं सदा छूटी ।
कहैं कवीर सुनो भाइ साधो. गुरु चरनन की भूटी ॥३॥

† वेड़ । ‡ घोड़ा ल । § छठिन. अड़यड । ¶ पिंजड़ाने वाला ।

॥ शब्द १८ ॥

पिया ऊँची रे अटरिया तोरी देखन चली ॥ टेक ॥
 ऊँची अटरिया जरद किनरिया, लगी नाम की डोरी ।
 चाँद सुरज सम दियना वरतु है, ता बिच भूली डगरिया ॥१॥
 पाँच पचीस तीन घर बनियाँ, मनुवाँ है चौधरिया ।
 मुन्सी है कुतवाल ज्ञान को, चहुं दिस लागी बजरिया ॥२॥
 आठ मरातिव दस दर्वाजा, नौ में लगीं किवरिया ।
 गिरकी बैठ गोरी चितवन लागी, उपराँ भ्राँप भ्राँपरिया ३
 कहत कवीर सुनो भाइ साधो, गुरुके चरन बलिहरिया ।
 गाथ संत मिलि सौदा करि हैं, भौंखै मूरख अनरिया ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

रस गगन गुफा में अजर भरै ॥ टेक ॥

बिन वाजा भनकार उठै जहँ समुक्ति परै जवं ध्यान धरै १
 बिन ताल जहँ कँवल फुलाने तेहि चढ़ि हंसा केल करै ॥२॥
 बिन चंदा उँजियारी दरसै जहँ तहँ हंसा नजर परै ॥३॥
 दमवं द्वारे ताड़ी लागी अलख पुरुष जाके ध्यान धरै ॥४॥
 काल कगल निकट नहिं आवै काम क्रोध मद लोभ जरै ॥५॥
 जुगन जुगन की लृपा बुझानी कर्म भर्म अघ व्याधि टरै ॥६॥
 कहै कवीर सुनो भाइ साधो अमर होय कवहूँ न मरै ॥७॥

॥ शब्द २७ ॥

मुरसिद नैनों वीच नची है।

स्याह सपेद तिलों बिच तारा अवगति अलख रची है। टेका

आँखी मट्टे पाँखी चमकै पाँखी मट्टे द्वारा।

तेहि द्वारे दुर्वीन लगावै उतरै भवजल पारा ॥२॥

सुन्न सहर में वास हमारी तहें सरवंगी जावै।

साहब कवीर सदा के संगी सब्द महल ले आवै ॥३॥

॥ शब्द २९ ॥

सत्त सुकृत सतनाम जक्त जानै नहीं।

बिना प्रेम परतीत कहा मानै नहीं ॥१॥

जीव अनैत संसार न चीन्हत पीव को।

कितना कहु समुझाय चौरासि क जीव को ॥२॥

आगे धाम अखंड सो पद निर्वान है।

भूख नींद वहें नाहिं निअच्छर नाम है ॥३॥

कहैं कवीर पुकारि सुनो मन भावना।

हंसा चलु सतलोक वहरि नहिं आवना ॥४॥

॥ शब्द २९ ॥

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ॥टेका॥

काम क्रोध मद लोभ विसारो, सील संतोष छिमा सत धारो,

मट्ट मँस मिथ्या तजि डारो।

हो ज्ञान घोड़े असवार भ्रम से न्यारा है ॥ १ ॥

चोनी तेनी बस्ती पाओ, आसन पद्म जुगत से लाओ
 कुम्भक कर रेचक करवाओ ।
 पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है ॥२॥
 मृग कंचल दल चतुर बखानो, कलिंग जाप लाल रँग मानो,
 देव गनेस तहें रोपा थानो ।
 ऋष मिथ चँवर दुलारा है ॥३॥
 मातृ चक्र पट दल विस्तारो, ब्रह्म सावित्री रूप निहारो-
 उलटि नागिनी का सिर मारो ।
 तहाँ सव्द ओंकारा है ॥ ४ ॥
 नार्भा अष्ट कंचल दल साजा, सेत सिंघासन विस्तु बिराजा
 हिरिंग जाप तासु मुख गाजा ।
 लक्ष्मी सिव आधारार है ॥ ५ ॥
 द्वादश कंचल हृदय के माहों, जंग गौर सिव ध्यान लगाईं,
 सोहं सव्द तहाँ धुन छाई ।
 गन करैं जैजैकारा है ॥६॥
 द्वा दल कंचल कंठ के माहों, तेहि मथ बसे अविद्या वाई,
 हरि हर ब्रह्मा चँवर दुराई ।
 जहं शृंग नाम उचारा है ॥ ७ ॥
 ना पर कंज कंचल है भाई, बग भौरा दुइ रूप लखाईं
 निज मन करन तहाँ ठकुराईं,
 सो नैनन पिछवारा है ॥ ८ ॥

यस्या और भौरा अर्थात् सेत-श्याम पद ।

कँवलन भेद किया निर्वारा, यह सत्र रचना पिंड मँभारा,
सतसँग कर सतगुरु सिर धारा ।

वह सत नाम उचारा है ॥ ९ ॥

आँख कान मुख वन्द कराओ, अनहद भिंगा सवद सुनाओ,
दोनों तिल इक तार मिलाओ ।

तब देखो गुलजारा है ॥ १० ॥

चंद्र सूर एकै घर लाओ, सुखमन सेनी ध्यान लगाओ,
तिरवेनी के सिंध समाओ ।

भोर उतर चल पारा है ॥ ११ ॥

घंटा संख सुनो धुन दोई, सहस्र कँवल दल जगमग होई,
ता मध करता निरखी सोई ।

वंक नाल धस पारा है ॥ १२ ॥

डाकिनी साकिनी बहु किलकारें, जम किंकर धमं दून हकारें,
सत्तनाम सुन भागें सारे ।

जब सतगुरु नाम उचारा है ॥ १३ ॥

गगनमँडल विच उर्धमुख कुइया, गुरमुख साधू भरभर पीया,
निगुरे प्यास मरे त्रिन कीया ।

जाके हिये अँधियारा है ॥ १४ ॥

त्रिकुटी महल में विद्या सारा, घनहर गरजें वजें नगारा,
लाल वरन सूरज उँजियारा ।

चत्रकँवल मँभार सवद ओंकारा है ॥ १५ ॥

नाथ सोई जिन गह गढ़ लीन्हा, नी दरवाजे परगट चीन्हा,
दसवाँ खोल जाय जिन दीन्हा ।

जहाँ कुफल रहिया मारा है ॥ १६ ॥

जामे सेन गुन है भाई, मान सरोवर पैठी न्हाई,
हंसन मिलि हंसा होइ जाई ।

मिले जो अमी अहारा है ॥ १७ ॥

हिं गी गारग बजै सितारा, अच्छर ब्रह्म सुन्न दरवारा,
द्वादरा भानु हंस उजियारा ।

खट दल कवल मभार सव्द ररंकारा है ॥ १८ ॥

महा गुन्न सिंध्र विपमीघाटी, विनसतगुरु पावै नहिं वाटी
व्याघर' सिंध सरप बहु काटी ।

तह सहज अचिंत पसारा है ॥ १९ ॥

अष्ट दल कवल पारब्रह्म भाई, दहिने द्वादस अचिंत रहाई
बाधें दसदल सहज समाई ।

यां कवलन निरवारा है ॥ २० ॥

पाँच ब्रह्म पाँचो अँड बीनो, पाँच ब्रह्म निःअच्छर चीनो,
चार मुकाम गुप्त तहँ कीनो ।

जा मध बंदीवान पुरुष दरवारा है ॥ २१ ॥

दो परवन के संध निहारो, भँवर गुफा तें संत पुकारो,
हंसा करते केल अपारो ।

तहाँ गुरन दरवारा है ॥ २२ ॥

सहस्र अठासी दीप रचाये, हीरे पत्ते महल जड़ाये,
 मुरली बजत अखंड सदाये,
 तहँ सोहं भनकारा है ॥ २३ ॥

सोहं हृद् तजी जब भाई, सत्त लोक की हृद् पुनि आई,
 उठत सुगंध महा अधिक्राई,
 जा को वार न पारा है ॥ २४ ॥

पोड़स भानु हंस को रूपा, बीना सत धुन बजै अनूपा,
 हंसा करत चँवर सिर भूपा ।
 सत्त पुरुष दरबारा है ॥ २५ ॥

कोटिन भानु उदय जो होई, एते ही पुनि चंद्र लखोई,
 पुरुष रोम सम एक न होई ।
 ऐसा पुरुष दीदारा है ॥ २६ ॥

आगे अलख लोक है भाई, अलख पुरुष की तहँ टकुराई,
 अरबन सूर रोम सम नाही ।
 ऐसा अलख निहारा है ॥ २७ ॥

ता पर अगम महल इक साजा, अगम पुरुष ताहि को राजा,
 खरबन सूर रोम इक लाजा ।
 ऐसा अगम अपारा है ॥ २८ ॥

ता पर अकह लोक है भाई, पुरुष अनामी तहाँ रहाई,
 जो पहुँचा जानेगा वाही ।
 कहन सुनन तें न्यारा है ॥ २९ ॥

जग्य भेद किया निर्वाण, यह सब रचना पिंड मँभारा,
माया अवगति जाल पसारा ।

सो कारीगर भारा है ॥ ३० ॥

आदि माया कीन्ही चतुराई, झूठी वाजी पिंड दिखाई,
अवगति* रचन रची अँड माहीं ।

ता का प्रतिबिंब डारा है ॥ ३१ ॥

मग्द त्रिहंगम चाल हमारी, कहैं कबीर सतगुर दर्ई तारी,
सुले कपाट सब्द भनकारी ।

पिंड अँड के पार सो देस हमारा है ॥ ३२ ॥

॥ शब्द २३ ॥

कर नैनां दीदार यह पिंड से न्यारा है, तू हिरदय सोच
विचार यह अँड मँभारा है ॥ टेक ॥

चारी जारी^१ निंदा चारी, मिथ्या तज सतगुरु सिर धारो,
सतसंग कर सत नाम उचारो, तब सनभुख लहो दीदारा
है ॥ १ ॥

जे जन ऐसी करी कमाई, तिनकी फैली जग रोसनाई,
अष्ट प्रमान जगह खुद पाई ।

तिन देखा अँड मँभारा है ॥ २ ॥

मारी अँड को अवगत राई, अमर कोट अकह नकल
बनाई ।

सुदु ब्रह्म पद तहें ठहराई ।

सो नाम अनामी धारा है ॥ ३ ॥

सतवीं सुन्न अंड के माहीं, मिलमिलाहट की नकल
बनाई;

महा काल तहँ आन रहाई ।

सो अगम पुरुष उञ्जारा है ॥ ४ ॥

छठवीं सुन्न जो अंड मेंझारा, अगम महल की नकल सुधारा
निरगुन काल तहाँ पग धारा ।

सो अलख पुरुष कही न्यारा है ॥ ५ ॥

पंचम सुन्न जो अंड के माहीं, सत्तलोक की नकल बनाई
माया सहित निरंजन राई ।

सो सत्त पुरुष दीदारा है ॥ ६ ॥

चौथी सुन्न अंड के माहीं, पद निर्यान की नकल बनाई
अवगति कला हो सतगुरु आई ।

सो सोहं पद सारा है ॥ ७ ॥

तीजी सुन्न की सुनो बड़ाई, एक सुन्न के दोय बनाई,
ऊपर महासुन्न अधिकाई ।

नीचे सुन्न पसारा है ॥ ८ ॥

सतवीं सुन्न महाकाल रहाई, तासु कला महासुन्न समाई
पारब्रह्म कर थाप्यो ताही ।

सो निःअक्षर सारा है ॥ ९ ॥

छठवीं सुन्न जो निरगुन राई, तासु कला आ सुन्न समाई,
अच्छर ब्रह्म कहै पुनि ताही,

सोई सव्द ररंकारा है ॥ १० ॥

पंचम सुन्न निरंजन राई, तासु कला दूजी सुन छाई,
पुरुष प्रकिरती पदवी पाई ।

सुद्ध सरगुन रचन पसारा है ॥ ११ ॥

पुरुष प्रकृति दूजी सुन माहीं, तासु कला पिरथम सुन आई
जोन निरजन नाम धराई ।

सरगुन स्थूल पसारा है ॥ १२ ॥

गिष्मम गुन्न जो जोत रहाई, ताकी कला अविद्या बाई,
पुत्रन रंग पुत्री उपजाई ।

यह सिंध वैराट पसारा है ॥ १३ ॥

गन्धर्व अक्राग उतर पुनि आई, ब्रह्मा त्रिस्तु समाधि जगाई,
पुत्रन रंग पुत्री परनाई ।

यह शठेग नाम उचारा है ॥ १४ ॥

छठे अक्राम मिव अवगति भौरा, जंग गौर रिद्धि करती चौंरा
गिरि कैलास गन करते सोरा ।

तहें सोहें सिर भौरा है ॥ १५ ॥

पंचम अक्रास में विरनु विराजे, लक्ष्मी सहित सिंहासन गाजे
हिरिंग वैकुंठ भक्त समाजे ।

जिन भक्तन कारज सारा है ॥ १६ ॥

साथे अक्रास ब्रह्मा विस्तारा, सावित्री संग करत विहारा
ब्रह्म ऋद्धि आंग पद सारा ।

यह जग सिरजनहारा है ॥ १७ ॥

तीजे अकास रहे धर्मराई, नर्क सुगं जिन लीन्ह बनाई,
करमन फल जीवन भुगताई ।

ऐसा अदल पसारा है ॥ १८ ॥

दूजे अकास में इन्द्र रहाई, देव मुनी बासा तहँ पाई,
रंभा करती निरत सदाई ।

कलिंग सब्द उच्चार है ॥ १९ ॥

प्रथम अकास मृत्तु है लोका, मरन जनम का नित जहँ धोखा,
सो हंसा पहुंचे सत लोका ।

जिन सतगुरु नाम उचारा है ॥ २० ॥

चौदह तबक किया निरवारा, अब नीचे का सुनो त्रिचारा,
सात तबक में छः रखवारा ।

भिन भिन सुनो पसारा है ॥ २१ ॥

सेस धौल वाराह कहाई, मीन कच्छ औ कुरम रहाई,
सो छः रहे सात के माहीं ।

यह पाताल पसारा है ॥ २२ ॥

॥ शब्द २४ ॥

कोइ सुनता है गुरु ज्ञानी, गगन में आवाज होती ज्ञानी । १ ॥

पहिले होता नाद विन्दु से, फेर जमाया पानी ॥ २ ॥

सब घट पूरन पूर रहा है, आदि पुरुष निर्वाणी ॥ ३ ॥

जो तन पाया पटा लिखाया, वरना नहीं बुझानी ॥ ४ ॥

अमृत छोड़ि विषय रस चाखा उलटी फाँस फँसानी ॥ ५ ॥

ओअं सोहं वाजा वाजै, त्रिकुटी सुरत समानी ॥ ६ ॥

ड्डा पिगला सुपमन साधो, सुन्न धुजा फहरानी ॥ ७ ॥
 डीद वरदीदहम नजरों देखा, अजरा अमर निसानी ॥८॥
 कहें कचीर सुनो भाई साधो, यही आदि की बानी ॥९॥

॥ शब्द २५ ॥

साधो ऐसा धुंध अँधियारा ॥ टेक ॥

या घट अंतर वाग वगीचे, याही में सिरजनहारा ॥ १ ॥
 या घट अंतर सात समुंदर, याही में नौ लख तारा ॥ २ ॥
 या घट अंतर हीरा मोती, याही में परखनहारा ॥ ३ ॥
 या घट अंतर अनहद गरजै, याही में उठत फुहारा ॥ ४ ॥
 कहन कवीर सुनो भाई साधो, याही में गुरु हमारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

अवधू मो जोगी गुरु मेरा, या पदको करै निवेरा ॥टेक॥
 तरवर एक मूल विन ठाढ़ा, विन फूले फल लागे ।
 मात्रा पत्र नहीं कछु वा के, अष्ट कमल दल गाजे ॥ १ ॥
 चढ़ तरवर दो पंठा बैठे, एक गुरु इक चेला ।
 चेना रहा सो चुन चुन खाया, गुरु निरन्तर खेला ॥२॥
 विन करनाल पखावज बाजै, विन रसना गुन गावै ।
 गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु मिलै तो बतावै ॥३॥
 गगन मंडल में उर्धमुख कुइयाँ, जहाँ अमी को वासा ।
 नगुरा होय सो भर भर पीवै निगुरा जाय पियासा ॥४॥
 सुन्न निम्बर पर गैया बियानी, धरती छीर जमाया ।
 मानन रहा मो संतन खाया, छाछ जगत भरमाया ॥५॥

पंछी को खोज मीन को मारग, कहैं कबीर दोउ भारी ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम, मूरति की बलिहारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २१ ॥

हंसा लोक हमारे ऐहौ, ताते अमृत फल तुम पैहौ ॥टेक॥
लोक हमारा अगम दूर है पार न पावै कोई ।

अति आधीन होय जो कोई ता को देउं लखाई ॥ १ ॥

मिरत लोक से हंसा आये पुहप दीप चलि जाई ।

अंबु दीप में सुमिरन करिही तत्र वह लोक दिखाई ॥२॥

माटी का पिंड छूटि जायगा, औ यह सकल विकारा ।

ज्यों जल माहिं रहत है पुरइन^१ ऐसे हंस हमारा ॥ ३ ॥

लोक हमारे ऐहो हंसा, तत्र सुख पैहो भाई ।

सुख सागर असनान करोगे, अजर अमर होइ जाई ॥४॥

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, हंसन करो यथाई ।

सेत सिंघासन बैठक दैहीं, जुग जुग राज कराई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

ऐसा लो तत ऐसा लो, मैं केहि विधि कथौ गंभीरा लो ॥टेक॥

बाहर कहैं तो सतगुरु लाजै। भीतर कहैं तो भूठा लो ॥

बाहर भीतर सकल निरंतर । गुरु परतापै दीठा लो ॥१॥

दृष्टिन मुष्टिन अगम अगोचर । पुस्तक लिखा न जाई लो ॥

जिन पहिचाना तिन भल जाना । कहे न को पतियाई लो ॥२॥

मीन चलै जल मग में जावै । परम तत्त धीं कैसा लो ॥

पुहप^२ वास हूं तें कछु फीना । परम तत्त धीं ऐसा लो ॥३॥

आकासे उड़ि गयी त्रिहंगम । पाछे खोज न दरसी ले ॥
 कहैं कबीर सतगुरु दाया ते । बिरला सतपद परसीले ॥४॥

॥ शब्द २९ ॥

यात्रा अगम अगोचर कैसा, तातें कहि समझाओं ऐसा ॥ टेक ॥
 जो दीसे सो तो है नाहीं, है सो कहा न जाई ।

मेना बेना कहि समझाओं, गूंगे का गुड़ भाई ॥ १ ॥

तृष्टि न दीसे मुष्टि न आवै, बिनसै नाहिं नियारा ।

ऐसा ज्ञान कथा गुरु मेरे, पंडित करै त्रिचारा ॥ २ ॥

॥ शब्द ३० ॥

बिन देखे परतीति न आवै, कहे न कोउ पतियाना ।

ममुझा होय सो सद्दै चीन्है, अचरज होय अयाना ॥३॥

कोई ध्यावै निराकार को, कोई ध्यावै आकारा ।

वह तो इन दोऊ ते न्यारा, जानै जाननहारा ॥ ४ ॥

काजी कथै कतेय कुराना, पंडित वेद पुराना ।

वह अच्छर तो लखा न जाई, मात्रा लगै न काना ॥५॥

नादी वादी पढ़ना गुनना, बहु चतुराई भीना ।

कहैं कबीर सो पढ़ै न परलय, नाम भक्ति जिन चीन्हा ॥६॥



भूलना

॥ शब्द १ ॥

ज्ञान का गेंद कर सुर्त का डंड कर,
 खेल चौगान मैदान माहीं ॥ १ ॥

जगत का भरमना छोड़ दे बालके,
 आय जा भेष भगवंत पाहीं ॥ २ ॥

भेष भगवंत की शेष महिमा करे,
 शेष के साँस पर चरन डारै ॥ ३ ॥

काम दल जीति के कवल दल मोधि के,
 ब्रह्म की वेधि के क्रोध मारै ॥ ४ ॥

पदम आसन करै पवन परिचै करै,
 गगन के महल पर मदन जारै ॥ ५ ॥

कहत कव्यीर कोइ संत जन जौहरी,
 करम की रेख पर मेख मारै ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

पाप पुत्र के बीज दीज,
 विज्ञान अगिन में जारिये जी ॥ १ ॥

पाँची चोर विवेक सों बस करि,
 विचार नगर में मारिये जी ॥ २ ॥

ष्विदानन्द सागर में जाइये,
 मन चित दीज की डारिये जी ॥ ३ ॥

कहें कवीर एक आप कहा,
कितने की पार उतारिये जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

तीरथ में सब पानी है,
होवै नहिं कछु अन्हाय देखा ॥ १ ॥
प्रतिमा सकल बनी जड़ है,
बोलै नहिं बोलाय देखा ॥ २ ॥
पुगन कुरान सब बात ही बात है,
घट का परदा खोल देखा ॥ ३ ॥
अनुभव की बात कवीर कहैं,
यह सब है भूठी पोल देखा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

दो मूर चले सुभाव सेती,
नाभी से उलटा आवता है ॥ १ ॥
बीच डुंगला पिंगला तीन नाड़ी,
सुपमन से भोजन पावता है ॥ २ ॥
पूरक करै कुम्भक करै,
रेचक करै भरि जावता है ॥ ३ ॥
कायम कवीर का भूलना जी,
दया भूल परे पछितावता है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सूर को कौन सिखावता है,
 रन माहिं असी का मारना जी ॥ १ ॥
 सती को कौन सिखावता है,
 सँग स्वामी के तन जारना जी ॥ २ ॥
 हंस को कौन सिखावता है,
 नीर छीर का भिन्न विचारना जी ॥ ३ ॥
 कबीर को कौन सिखावता है,
 तत्त रँगों को धारना जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

तरुत बना हाड़ घाम का जी, दाना पानी क
 भोग लगावता है ॥ १ ॥
 मल नीर भरै लोहू माँस बढ़ै, आपु आपु को
 अंस बढ़ावता है ॥ २ ॥
 नाद बिंदु के बीच कलोल करै, सो आत्म राम
 कहावता है ॥ ३ ॥
 अस्थान यही कहँ ठूँढ़ता है, दया देस कबीर
 बतवावता है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

दरिया की लहर दरियाव है जी, दरिया और लहर में
 भिन्न कोयम ॥ १ ॥

राजपुत्राणां राजा मालवः जातः राजा मरण भ्रम जाय ॥टेक॥
 कर्ण - जन की कवि पिचकारी, छिमा चलावनहार ।
 आनन ब्रह्म जो मेलन लागे, पाँच पचीस मँभार ॥१॥
 उत गद्या में हागी खेलै, मची प्रेम की कींच ।
 केभ मोह दाऊ कटि भागे, मुन सुन सब्द अजीत ॥२॥
 त्रिचुटी महल में बाजा बाजे, हेत छतीसो राग ।
 सुरत नखी जह देखि तमाशा, सतगुरु खेलै फाग ॥ ३ ॥
 हुंसाया पिंगला सुपनना हो, सुरत निरत दोउ नारि ।
 अरने पिया मंग होरी खेलै, लज्जा कान निवारि ॥४॥
 गुल नहर में होत कुतूहल, करै राग अनुराज ।
 अरने पुनव के दरमन पावै, पूरन प्रेम सुहाग ॥ ५ ॥
 गनमुन मिले फनुवा निज पायो, मारग दियो लखाय ।
 कहै कवीर जो यह गति पावै, सो जिव लोक सिधाय ॥६॥

हो करता है । १ गुम हो गया । २ कहते हैं ।

॥ शब्द २ ॥

काया नगर मँझार संत खेलैं होरी ।

गावत राग सरस सुर सौहै, अति आनंद भयो री ॥६॥

चंदन सील सबुद्धि अरगजा, केसर करनी गहो री ।

अगर अगमम लुगम करि लीन्ह, अभय उर माँहि धरो री ॥१॥

प्रीति फुलेल गुलाल ज्ञान करि, लेहु जुगत भरि भोरी ।

चोवा चित चेतन परकासा, आवति वास घनो री ॥२॥

त्रिकुटी महल में वाजा वाजै, जगमग जोत उजेरी ।

सहज रंग राचि रह्यो सकल तन, छूटत नाहिं करेरी ॥३॥

अनहद वाजे वजै मधुर धुन, बिन करताल तँबूरा ।

बिन रसना जहँ राग छतीसो, होत महानंद पूरा ॥ ४ ॥

सुन्न महल इक रंग महल से, कहूँ टरत नहिं टारी ।

कहैं कबीर समुझि लो साधो, निर्गुन कह्यो सदा री ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

हमारे को खेलै ऐसी होरी, जा में आवागवन लागी

डोरी ॥ टेक ॥

सुवनन सुन्यौ नैन नहिं देख्यौ, पिय पिय पिय लागी लौ री।

पंथ निहारत जनम सिराना, परचट मिले न चोरी ॥१॥

जा कारन गृह तें कढ़ि निकसी, लोकर लाज कुल तोरी ।

चोवा चंदन और अरगजा, बपरा रंग भरो री ॥ २ ॥

एकन हूं सुगडाला पहिरी, एकन गुदरी भेकारी ।

बहुत भेष धर खाँग बनाये, लौ नहिं लगी ठगोरी ॥३॥

— राधा राधा रामेश्वर, देस दिशंतर दौरि ।

— राधा राधा प्री प्रदच्छिना, पुरुकर हूं में लुट्टी री ॥४॥

— राधा राधा भागवत गीता, चारो वरन ढँढोरी ।

— राधा राधा सतगुरु त्रिनु, भर्म मिटे नहिं भव री ॥५॥

॥ गज्ज ४ ॥

मेरे माहव आये आज, खेलन फाग री ।

पानी मिम उगगन सब बोले, अति सुख मंगलराग ॥टेका॥

पानी पाग गगारांग धाले, अनहद बानी राग री ।

पानी पाग अनराग हातु है, क्या सोवै उठि जाग री ॥१॥

पानी पाद पवन त्रिच्छीना, बहुत करीं सनमान री ।

देन प्रमाण प्रम पद योंही अत्रिचल जुग जुग वास री ॥२॥

चरन पावा लेंहुं चरनादक, उठि उनके पग लाग री ।

पाँच सर्वा मिलि मंगल गावें, पिव अपने संग पाग री ॥३॥

प्रचामिन भाव से लेंवां, परम पुरुष भरतार री ।

महाप्रमाद संत मुख पावें, आन खुलो मेरीं भाग री ॥४॥

चारागी के बंद लुड़ावन, आये सतगुरु आप री ।

पान पर्वाना देन जीवन के, वे पावें सुख वास री ॥५॥

चावा चदन अगर कुमकुमा, पुहुप माल गल हार री ।

पमुवा माँग मुक्ति फल लेंहुं, जिव आपन के काज री ॥६॥

नागदे सिंगार धनीसो अभरन, सुरत सिंगार सँवार री ।

मन कर्वा मिले सुख सागर आवा गवन निवार री ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

साधो हम घर कंत सुजान, खेल्यो रंग हारी ।
 जनम जनम की मिटी कल्पना, पायो जीवन प्रान री ॥८॥
 पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, गुरमुख सव्द विचार री ।
 वाजत ताल मृदंग झँझ डफ, अनहद सव्द गुंजार री ॥९॥
 खेलन चली पंथ प्रीतम के, तन की तपन गई री ।
 पिचुकारी छूटै अति अद्भुत, रस की कौंच भई री ॥१०॥
 साहब मिलि आपा विसरायो, लाग्यो खेल अपार री ।
 चहुं दिस पिय पिय धूम मची है, रटना लगी हमार री ॥११॥
 सुख सागर असनान कियो है, निर्मल भयो सरौर री ।
 आवागवन की मिटी कल्पना, फगुवा पायो कवीर री ॥१२॥

॥ शब्द ६ ॥

जहँ सतगुर खेलत ऋतु बसंत । परम जोत जहँ साध संत ॥१
 तीन लोक से भिन्न राज । जहँ अनहद वाजा बजै वाज ॥२
 चहुं दिस जोति की वहै धार । बिरला जन कोइ उतरै पार ॥३
 कोटि कृष्ण जहँ जोरैं हाथ । कोटि बिस्नु जहँ नवैं माथ ॥४
 कोटिन ब्रह्मा पढ़ैं पुरान । कोटि महेस जहँ धरैं ध्यान ॥५॥
 कोटि सरस्वति धारैं राग । कोटि इन्द्र जहँ गगन लाग ॥६
 सुरगन्धर्व मुनि गने न जायँ । जहँ साहिव प्रगटे आप आय ७
 चोवा चंदन औ अवीर । पुहुप वास रस रह्यो गंभीर ॥८॥
 सिरजत हिये निवास लीन्ह । सो यहि लोक से रहत भिन्न ॥९
 जय वसंत गहि राग लीन्ह । सतगुरु सव्द उचार कीन्ह ॥१०
 कहैं कवीर मन हृदय लाय । नरक-उधारन नाम आहि ॥११

देखता

॥ १ ॥

रैन दिन संन यों सोवता देखता,
 संगार को ओर रो पीठ दीये ।
 मन ओर पजन फिर फूट चाले नहीं,
 नंद ओर सूर को सम्म कीये ॥ १ ॥
 गगन ही गठ तकौर ज्यों रहतु है,
 गगन ओ निरत का तार बाजे ।
 नो गानिया यगत हे रैन दिन गुन्य में,
 गगन के दंग पिउ गगन गाजे ॥ २ ॥

॥ २ ॥

पात्र ओर पलक की आगती कौन सी,
 रैन दिन आगती संत गावे ।
 घुन निगमान तह गैब की भालरा,
 गैब के घंठ का नाद आवै ॥ १ ॥
 तह नात्र तिन देहरा* देव निर्वान है,
 गगन के तख पर जुगत सारी ।
 कहे कवरीर तह रैन दिन आरणी,
 पानिया पाँच पूजा उतारी ॥ २ ॥

॥ ३ ॥

नाँडें आप की सेव तो आप ही जानिहो,
 आप का भेव कहे कौन पावे ।
 आपनी आपनी बुद्धि अनुमान सां,
 बचन त्रिदास करि लहर लावे ॥ १ ॥

तू कहै तैसा नहीं, है सो दीखै नहीं,
 निगम हूं कहत नहिं पार जावै ।
 कहैं कञ्चीर या सैन गूंगा तईं ।
 होय गूंगा सोई सैन पावै ॥ २ ॥

॥ ४ ॥

कर्म और भर्म संसार सब करतु है,
 पीव की परख कोइ संत जानै ।
 सुरत औ निरत मन पवन को पकर करि-
 गंग और जमुन के घाट जानै ॥ १ ॥
 पाँच को नाथ करि साथ सोहूं लिया,
 अधर दरियाव का सुख मानै ।
 कहैं कञ्चीर सोइ संत निर्भय घरा,
 जन्म और मरन का भर्म भानै ॥ २ ॥

॥ ५ ॥

गंग उलटी धरो जमुन वासा करी.*
 पलट पंच तीरथ पाप जावै ।
 नीर निर्मल तहाँ रैन दिन भरतु है,
 न्हाय जो व्हुरि भव सिंध न आवै ॥ १ ॥
 फिरत औरे तहाँ बुद्धि को नास है,
 बाज के झपट में सिंध नाहीं ।

* गंग अर्थात् दहिनी स्वाँसा को घड़ाओ और जमुन अर्थात् बाँई स्वाँसा के साथ निलाओ ।

कहै बानीर उस जुक्ति को गहैगा,
जनम औ मरन तत्र अंत पाई ॥ २ ॥

॥ ६ ॥

वेग नोजूट में अजब बिसराम है,
हीन भोजूट तो सही पावै ।
तेर मात पान की बेर उलटा चढ़ै,
पात्र पत्नीस की उलटि लावै ॥ १ ॥
गान की लीर गुरा सिंध का झूलना,
योग की गौर तह नाद गावै ।
बीज मिल कवट तह देख अति फूलिया,
कहै कवरी मन भंवर छावै ॥ २ ॥

॥ ७ ॥

चक्र के बीच में कवल अति फूलिया,
तासु द्वा मुख कोड संत जानै ।
कुलुफ नौद्वार औ पवन की रोकना,
तिरकुटी मट्ट मन भंवर आनै ॥ १ ॥
नन्द की घोर बहुं ओर ही होत हैं,
अधर दरियाव की सुख मानै ।
कहै कवरी यों झूल सुख सिंध में,
जन्म औ मरन का भर्म भानै ॥ २ ॥

॥ ८ ॥

गंग औ जमुन के घाट की खोजि ले,
भंवर गुंजार तह करत भाई ।

सरसुती नीर तहँ देखु निर्मल बहै,
तासु के नीर पिये प्यास जाई ॥ १ ॥

पाँच की प्यास तहँ देखि पूरी भई,
तीन की ताप तहँ लगे नाहीं ।

कहैं कव्चीर यह अगम का खेल है,
गैब का चाँदना देख माहीं ॥ २ ॥

॥ ८ ॥

माड़ि मत्थान मन रई* को फेरना,
होत घमसान तहँ गगन गाजै ।

उठत भनकार तहँ नाद अनहद घूरै,
तिरकुटी महल के वैठ छाजै ॥ १ ॥

नाम की नेत कर चित्त को फेरिया,
तत्त को ताय कर घिर्त लीया ।

कहैं कव्चीर यों संत निर्भय हुआ,
परम सुख धाम तहँ लागि जीया ॥ २ ॥

॥ १० ॥

गड़ा निस्सान तहँ सुन्न के बीच नैं.

उलटि के सुरति फिर नाहिं आवै ।

दूध को मत्थ कर घिर्त न्यारा किया,
बहुरि फिर तत्त में ना समावै ॥ १ ॥

माड़ि मत्थान तहँ पाँच उलटा किया,
नाम नौनीति[†] लै सुरत फेरी ।

— की कमीश भी सत निर्भय हुआ,
तन्म दो सरन की मिट्टी फेरी ॥

॥ ११ ॥

जिन पत्थरों में गूर जगा रही,
तम ताजे तहाँ सत झूले ।
जिन भानदार सत नूर बरसत रहे,
जिन सीने तहाँ पाँच झूले ॥ १ ॥

जिन ता दो तुन्द ज्यों देखु अंतर, नह
जिन आ शीव भी एक आहीं ।
जिन सीने धा जिन गंगा तर्ह,
जिन लक्ष्मण की मन्म नाहीं ॥ २ ॥

॥ १२ ॥

आम अश्विन गुरु-ज्ञान तिन ना लहै
तर्ह गुरु-ज्ञान कीइ संत पूरा ।
दादत पदत करि खीड़री परगटे
जगन जगजै तहाँ बजै तूरा ॥ १ ॥

हुंमला पिंगला सुधमना सम करै,
जर्ह औ उर्ध विव ध्यान लावै ।
कौं कर्षीन पीड संत निर्भय रहै,
जान की देह फिर नाहिं खावै ॥

॥ १३ ॥

अश्विन आसन द्विधा लगन प्याला पि

पंथ बिन जाइ चल सहर वेगमपुरे,
 दया गुरुदेव की सहज आई ॥ १ ॥
 ध्यान धर देखिया नैन बिन पेखिया,
 अगम अगाध सब कहत गाई ।
 कहैं कव्वीर कोइ भेद विरला लहै,
 गहै सो कहै या सैन भाई ॥ २ ॥

॥ ४ ॥

सहर वेगमपुरा गम्म को ना लहै,
 होय वेगम्म सो गम्म पावै ।
 गुनों की गम्म ना अजब विस्वाम है,
 सैन को लखै सोइ सैन गावै ॥ १ ॥
 मुख वानी तिकोँ स्वाद कैसे कहै,
 स्वाद पावै सोई सुख मानै ।
 कहैं कव्वीर या सैन गूंगा तई,
 होय गूंगा सोई सैन जानै ॥ २ ॥

॥ १५ ॥

अधर ही ख्याल औ अधर ही चाल है,
 अधर के बीच तहँ मट्ट कीया ।
 खेल उलटा चला जाय चौथे मिला,
 सिंध के मुख फिर सीस दीया ॥ १ ॥

मद मन नीर टंकीर तहँ अधर है,
 नू लो परस करि पीर पाया ।
 — ई नीर मह लेल अवधूत का,
 मेलि अवधूत नर सहज आया ॥ २ ॥

॥ १६ ॥

गंगा अवधूत मरतान माता रहै,
 नाम बेराग गुथि लिया पूरा ।
 गंग उखवाँस का प्रेम प्याला पिया,
 गगन गाँजे तहाँ बजै तूरा ॥ १ ॥
 पाठ गंगा गीं नाम-राता रहै,
 जनन जाना लिया सदा खेलै ।
 कहँ कव्वाँर गुरु पीर सौँ सुरखरू,
 परम मुख धाम तहँ प्रान मेलै ॥ २ ॥

॥ १७ ॥

लुका भा थका फिर देह धारै नहीं,
 करम औ कपट सब दूर कीया ।
 जिन ग्वाँम उखवाँस का प्रेम प्याला पिया,
 नाम दरियाव तहँ पैसि^१ जीया ॥ १ ॥
 चढ़ी मनवाल औ हुआ मन साविता^२,
 फटिक ज्यों फेर नहिं फूटि जावै ।
 कहँ कव्वाँर जिन वास निर्भय किया,
 बहुनि संमार में नाहिं आवै ॥ २ ॥

^१ मरगार । ^२ पैठ कर । ^३ धिर ।

॥ १८ ॥

तरक संसार सों फरक फरक सदा,
 गरक गुरु ज्ञान में जुक्त जोगी ।
 अर्ध औ उर्ध के बीच आसन किया,
 वंक प्याला पिवै रस्त भोगी ॥ १ ॥
 अर्ध दरियाव तहँ जाय डोरी लगी,
 महल वारीक का भेद पाया ।
 कहँ कव्वीर यों संत निर्भय हुआ,
 परम सुख धाम तहँ प्रान लाया ॥ २ ॥

॥ १९ ॥

माड़ि मतवाल तहँ ब्रह्म भाठी जरै,
 पिवै कोइ सूरमा सीस मेलै ।
 पाँच को पेल सैतान को पकरि के,
 प्रेम प्याला जहाँ अधर भेलै ॥ १ ॥
 पलटि मन पवन को उलटि सूधा कँवल,
 अर्ध औ उर्ध विच ध्यान लावै ।
 कहँ कव्वीर मस्तान माता रहै,
 विना कर ताँतिया नाद गावै ॥ २ ॥

॥ २० ॥

आठ हूँ पहर मतवाल लागी रहै,
 आठ हूँ पहर की छाक[†] पीवै ।

अगद हूँ पहर मरुनाम आता रहै,
 गन् की छोल में साथ जीवै ॥ १ ॥
 सांन ही कहतु ओ साँच ही गहतु है,
 सांन की त्याग करि साँच लागी ।
 तहें कवरीर यों साथ निर्भय हुआ,
 जनम औ मरन का भर्म भागी ॥ २ ॥

॥ २१ ॥

कगन कलोल दरियाव के बीच में,
 ब्रह्म की छील में हंस झूलै ।
 अर्थ औ उर्थ की पंग वाही तहाँ,
 पलट मन पवन की कवल फूलै ॥ १ ॥
 गगन गरजै तहाँ सदा पावस[†] भरै,
 होत भनकार नित वजत तूरा ।
 वेद कनेव की गम्म नाही तहाँ,
 कहैं कवरीर कोइ रमै सूरा ॥ २ ॥

॥ २२ ॥

गगन की गुफा तहें गैव का चाँदना,
 उदय औ अस्त का नाँव नाही ।
 दिवन औ रैन तहें नेक नहिं पाइये,
 प्रेम परकास के सिंध माहीं ॥ १ ॥

सदा आनंद दुख दुन्द व्यापै नहीं,
 पूरनानंद भरपूर देखा ।
 भर्म श्रौर भ्रांति तहँ नेक आवै नहीं,
 कहँ कव्वीर रस एक पेखा ॥ २ ॥

॥ २३ ॥

खेल ब्रह्मंड का पिंड में देखिया,
 जगत की भर्मना दूरि भागी ।
 वाहरा भीतरा एक आकासवत,
 सुपमना डोरि तहँ उलटि लागी ॥ १ ॥
 पवन को पलट करि सुन्न में घर किया,
 धरिया में अधर भरपूर देखा ।
 कहँ कव्वीर गुरु पूर की मेहर सों,
 तिरकुटी महु दीदार पेखा ॥ २ ॥

॥ २४ ॥

देख दीदार मस्तान मैं होइ रह्यो,
 सकल भरपूर है नूर तेरा ।
 सुभग दरियाव तहँ हंस मोती चुगैं,
 काल का जाल तहँ नाहिं नेड़ा ॥ १ ॥
 ज्ञान का थाल औ सहज मति वाति है,
 अधर आसन किया अगम डेरा ।
 कहँ कव्वीर तहँ भर्म भासै नहीं,
 जन्म औ मरन का मिटा फेरा ॥ २ ॥

॥ २५ ॥

नर परनाश तह रैन कहें पाइये,
 रैन परकास नहिं सूर भासै ।
 जग परकास अज्ञान कहं पाइये,
 जग अज्ञान तहें ज्ञान नासै ॥ १ ॥
 नाम नलजान तहं नाम कहें पाइये,
 नाम जहं होय तहें काम नाहीं ।
 नाम कहीर यह सत्त त्रीचार है,
 नामभ्र विचार करि देख नाहीं ॥ २ ॥

॥ २६ ॥

पृक ममभोग इकसार बजती रहै,
 मेल कौड गूरमा रांत भेले ।
 काम दल जान करि शोध पैमाल* करि,
 काम मुख धाम तहें सुरत मेले ॥ १ ॥
 जीत न गेह करि ज्ञान का जड़ग ले,
 आय चाँजान में खेल खेले ।
 बहै कर्षीर साड रांत जन सूरमा,
 जीत का शोष करि करम ठेले ॥ २ ॥

॥ २७ ॥

नमरि समरेर संग्राम में पैसिये,
 देह परजंत कर जुहु भाई ।

काट सिर धैरियाँ दाव जहँ का तहाँ,
 आय दरवार में सीस नाई ॥ १ ॥
 करत मतवाल जहँ संत जन सूरमा,
 घुरत निस्तान तहँ गगन धाई ।
 कहैं कव्बीर अत्र नाम सीं सुरखइ,
 मौज दरवार की भक्ति पाई ॥ २ ॥

॥ २० ॥

देह बंदूक और पवन दाख किया,
 ज्ञान गोली तहाँ खूब डाटी ।
 सुरत की जामकी मूठ चौथे लगी,
 भर्म की भीत सब दूर फाटी ॥ १ ॥
 कहैं कव्बीर कोइ खेलिहै सूरमा,
 कायरौं खेल यह होत नाहीं ।
 आस की फाँस को काटि निर्भय भया,
 नाम रस रस कर गरक माहीं ॥ २ ॥

॥ २१ ॥

ज्ञान समसेर की बाँधि जागी चढ़ै,
 मार मन मीर रन धीर हूवा ।
 खेत को जीत करि बिसन सब पेलिया,
 मिला हरि माहिं अत्र नाहिं जूवा ॥ १ ॥
 जगत में जस्त औ दाद दरगाह में,
 खेल यह खेलिहै सूर कीई ।

रहे लखीर यह सूर का खेल है,
नातराँ सेल यह नाहिं होई ॥ २ ॥

॥ ३० ॥

सूर गगाम को देखि भागे नहीं,
देखि भागे रोई सूर नाहीं ।
नाम ओ क्रोध मद लोभ सों जूझना,
परा घमसान तहं खेत माहीं ॥ १ ॥

गाल और गाँव संतोष साही भये,
नाम गमरोर तहं खूब वाजे ॥ २ ॥

काल कर्दार कोडु जूझिहै सूरमा,
कायरों भीड़ तहं तुरत भाजे ॥ ३ ॥

॥ ३१ ॥

साध का खेल तो विकट बेंडा मती,
मती औ सूर की चाल आगे ।
सूर घमसान है, पलक दो चार का,
मती घमसान पल एक लागे ॥ १ ॥

साध संग्राम है रैन दिन जूझना,
देह पजंत का काम भाई ।

सहै कर्दार दुक वाग ढीली करे,
उलटि मन गगन सों जमीं आई ॥ २ ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

तन मन धन वाजी लागी हो ॥ टेक ॥

चौपड़ खेलूं पीव से रे, तन मन वाजी लगाय ।
 हारी तो पिय की भई रे, जीती तो पिय मोर हो ॥१॥
 चौसरिया के खेल में रे, जुग मिलन की आस ।
 नर्द अकेली रह गई रे, नहिं जीवन की आस हो ॥२॥
 चार वरन घर एक है रे, भाँति भाँति के लोग ।
 मनसा वाचा कर्मना कोइ, प्रीति निवाही ओर हो ॥३॥
 लख चौरासी भरमत भरमत, पौ पै अटकी आय ।
 जो अबके पौ ना पड़ी रे, फिर चौरासी जाय हो ॥४॥
 कहैं कधीर धर्मदास से रे, जीती वाजी मत हार ।
 अबके सुरत चढ़ाय दे रे, सोई सुहागिन नार हो ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

जन को दीनता जब आवै ॥ टेक ॥

रहै अधीन दीनता भापै दुरमति दूरि बहावै ।
 सो पद देवँ दास अपने को ब्रह्मादिक नहिं पावै ॥१॥
 औरन को ऊँचो करि जानै आपुन नीच कहावै ।
 तुम तें अवधू साँच कहतु हौं सो मेरे मन भावै ॥२॥
 सब घट एक ब्रह्म जो जानै दुविधा दूर बहावै ।
 सकल भर्मना त्यागि के अवधू इक गुर के गुन गावै ॥३॥

३ - लीजिन तेप लो लावै सन अभिमान नसावै ।
 ४ - सन मे मरे मपाउं पढ़ि गुनि सव तिसरावै ॥१॥
 ५ - लो सन सान ली संगत जोम जुक्ति तें पावै ।
 ६ - लो सन गुनि लो पावो बहुरि न भवजल आवै ॥५॥

॥ गव ३ ॥

७ - लो सन जा उगी पारा । जिन पनतें आपा डारा ॥टेक॥
 ८ - लो सन में जानी रे भाउं कोउं कहै मैं त्यागी ।
 ९ - लो सन में उगी जीगी अठं सवन को लागी ॥ १ ॥
 १० - लो सन में जागी रे भाउं कोउं कहै मैं भोगी ।
 ११ - लो सन आपा डुरि न डारा कैसे जीवै रोगी ॥ २ ॥
 १२ - लो सन में दाना रे भाउं कोउं कहै मैं तपसी ।
 १३ - लो सन नाम निरचय नहिं जाना सव माया में खपसी ३
 १४ - लो सन जुगना सव जानीं कोउं कहै मैं रहनी ।
 १५ - लो सन देव गों परिचय नाहीं यह सव झूठी कहनी ॥१॥
 १६ - लो सन धर्म सव साथे और वरत सव कीन्हा ।
 १७ - लो सन आँटी निकसी नाहीं करज बहुत सिर लीन्हा ५
 १८ - लो सन गुमान सव दूर निवारे करनी को बल नाहीं ।
 १९ - लो सन कवीर साहब का वंदा पहुंचा निज पद माहीं ॥१॥

॥ गव ४ ॥

२० - लो सन का निरजनहार बहैया डक ना मरै ॥ टेक ॥
 २१ - लो सन मेरा व्याह करा दो अनजाया वर लाय ।
 २२ - लो सन जाया वर ना मिलै तो तोहि से मेरा व्याह ॥१॥

हरे हरे वाँस कटा नारे वायुल पानन मड़वा छाय ।
सुरति निरति की भाँवरि डारो ज्ञान की गाँठि लगाय २
सास मरै ननदी मरै रे लहुरा देवर मरि जाय ।

एक बढैया ना मरै चरखे का सिरजनहार ॥ ३ ॥

कहैं कयीर सुनो भाई साधो चरखा लखो न जाय ।
या चरखे को जो लखे रे आवागवन छुटि जाय ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जहँ लोभ मोह के खंभ दोऊ, मन रच्यो है हिंडोर ।
तहँ भूलैं जीव जहान, जहँ कतहूँ नहिं थिर ठौर ॥ १ ॥

चतुरा भूलैं चतुराइयाँ, औ भूलैं राजा सेव ।

औ चंद सूर दोऊ भूलैं, नाहीं पावैं भेव ॥ २ ॥

चौरासी लच्छहूँ जिव भूलैं, भूलैं रवि ससि धाय ।

कोटिन कल्प जुग वीतिया, आने न कयहूँ हाय ॥३॥

धरनी आकासहु दोऊ भूलैं, भूलैं पवनहुं नार ।

धरि देह हरि आपहु भूलैं, लखहीं संत कयीर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मेको कहाँ ढूँटो बंदे मैं तो तेरे पास में ॥ टेक ॥

ना मैं छगरी ना मैं भेंड़ी न मैं छुरी गँडास में ॥१॥

नहीं खाल में नहीं पूंछ में ना हड्डी ना नास में ॥२॥

ना मैं देवल ना मैं मस्जिद ना काये कैलास में ॥३॥

ना तौ कौनो क्रिया कर्म में नहीं जोग वैराग में ॥४॥

... नो तु मे पिलिहों पल भर की तालास में ॥५॥
 ... नार मेरी पुरी मवास* में ॥६॥
 ... भाई गाभो सन स्वाँसों की स्वाँस में ॥७॥

॥ गद्य ७ ॥

... मन केलगाये गुरु पावै १
 ... होलिया होल बजावै ।
 ... गुरिन चाँस पर लावै ॥२॥
 ... आँसु आँसु में, आँसु चाटने आवै ।
 ... मनि तज प्रान गँवावै ३
 ... कर छोड़े बतरावै ४
 ... गुरति डोर पर लावै ॥४॥
 ... अपनी काया जरावै ।
 ... सुरत पिया पर लावै ॥५॥
 ... ज्ञान की आरत लावै ।
 ... फेर जनम नहिं पावै ॥६॥

॥ गद्य ८ ॥

... भक्ति भाव नहिं बूझै जी ॥१॥
 ... यही गुसाँईं दीजै जी ॥२॥
 ... हम पर किरपा कीजै जी ॥३॥
 ... भेंट रूपैया लीजै जी ॥४॥
 ... सुनत गुसाँईं रीझै जी ॥५॥

* मरम । * माँप । † घात करती है ।

साँचे का कोड़ गाहक नाहीं, झूठे जक्त पतीजै जी ॥६॥
कहैं कवीर सुनो भाई साधो, अंधों को क्या कीजै जी ॥७॥

॥ शब्द ८ ॥

सतगुरु चारो वरन विचारो ॥ टेक ॥

ब्राह्मन वही ब्रह्म को चीन्है, पहिरै जनेव विचारो ॥१॥
साध के सौ गुन जनेव के नौ गुन, सो पहिरै ब्रह्मचारी ॥२॥
छत्री वही पाप की छै करै, ज्ञान बाँधे तरवारी ॥३॥
अंतर दिल विच दाया राखै, कबहूँ न आवै हारी ॥४॥
वैस वही जो विसया त्यागै, त्याग देय पर नारी ॥५॥
ममता मारि के मंजन लावै, प्रान दान दंडारी ॥६॥
सूद्र वही जो सूधो राहै, छोड़ देय अपकारी ॥७॥
गुरु की दया साध की संगत, पावै अचल पद भारी ॥८॥
जो जन भजै सोई जन उवरै, या में जीत न हारी ॥९॥
कहैं कवीर सुनो भाई साधो, नामै गहो लभारी ॥१०॥

॥ शब्द १० ॥

संतन जात न पूछे निरगुनियौ ॥ टेक ॥

साध वरामहन साध छत्तरी, साधै जाती वनियौ ।
साधन माँ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पुच्छनियौ* ॥१॥
साधै नाऊ साधै धोत्री, साध जाति है वरियौ ।
साधन माँ रैदास संत हैं, सुपच ऋषी सो भंगियौ ॥२॥

--- नूँ रह चीन गने है, बचू नाहिं पहिन्नियाँ ।
 --- उगन मां फेटी, काठ को फंद पसरियाँ ॥३॥
 --- गन गने हैं, सद्द रूप जिन देहियाँ ।
 --- भाँ भाँ भाँ भाँ, सत्त रूप वहि जनियाँ ॥४॥

॥ गद ११ ॥

पतिमा हर्षा पिम ने रंजारी ।
 पतिमे प्रिय क्री प्रारी ॥ १ ॥
 पति की वनी चुनरिया ।
 पति प्रिया प्रारी ॥ २ ॥
 पति जा में जांचल लागे ।
 पति जाति उंजारी ॥ ३ ॥
 पति नामे यह वनी चुनरिया ।
 पति कवीर बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ गद १२ ॥

बाहु न मन ब्रम कीन्हा जग में काहु न मन बस कीन्हा ॥ टेक ॥
 मिनी कृषि मे वन में लूटे धिपै विकार न जाने ।
 पट्टे नाति भूप दगरथ ने पकरि अजीध्या आने ॥ १ ॥

कर्ण अपि थकै वन मे रतने थे पवन का अहार करते थे और एक
 बार राजा धन दयाना मारते थे । राजा दगरथ के अलाद नहीं होती
 के मिथि की देवि दलके कुन के परोहित थे उन्होने कहा कि विधि
 दगरथ और होम होगा तब बेटा होने की उम्मेद हो सकती
 है । राजा ने इस विनय युवा कृषि के और कोई नहीं करा सकता
 था । राजा ने दगरथ को जो कोई भी कृषि को यहाँ लायेगा

सूखे पत्र पवन भपि रहते पारामर* से ज्ञानी ।

भरमे रूप देख वनिता को कामकन्दला† जानी ॥ २ ॥

उमको हीरे जवाहिर का दान भर कर मिलेगा । एक बेध्या ने कहा मैं ले आती हूँ वह वहाँ गई देखा कि ऋषि जी बड़ी नामाधी में बैठे हैं । जिम दरुह पर कि ज्ञान लगाते थे वहाँ एक उँगनी गुड़ की लगा दी ऋषि जी ने जब ज्ञान लगाई चाट लग गईं पगले एक दफा ज्ञान मारते थे उम रोज़ दो दफा मारी दूसरे रोज़ तीन बार मारी त्री तरह रम बढ़ता गया और ताकत आने लगी । वह बेध्या जो छिप के बेठी थी उसने हनुवा पेश किया तब थोड़ा थोड़ा हनुवा खाने लगे बढ़न जो दुबला था वह पुष्ट होने लगा ताकत आइं बेध्या पावपी सब कारंवाइं जारी होगई, दो तीन लड़के हुए । किमी वताने मृगी जी : बेध्या ने कहा चलो राज दरवार मे वहाँ जंगल मे लम्बे भूमे करने है चिन्तारे उमके साथ हो लिये । दो लड़कों को दोनों कपड़े पर उठाया और मृग का हाथ पकड़ा पीछे वह बेध्या चली । एक दफा मे राजा दरवार मे दरवार मे पहुँचे और वहाँ कृपा होम वर्गए जी कराईं । लम्बे वतों किन्ही ने ताना मारा तब होम आया एक दम लड़को को यही पटम के भागे और जाना कि माया ने लूट लिया ।

पाराशर ऋषि ने मल्लोदरी से नाव से भोग दिया (यह स्त्री उर्ली के बीज से मल्लो की पेट से पैदा हुई थी जो जीव गंगा मे गगाने बल ऋषि जी वा किमी समय मे गिर गया था और एक मल्लो ने खा लिया था) उम मल्लोदरी ने कहा अभी दिन है लोग देखते हैं तब ऋषि ने अपनी मिठु शक्ति ने अंधेरा कर दिया आकाश मे बादल आ गये । फिर स्त्री ने कहा मेरे बदन से मच्छो की बदबू आती है ऋषि ने बदबू को बदल के खुशबू कर दिया । मतीजा इस मगन का यह हुआ कि व्याम जी उम मल्लोदरी से पैदा हुए ।

वामव दला एव परम सुन्दर स्त्री अज्ञेय्या मे हो गई है ।

३. ... जा की नार सुनीगी निस दिन हीं संग राखी ।
 ४. ... नाहिल्या निगम कहत है साखी ॥ ३ ॥
 ५. ... जा के ता की मन क्यों डोले ।
 ६. ... भरे कति हेरा मोहिनी हा हा करिके बोले ॥ ४ ॥
 ७. ... जग-उपराज। कहावै ।
 ८. ... जीते तिन जिव आराम न पावै ॥ ५ ॥

... शिल्पि की गी भक्तिया पर राजा इन्द्र मोहित हुए भोवा कि
 ... जाते हैं इम लिये चाँद को हुकम
 ... वजे के वक्त जहाँ कि तीन वजे
 ... और मुर्गे को कहा कि तू बारह वजे रात को
 ... और गौतम थोड़ा साकर अधीरात
 ... के नदी को चले गये । इन्द्र भीतर गौतम
 ... के आये तब मव हाल मालूम होगया—
 ... और अपनी स्त्री ... इत्या
 ... तुमको
 ... और इन्द्र को आप दिया कि एक काम इन्द्री
 ... हज़ार वैसीही इन्द्री
 ...

शिवजी तिन के पागवती ऐसी सुन्दर स्त्री थी उनकी छोड़ के
 ... दीड़े और जीश में वीज
 ... पैदा हुआ) जब देखा माया का
 ... जैसे हम स्त्री के पीछे
 ... राम औतार हुआ,
 ...

...

वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें और जो दुर्लभ ग्रंथ मंतवानी के उन को मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें ।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारणों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत व्यय होता है तो भी सर्व साधारण के उपकार हेतु दाम आध आना फी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है । जो लोग सवसत्कैवल्य अर्थात् पक्के ग्राहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिन की तादाद् दो रुपये से कम न हो उन को डाक सहसूल और मनोआज्ञा कमिशन भी हर पुस्तक पर न देना पड़ेगा और जो पुस्तकें अब तक छपी गई हैं और जिन के नाम आगे लिखे हैं अब एक नाय लेने से पक्के ग्राहकों के लिये दान से एक रुपये की कमी कर दी जायगी और दान सहसूल भी न लिया जायगा—पेशगी दाम न भेजने वाले सवसत्कैवल्यों के लिये केवल डाक सहसूल छोड़ दिया जायगा ।

अब भीखा साहब, बिहार के दरिया साहब और नरीन्द्रनाथ की बानी हाथ में ली गई है ॥

प्रिंटर, देवदेविपर लाया, लागा.

जुलाई १९२६ ई०

सत्यानास ।